यूनियन सृजन

वर्ष - 4 अंक - 3 • जुलाई - सितंबर, 2019, मुंबई

पूर्वोत्तर भारत विशेषांक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 14.11.2019

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 4 अंक - 3 जुलाई-सितम्बर, 2019

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

ब्रजेश्वर शर्मा
महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

आर. के. कश्यप
डी. सी. चौहान
(महाप्रबंधक)

ब्रिगे. आशुतोष सीरौठिया, सेना मेडल
मुख्य सुरक्षा अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: navalkishored@unionbankofindia.com
sulabhakore@unionbankofindia.com
union.srijan@unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India

पूर्वोत्तर भारत विशेषांक

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- साहित्य सृजन - पूर्वोत्तर का साहित्य 5-7
- काव्य सृजन 8-9
- पूर्वोत्तर - 'सात भगिनी' संकल्पना 10-11
- पूर्वोत्तर राज्य एक सांस्कृतिक विरासत 12-13
- असमिया साहित्य के साहित्यकार - श्री अरुण शर्मा 14-15
- पूर्वोत्तर राज्यों में खानपान 16-18
- लोक-गीत/संगीत 19
- पूर्वोत्तर भारत : ऐतिहासिक एवं प्रेक्षणीय स्थल 20-22
- महान योद्धा-लचित बोरफुकन 23
- विवाह - रीतिरिवाज एवं परंपराएं 24-25
- पूर्वोत्तर भारत के उत्सव एवं त्योहार 26-27
- बिहू लोक नृत्य 28-29
- पूर्वोत्तर की नदियाँ 30-31
- हिन्दी उत्सव - 2019 32-36
- राष्ट्र का विकास क्षेत्रीय भाषाओं के साथ 37-38
- पूर्वोत्तर का प्राकृतिक नज़ारा 39-40
- पूर्वोत्तर भारत : धर्म एवं मानसिकता 41-42
- कलाकृतियाँ एवं शिल्प 43-44
- पूर्वोत्तर की जनजातियाँ 45-47
- पूर्वोत्तर की किंवदंतियां - वास्तविकता 48-49
- राजभाषा पुरस्कार 50-51
- राजभाषा समाचार 52-53
- आयुष्मान भव: सुपरफूड 'दही' 54
- आपकी नज़र में 55

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

आप सभी को शताब्दी वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!

भारत अद्भुतताओं, विचित्रताओं से परिपूर्ण एक वृहद संभावनाओं का देश है. हमारे देश की इन सभी विभिन्नताओं को देखने, समझने, जानने के लिए न जाने कितने देशी-विदेशी सैलानी न केवल यहाँ एक छोर से दूसरे छोर जाने को आतुर होते हैं बल्कि कई तो इन अद्भुतताओं में खोकर यहीं के होकर रह जाते हैं.

हर क्षेत्र में व्याप्त विभिन्न रीति-रिवाज, रहन-सहन, भाषा-बोली, धर्म, त्योहार आदि को जानने के लिए हमें प्रत्येक क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को समझना होगा जो कि प्रत्येक राज्य में एक अलग देश को समेटे हुए एक वृहद भारत है. यही सब कुछ हमारे देश का गौरव भी है जो हमारी 'अनेकता में एकता' के सूत्र को और मजबूत करती है.

'यूनियन सृजन' का 'पूर्वोत्तर भारत' विशेषांक इसी पहल में सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के अन्य राज्यों से भिन्न भारत के सर्वाधिक पूर्वी क्षेत्र जो 'सात बहनों' के नाम से प्रसिद्ध है, को जानने का एक भरसक प्रयास है. पूर्वोत्तर भारत के इन सभी राज्यों की अपनी अनूठी संस्कृति व अपना इतिहास रहा है. इसके साथ ही यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, हस्तशिल्प, मार्शल आर्ट के लिए भी जाना जाता है. भौगोलिक रूप से भी यह क्षेत्र अपनी सीमाओं, विद्रोह, सुरक्षा कारणों के साथ ही कई भागों में प्रतिबंध के रूप में भी चर्चित है. इसके अलावा कई ऐसे कारण हैं जो हमें इस क्षेत्र के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुकता पैदा करते हैं. आपकी और हमारी उत्सुकता का शमन करने तथा इस क्षेत्र को और अधिक जानकर, इस क्षेत्र के साथ गहराई से जुड़कर संपूर्ण भारत के साथ जुड़ने की दिशा में हमारा यह अदना सा प्रयास है.

इस अंक के साथ हम अपने 'पूर्वोत्तर भारत' को न केवल जान पाएंगे बल्कि और अधिक जानने हेतु प्रेरित होंगे. इस अंक के प्रकाशन की पहल हेतु यूनियन सृजन के संपादकीय मण्डल को हार्दिक बधाई! आशा है, यूनियन सृजन का यह अंक भी अन्य अंकों की तरह अविस्मरणीय रहेगा.

शुभकामनाओं के साथ.

आपका

(राजकिरण रै जी.)

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

इंसान को सपने आते हैं या यूं कहिए इंसान सपनों की आस में रहता है या सपने देखता है और उन सपनों की प्राप्ति हेतु फिर इंसान कठोर परिश्रम करता है और प्रगति और उन्नति की ओर अग्रसर होता है, भविष्य की ओर आशावान दृष्टि से देखता है और अपने उन सपनों को पूरा करने हेतु प्रयास करता है. सपनों का और इंसान का साथ सदियों पुराना है. इंसान सपने देखता है, यह तो आम बात है लेकिन जब इस प्रकृति का निर्माणकर्ता, ईश्वर सपना देखता है, तब वह निर्माण करता है पूर्वोतर की स्वर्गीय और सुंदर प्रकृति और प्रदेश का! साथियो, 'यूनियन सृजन' का यह अंक हमने उसी प्राकृतिक सुंदर प्रदेश को समर्पित किया है. इस प्रदेश में हमारी सात भगिनियां - अर्थात असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम है तथा एक भाई सिक्किम के रूप में मौजूद है. यह पूरा पूर्वोत्तर प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता, विशालता और अपने अलग जीवनयापन को लेकर जाना जाता है. यहाँ आबादी कम है तथा प्रदेश दुर्गमता की वजह से यहाँ चहल-पहल भी कम रहती है. शायद यही वजह है कि इस प्रदेश की सुंदरता का कोई सानी नहीं है और यहाँ के लोगों की प्राकृतिकता का भी कोई जोड़ नहीं है. इन सभी राज्यों की अनूठी संस्कृति तथा इनका इतिहास भी अलग होने के बावजूद एक दूसरे से जुड़ा हुआ है. अपनी विविधता के रहते सातों प्रदेश भारत के लिए इंद्रधनुष की तरह हैं.

यूनियन बैंक ने अपने आंतरिक संवाद से इससे पूर्व भी भारत के अनेक अछूते प्रदेशों से आपको रूबरू करवाया है. 'यूनियन सृजन' के इस पूर्वोत्तर विशेषांक के जरिए हम उसी कड़ी को और आगे बढ़ा रहे हैं और अतुल्य भारत के ऐसे अनेक अनगढ़ प्रदेशों से आपकी मुलाक़ात करवा रहे हैं. अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सुंदरता से लबालब यह पूर्वोत्तर विशेषांक आपको पूर्वोत्तर के उस सांस्कृतिक और पारंपरिक समृद्धि से अवगत कराएगा, जिसके बारे में शायद आपने सुना होगा और नहीं भी. पूर्वोत्तर की जनजातियाँ, उनका खान-पान, पहनावा, कलाएं, संगीत-नृत्य, रीतिरिवाज और बहुत कुछ! यह सब अविश्वसनीय भी है और सच भी! वर्षों से देश के मुख्य प्रवाह से अलग-थलग, अनेक समस्याओं, चुनौतियों के साथ जूझते हुए यह प्रदेश आज अपने अनूठेपन, प्राकृतिकता और सरलता की वजह से मुख्य प्रवाह में तेजी से शामिल हो रहा है.

हमें विश्वास है कि अनेक रंगों से रंगीन और पूर्वोत्तर के कुछ अनछुए पहलुओं से यह पूर्वोत्तर विशेषांक आपका साक्षात्कार जरूर करवाएगा.

आपको यह विशेषांक कैसा लगा, कृपया अपने मंतव्य से हमें अवगत कराइए, जिसका हमें इंतजार रहेगा.

आपकी

डॉ. सुलभा कोरे

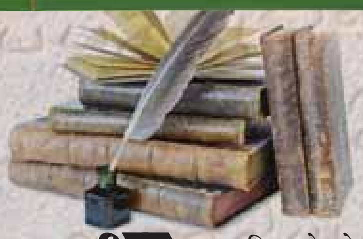

पूर्वोत्तर का साहित्य

भाषा व साहित्य से लोगों के विकास की पुष्टि होती है. भाषा जाति की पहचान है. किसी जाति की सभ्यता, संस्कृति, आचार-व्यवहार, रहने-बसने की परंपरा की जानकारी उसकी भाषा से हो जाती है. पूर्वोत्तर के नेपाली कवि बालकृष्ण सम का कथन है- "भाषा ही सभ्यता है, जाति का उदय और उन्नति है. जाति का अस्तित्व और वैभव वर्षों तक जीवित (भाषा से) रहता है." जाति का आधार, उत्थान और विकास साहित्य से ही संभव है. विकास और व्यवहार की दृष्टि से भी भाषा-साहित्य का अध्ययन अनिवार्य होता है.

भारत का पूर्वोत्तर 7 राज्यों के सम्मिलन से बना है. यहाँ अनेक जनजातियां एवं उनकी अनेकानेक भाषाएं हैं तथापि सभी भाषाएं और बोलियां इतनी समृद्ध नहीं है कि उनमें साहित्य रचना हो. जिन भाषा बोलियों में रचनाकारों ने शब्दबद्ध रचनाएं की हैं उनमें असमिया, नेपाली, बोड़ो, गारो, मणिपुरी, हिंदी आदि प्रमुख है. पूर्वोत्तर भारत में कई अंग्रेजी साहित्यकार भी है जो अपने लेखन द्वारा अपने क्षेत्र और संस्कृति का परिचय देश के अन्य क्षेत्रों को देने का काम कर रहे हैं. मित्रा फुकन, भाबनदा डेका, ध्रुब्रा हजारिका, तेम्सुला औ, ममंग दाई, अनर्ब जन डेका, जाह्नवी बरुआ, अंजुम हसन, सिद्धार्थ देब, रोबिन एस. नांगों, क्यन्फ़ाम सिंग, अनन्य एस. गुहा, उद्दिपा गोस्वामी, नित्तो दास आदि पूर्वोत्तर भारत के साहित्यकार हैं.

असमिया साहित्य

पूर्वोत्तर की स्थानीय भाषाओं में से असमिया भाषा साहित्यिक दृष्टि से सबसे समृद्ध भाषा है. परिनिष्ठित एवं लोक साहित्य दोनों ही असमिया भाषा में पर्याप्त है. जनजातीय लोगों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं पर वह दैनंदिन जीवन में असमिया भाषा को व्यापक रूप से प्रयोग में लाते हैं. पूर्वोत्तर राज्य में असमिया भाषा एक संपर्क भाषा की भूमिका निभाती आ रही है.

असमिया भाषा के पास समृद्ध साहित्यिक परंपरा है. 17 वीं शताब्दी के मध्यभाग से 19 वीं शताब्दी के मध्य भाग तक असमिया में इतिहास, साहित्य और वैष्णव गुरुओं की चरित पोथियों का प्रणयन हुआ. श्रीमंत शंकर देव, श्री माधव देव आदि महापुरुषों द्वारा विरचित काव्यों, नाटकों (अंकिया नाट, झुमुरा नाट) बरगीतों आदि से असमिया का भक्ति साहित्य संपन्न बना है. श्रीमंत शंकरदेव ने असमिया लोकमानस में निहित कृष्ण रागात्मकता के अनुकूल अपने एक शरण भगवती वैष्णव धर्म का स्वरूप प्रस्तुत किया और अपनी अमर रचनाओं के माध्यम से जैन समाज में इसका प्रचार किया. उनके शिष्य माधवदेव ने भी कृष्ण का बालरूप घर-घर में लोकप्रिय बना दिया.

श्रीमंत शंकरदेव ने (ई. 1449-1568) पूरे भारत का दो बार भ्रमण किया और संस्कृत वाङ्मय को अपने धर्म और साहित्य का आधार बनाया और भाषा के माध्यम से भावात्मक एकता लाने हेतु असमिया, ब्रज और मैथिली के सम्मिश्रण से 'ब्रजवाली' नामक एक कृत्रिम भाषा का रूप खड़ा किया. इस प्रकार उन्होंने असमिया लोकमानस में हिंदी भाषा के प्रति रागात्मकता का श्रीगणेश किया.

1974 ई. में श्रीकांत सूर्यविप्र ने महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'लंका कांड' का असमिया भाषा में पद्यानुवाद किया. हिंदीतर भाषा में रामचरितमानस के अनुवाद का यह पहला प्रयास था. उसी समय कुतुबन द्वारा रचित 'मृगावती' तथा 'मंझन' द्वारा रचित 'मधुमालती' काव्य का भी असमिया भाषा में अनुवाद हुआ. प्रांजल और परिनिष्ठित असमिया भाषा में कलगुरु विष्णुप्रसाद राभा ने सुमधुर गीतों की रचना की. उन्होंने कलकत्ता में विभिन्न कलाकारों द्वारा 'नरकासुर', 'बेउला', 'जन्माष्टमी' 'रतनी', 'बरदैचिला', 'चेनाई-चेनाही', 'दुयोधनर उरु भंग' आदि का ध्वन्यांकन कराया. ये गीत और कथाएँ रामा जी ने खुद रचे एवं गाये थे.

आधुनिक काल में हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा, जैनेंद्र, धर्मवीर भारती, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर आदि साहित्यकारों की रचनाओं का असमिया भाषा में अनुवाद हुआ है. असम में असमिया भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा में भी रचनाएं की जा रही है. वर्तमान शताब्दी के प्रमुख साहित्यकारों में कमल नारायण, देव, चक्रेश्वर भट्टाचार्य, रजनीकांत चक्रवर्ती महेश्वर महंत, लोकनाथ झराली, बापचंद महंत, सोमेश्वरदास, छगनलाल जैन, तरुण आजाद डेका, मोती मदरासी, नाथ खादोद, नवारूण वर्मा, चित्रमहंत, मोहन कोइराला आदि हैं.

नेपाली साहित्य

भारत के विभिन्न प्रांतों, उत्तरी भारत, पूर्वांचल के प्रदेशों, सिक्किम, दार्जिलिंग, उत्तराखंड आदि भू-भागों में बड़ी संख्या में नेपाली भाषी रहते हैं. नेपाली मात्र नेपाल देश में ही बसने वाले नागरिक नहीं हैं अपितु भारत में नेपाली भाषा का प्रयोग करने वाले भारतीय नागरिकों को भी नेपाली कहा जाता है. नेपाल में यह 'जाति' का परिचायक है, भारत में 'भाषा' का. भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में नेपाली भाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है.

1820 ई. में सर्वप्रथम फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रोफेसर अलेक्स आयठन ने सबसे पहले नेपाली के 'ए ग्रामर ऑफ नेपाली लैंग्वेज' को देवनागरी

लिपि में प्रकाशित कराया. सबसे पहले बनारस में प्रकाशित 'गोरखा भारत जीवन' (1886) नामक पत्रिका में शुद्ध नेपाली भाषा का प्रयोग हुआ. गोरखा प्रिंटिंग प्रेस खोलकर कवि मोतीराम भट्ट ने बनारस में विशुद्ध नेपाली भाषा में काव्यों का प्रकाशन किया.

असम, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल, हिमालय, उत्तराखंड तथा भारत के उत्तरी इलाके में नेपाली भाषा के लोक साहित्य एवं धार्मिक साहित्य का विस्तार हुआ. नेपाली भाषा साहित्य का प्रारंभ गद्य-पद्य विधाओं में पहले ही हो चुका था लेकिन भानुभक्त द्वारा 'रामायण' का नेपाली संस्करण लिखने के बाद नेपाली साहित्य का प्रचार-प्रसार बढ़ा. मोतीराम भट्ट ने भानुभक्त के लेखों, कविताओं और रामायण के प्रचार-प्रसार अपने प्रेस के माध्यम से किया. उन्होंने नेपाली भाषा विकास में बड़ा योगदान दिया. दार्जिलिंग और बनारस इन दो स्थानों से नेपाली भाषा साहित्य का विकास अधिक हुआ.

नेपाली भाषा में पत्र-पत्रिका के प्रकाशन के रूप में पादरी गंगा प्रसाद प्रधान के प्रयास से 1901 ई. में दार्जिलिंग से 'गोर्खे खबर कागत' पत्रिका प्रकाशित हुई. इसके बाद 'पहिलो पोस्तक' एवं 'दोसत्रों पोस्तक' 1908 ई. में प्रकाशित हुई. 1924 ई. में 'नेपाली साहित्य सम्मेलन' पत्रिका निकली. 1945 ई. में 'गोरखा' 1947 ई. में 'साहित्य स्रोत' पत्रिका आई. हृदयचंद्र सिंह प्रधान, रामकृष्ण शर्मा, रूप नारायण सिंह, इंद्र बहादुर राई, प्रकाश कोविंद, मन बहादुर मुखिया आदि नेपाली लेखकों, उपन्यासकारों, कवियों ने नेपाली भाषा साहित्य को समृद्ध किया है. नेपाली पत्र-पत्रिकाओं में 'सुंदरी', 'चंद्र', 'गोर्खाली', 'जन्मभूमि', 'युगवाणी', 'गोरखा संसार', 'तरुण गोरखा', का नेपाली साहित्य में विशेष योगदान था . इसके अलावा 'सृष्टी अर्चना', 'निर्माण', 'कंचनजंगा' भी उल्लेखनीय पत्रिकाएं हैं. मणिसिंह थापा गोपीनारायण, प्रधान, डी आर सुब्बा, पदमबहादुर, जगत बहादुर प्रधान, गजेंद्र छेत्री आदि ने नेपाली साहित्य को समृद्ध किया है. नेपाली भाषा अध्ययन-अध्यापन, सिक्किम तथा दार्जिलिंग में आधुनिक शिक्षा के विकास के साथ ही शुरू हुआ.

बोडो साहित्य

19वीं शताब्दी के आठवें दशक में सिडनी एण्डल ने 'आउटलाइन ग्रामर ऑफ बोडो लैंग्वेज' पुस्तक में बोडो भाषा की व्याकरणिक रूपरेखा एवं लोक साहित्य को प्रकाशित किया यद्यपि यह पुस्तक रोमन लिपि में प्रकाशित है लेकिन 1915 ई. में बोडो भाषा में 'बोरोनी पिसा ओ आचेन' पुस्तक मिलती है. सिडनी एण्डल ने 'कछारी' नाम से दूसरी पुस्तक लिखी. इसमें तत्कालीन बोडो समाज तथा संस्कृति का वर्णन मिलता है. बोडो समाज में सामाजिक, धार्मिक परिवर्तन ब्रह्मसमाज से आया. 1950 ई. तक ब्रह्म धर्म के अनुयायी बनने के बाद कई लोग बोडो भाषा की साहित्य साधना की ओर प्रेरित हुये. इनमें प्रमुख हैं- प्रसन्न कुमार खख्याली, नरपति बसुमतारी, गंगाचरण पाटगिरी, कमलकांत तहसीलदार, हरिश्चंद्र कछारी, सेना राम चौधरी आदि.

बोडो साहित्य प्रसार में 1920 में प्रकाशित 'बिबार' पत्रिका काफी महत्वपूर्ण है. इसके बाद कई पत्रिकाएं बोडो भाषा में आईं तथा 'जेंथोरखा' (1925), 'बिथोराई' (1932), 'मुस्री आरो संसित्र' (1937), 'ओलङबार' (1938) 'हार्थोखि हाला' (1942) तथा 'नायक' (1941), 'बोडो लीरथुम बिलाई' (1950) आदि महत्वपूर्ण हैं.

बोडो भाषा में लीला ब्रह्म द्वारा लिखित 'गशनी दाहा', (हृदय की पीड़ा) 1953 में प्रथम मौलिक कहानी प्रकाशित हुई. 1962 में चितरंजन मुसाहारी ने पहला बोडो उपन्यास 'जुजाइनी' (भूसे की आग) लिखा.

यद्यपि बोडो भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य रचा गया तथापि इसमें पर्याप्त मात्रा के कहानी, काव्य, नाटक, यात्रा वृतांत, जीवनी साहित्य एवं आलोचना साहित्य रचे गए हैं.

गारो भाषा साहित्य

मेघालय में गारो भाषा प्रमुख है. गारो भाषा-भाषी लोग प्रायः असमिया, बांग्ला और हिंदी भाषा का व्यवहार अन्य भाषा-भाषी लोगों के साथ करते हैं. बोडो भाषा समूह से निकली गारो भाषा 'मांदे कुसिक' अर्थात मनुष्यों की भाषा अथवा 'आ:चिक कुसिक' अर्थात पर्वतीय लोगों की भाषा कहलाती है. गारो जनजाति, गारो पहाड़ियों के अलावा पूर्वोत्तर भारत के सभी भागों और बांग्लादेश में बसी हुई हैं.

गारो भाषा और संस्कृति की विरासत समृद्ध है और यह वाचिक परंपरा के रूप में ही हस्तांतरित होती आई है. इनके लोकगीत और लोक कथाओं का भंडार भी विशाल है. इसके अतिरिक्त तोलकचिया(पहेलिया), कत्ता में आया(लोकोक्तियाँ), कत्ता रोङचू (पारंपरिक कथाएँ) तथा माअंबि (पारस्परिक इतिहास) इत्यादि मौखिक परंपरा द्वारा हस्तांतरित साहित्य है. 'कत्ता आगन' गारो जनजाति की महाकाव्यात्मक लोकगाथा है. 1925 ई. में प्रकाशित 'ईजी मैथड ऑफ़ लर्निंग बेंगाली हिंदी गानों' के साथ गारो भाषा के साहित्यिक विकास का पहला चरण प्रारंभ हुआ. 1930 ई. में अजोवांग डी. मराक ने 'गारो हिस्ट्री' प्रकाशित की, जिसमें गारो लोक कथाएं, संस्मरण आदि हैं.

1924 ई. के लगभग आम गारो जनता ने गारो भाषा साहित्य में सक्रिय रूप से रुचि लेना और योगदान करना प्रारंभ किया. इस समय खेरैंड, एम. सी.मेसन और ई.जी. फिलिप्स ने 'द फ्रेंड ऑफ द गा रोज' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया.

गारो भाषा साहित्य विकास का अगला चरण 1940 ई. से प्रारंभ होता है. इस समय से गारो भाषा में कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, जीवनी का प्रकाशन होने लगा. 1940 ई. से ही गारो भाषा में पत्रिका 'आ:चिक कुराङ' (गारो जन की आवाज) का प्रकाशन शुरू हुआ.

साहित्य की अन्य विधाओं में भले ही रचनाएं गारो भाषा में हुई हों, लेकिन काव्य क्षेत्र में गारो भाषा का सर्वाधिक उन्नत रूप दिखता है. गारो भाषा के काव्य के आरंभिक कवियों में एम.के.डबल्यू मोमिन का नाम सर्वाधिक

महत्वपूर्ण है. इसी समय के अन्य कवियों में मोघू नाथ मोमिन, तूनीराम माराक, कोसन जी मोमिन तथा फी.बी. मोमिन प्रमुख हैं. इस समय का गारो काव्य नीति प्रधान, उपदेशक तथा जन शिक्षाप्रद है.

1940 ई. के आस-पास गारो भाषा साहित्य के प्रमुख कवि साहित्यकारों में हवार्ड डी. मोमिन, इवलिन आर. मराक तथा जॉन मोती डी. शीरा हैं. इन लोगों के काव्य ने गारो भाषा काव्य के विषय क्षेत्र में विस्तार के साथ ही कलात्मक उत्कृष्टता की ऊंचाइयों को भी स्पर्श किया. आधुनिक युग में हावर्ड डेनिसन माराक जैसे प्रतिभाशाली कवि ने गारो जनमानस के यथार्थ को मानवीय संवेदना के साथ व्यक्त किया. गारो भाषा तथा असमिया भाषाओं की तरह हिंदी भाषा का भी विशेष योगदान रहा है.

मणिपुरी साहित्य

स्थानीय स्तर पर मैतिलोन (मेइतेई + लोन भाषा), मुख्यतः पूर्वोत्तर भारत के लिए मणिपुर राज्य में बोली जाने वाली भाषा है. यह असम, मिज़ोरम, त्रिपुरा, बांग्लादेश और म्यांमार में भी बोली जाती है. मणिपुरी भाषा का साहित्य भी समृद्ध है. 1973 से आज तक 39 मणिपुरी साहित्यकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है. मणिपुरी साहित्य में वैष्णवभक्ति तथा मणिपुर की कला / संस्कृति झलकती है. कहानी, उपन्यास, काव्य, प्रवास वर्णन, नाटक आदि सभी विधाओं में मणिपुरी साहित्य ने अपनी पहचान बनाई है. मखोनमनी मोंड्साबा, जोड़ छी सनसम, क्षेत्री वीर, एवं किशोर सिंह आदि मणिपुरी के प्रसिद्ध लेखक हैं.

मणिपुरी साहित्य की यात्रा 1925 ई. में फाल्गुनी सिंह द्वारा मीताई तथा बिष्णुप्रिया मणिपुरी भाषा की द्विभाषिक सामयिकी 'जागरन' के प्रकाशन के रूप में आरम्भ हुआ. इसी समय और भी कई द्विभाषिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। इनमें 'मेखली'(1933), 'मणिपुरी' (1938), 'क्षत्रियज्योति' (1944) इत्यादि हैं.

मणिपुरी लोक साहित्य अत्यन्त समृद्ध है तथा लोक साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है. मणिपुरी लोक साहित्य में प्राप्त पहेलियों का क्षेत्र व्यापक है.

खासी साहित्य

खासी भाषा भारत के मेघालय राज्य में खासी और जैंतिया पहाड़ियों के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले लगभग 9 लाख लोगों द्वारा बोली जाती है. खासी भाषा में भारतीय-आर्य भाषाओं, विशेषकर बांग्ला और हिंदी के कई शब्द हैं. खासी साहित्य भी गारो साहित्य जैसे ही प्राचीन काल से मौखिक रूप में ही चलता आ रहा था. 1813 ई. तक समस्त खासी साहित्य वाचिक परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चला आ रहा था. प्राचीन खासी साहित्य को 'फवार' कहा जाता है जिसके दो रूप हैं- 'पुरिस्क्म' और 'परोम'. 'फवार' के भीतर लोकगीत, लोककथाएँ, धार्मिक कथा आदि शामिल है.

खासी साहित्य का लिखित रूप भी अंग्रेजों के आने के बाद ही शुरू हुआ. इसके विकास की गति लगभग गारो जैसी ही है. 1841 ई. में थॉमस जॉन्स ने 'बान हिकाई का कितेन कासिया' नामक पुस्तिका खासी भाषा में लिखी और प्रकाशित की. यह खासी भाषा में लिखी पहली पुस्तक थी. 1881 ई. से 1990 ई. के बीच तीन महत्वपूर्ण खासी रचनाकारों का आविर्भाव हुआ- जीवन रॉय, राबन सिंह तथा होरमुराई डेङडोह. जीवन रॉय को खासी के प्रथम लघु कहानीकार माना जाता है. उनकी कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं- 'का नियाम जोङ की ख़ासी' (1897 ई.), 'हितुपदेश' (1898 ई.), 'का रामायण', 'का किताब चौतन्य' (1899 ई.) तथा 'का किताब बा बाताई पिनशिन्न शाफाङ उवेई ऊ ब्लेई' (1900 ई.). इन तीनों के अलावा कुछ प्रमुख लेखकों के नाम इस प्रकार हैं- राधोन सिंह, शिवचरण रॉय, हरि चरण रॉय, सोसो थाम, पादरे जी कोस्टा, एफ़.एम.प्यू, एस.जे. डंकन आदि.

हिन्दी साहित्य

उत्तर-पूर्व की भाषाओं का अन्य भारतीय भाषाओं से गहरा संबंध है. आजकल हिन्दी बाजार और नौकरियों की भाषा हो गयी है इसीलिए पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी का विकास और हिन्दी साहित्य का लेखन तीव्र गति से बढ़ रहा है. मणिपुर, मिज़ोरम, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश आदि राज्यों में हिन्दी बोलने और समझने वाले लोगों की संख्या काफी है तथा यहाँ की युवा पीढ़ी भी हिन्दी लेखन में रुचि ले रही है. इन राज्यों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में केंद्रीय हिन्दी संस्थान का योगदान भी उल्लेखनीय है. संस्थान के तीन केंद्र गुवाहाटी, शिलाँग तथा दीमापुर में स्थित हैं. ये तीनों केंद्र अपने-अपने कार्य क्षेत्रों के राज्यों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के विशेष कार्यक्रम चलाते हैं.

पूर्वोत्तर के राज्यों में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं - काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना आदि में साहित्य रचना हुई हैं. हिन्दी साहित्य लेखन में मणिपुर के हजारी मयूम गोकुलानन्द शर्मा, आचारी राधगोविंद थोङम, प्रो. इबोहल सिंह, प्रो. देवराज, प्रो. सुरेन्द्र सिंह, त्रिपुरा के रमेन्द्र पाल, डॉ. मिलन रानी जमातिया, डॉ. विनोद कुमार मिश्र, मेघालय के प्रो. माघवेंद्र पांडेय, भरत प्रसाद त्रिपाठी, अरुणाचल प्रदेश के श्री जुमसी सिराम, डॉ. जोरम यालम नाबाम, जमुना बीनी, डॉ. माता प्रसाद गुप्त, बलीराम प्रसाद आदि चर्चित रचनाकार हैं. पूर्वोत्तर के राज्यों में हिन्दी साहित्य का वर्चस्व इन रचनाकारों के अथक प्रयासों के कारण संभव हो पाया है.

विवेक साव

क्षे. का. कोल्हापुर

होगा पूरा यान का अभियान

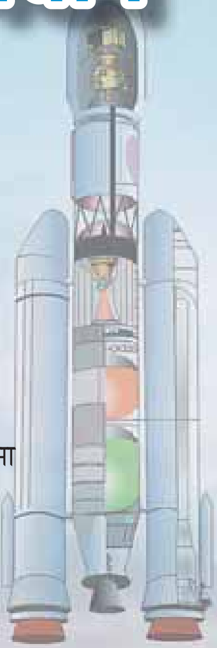

यान से संपर्क टूटा तो क्या
संपर्क नहीं टूटा सपनों से

निस्तब्ध इसरो का यह कक्ष
कल गूंज उठेगा जयघोषों से

कभी साइकिल, बैलगाड़ी
पर प्रथम राकेट था सवार

और आज गुरुत्वाकर्षण की सीमा
लांघ चुका है कई बार

कभी क्रायोजेनिक के लिए
हमें किया गया था परेशान

यह हौसला है,
भारत के वैज्ञानिकों का
अपने बलबूते बनाया,
अंतरमहाद्वीपीय मिसाइल और चंद्रयान

वो दिन दूर नहीं, जब भारत
चंद्रमा की पीठ को थपथपाएगा

आज के अधूरे वर्तमान को जोड़
एक स्वर्णिम भविष्य बनाएगा ।।

श्यामल ब्रम्हचारी
क्षे.का., अहमदाबाद

निश्छल होता प्यार तिहारा,
शर्त नहीं चाहे जो प्यारा,
गलत सही सब ताक किनारा,
सुकून मिले आँचल में सारा।

करता मन चाहे मनमानी,
थक जाता तो एक सहारा,
कह लेता जिसको जो जैसा
गर तू रूठे, रूठे जग सारा।

बुरा भला जब कर लेता सब,
पछतावे में बस आप किनारा,
डर भय सबको मात तुम्हीं से,
बढ़ जाऊँ ले नाम तुम्हारा।

बनी नहीं कोई भी प्रतिमा,
जिसकी तुलना शेष तुम्हारा,
भाग्य मनाऊँ ऐसे ऋण का,
जिसको भरना नहीं गवांरा?

विक्रम सिंह
सादात मुख्य शाखा,
गाजीपुर

नींव सौ वर्षों की

सिंचित है वो नींव का पत्थर
जिसे वरिष्ठों ने संभाला है
कण-कण कंकड़ से बनी इमारत
आज आसमां तक उछाला है।
जब आज़ादी में साँस ली
चारों दिशाओं में किया उजाला है
ग़ांधी जिसकी नींव के पत्थर
निरंतर उसे संभाला है।
नियत अच्छी, अच्छी आशाओं
अच्छे देश की सेवा में
जीवन समर्पित कर डाला है।।

इतिहास है सौ वर्षों का
यह कहानी है हर इक कण की
अर्पित है आशीष उन्हें
जिन्होंने सींचा है अपने अनुभवों से
और जीवन समर्पित कर डाला है।
इति नहीं है सौ वर्षों में
कई सदियां हैं अभी गुजारनी,
हर कण को मजबूत करके
इस इमारत को है सँवारनी ।।

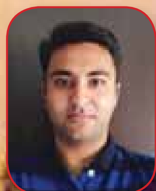

भरत परिहार
सांचोर शाखा, उदयपुर

एक किनारे पर खड़ा रहा वो

एक किनारे पर खड़ा रहा वो,
मैं पानी पर चलता रहा।
खुद तक पहुंचने के लिए,
मैं इशारों पर चलता रहा।

ज़मीन उभरती रही कहीं रास्तों में,
कहीं लहरों पर इश्तेहार आते रहे।
तूफानों की फितरत भी अजीब है,
डूबाने के लिए नाव लाते रहे।

आसमान बिछ गया पानी में,
सब नीला हो गया।
बादलों का पानी भी अब,
गीला हो गया।

एक कंकड़ की आहट ने भी कुछ,
हिला तो दिया समंदर में।
दूर तक बिना लकीरों की हवा थी,
मगर हदों को बस बढ़ा दिया समंदर ने।

नज़रों के दायरे में हमने,
गहराइयों से हिसाब मांग लिया।
लौट कर आये सवाल साहिलों से,
और हमने जवाब मांग लिया।

मैं पूछता भी तो किससे पूछता,
इस तूफान की वजह।
मैं तैरा, आखरी पल तक,
पर समंदर हिलता रहा।

एक किनारे पर खड़ा रहा वो,
मैं पानी पर चलता रहा।

सुरभि अग्रवाल
बगडोना शाखा,
भोपाल

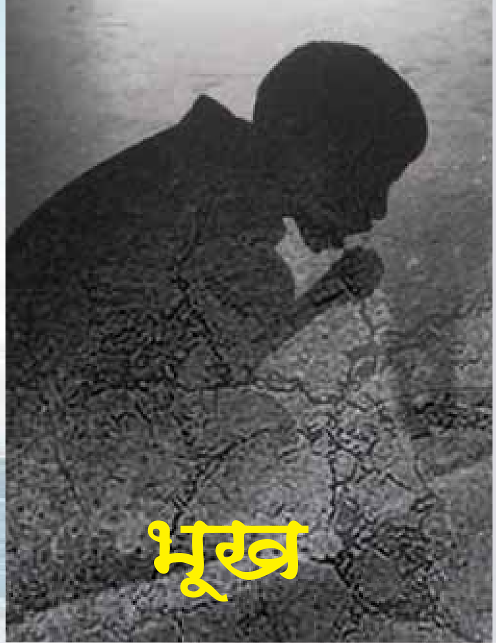

भूख

वह भृकुटि-भाल चढ़ाए
कौर-कौर को दौड़ा जाए
जाति-धर्म से क्या उसका
वह दो रोटी के दाता समक्ष
नतमस्तक हो शीश झुकाए,

रोम-रोम हो तृप्त जब
नीले अंबर के आग़ोश में तब
चिर-निंद्रा का करता अभिवादन
सीमा-सरहदों से क्यों हो उसे स्पंदन

नित दिन पाना दो रोटी
यही है उसकी वीरगाथा
रोज देखती मैं सड़कों पर
भूख से बिलखता भारत भाग्य विधाता... ?।

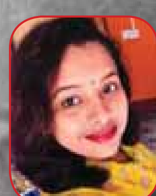

अपूर्वा सिंह
क्षे.का., सिलीगुड़ी

मैं फिर से संभल ना पाऊंगा

यूं बच कर चलना है राहों में
हर ठोकर से बचते जाना है
गर चोट लगेगी अनजाने में
मैं फिर से संभल ना पाऊंगा !!

इस नादान दिल को समझा दो
इस दिल को पत्थर बनने दो
यह मोम का दिल गर पिघल गया
मैं फिर से संभल ना पाऊंगा !!

तू सोच को अपने वश में रख
ना अनजानों की खबर तू रख
अनजाने गर हावी हो मुझ पर
मैं फिर से संभल ना पाऊंगा !!

क्या देखा है सपना मैंने
क्या मुझको जीवन में बनना है
गर नजर हटेगी मंजिल से तो
मैं फिर से संभल ना पाऊंगा !!

जब-जब रब से मांगा मैंने
रब ने भी मुझ को अता किया
गर छूटेगा दामन जो रब का
मैं फिर से संभल ना पाऊंगा!!

आमिर शहाव
क्षे.का., राँची

पूर्वोत्तर - 'सात भगिनी' संकल्पना

सामान्यतः पूर्वोत्तर की बात आते ही हमारे जेहन में सभी सात राज्यों का नाम सामने आने लगता है. इन राज्यों को सात बहनें या सप्त भगिनी (सेवन सिस्टर्स) भी कहा जाता है. हरित-भरित प्रदेश, प्राकृतिक रुप से समृद्ध ये राज्य भारत की विविधता में चार चांद लगाते हैं. इन क्षेत्रों की भाषायी एवं खान-पान में पाई जानेवाली विविधता ही हमारे देश की विविधता को प्रखर बनाती है. ये राज्य न केवल प्राकृतिक रुप से समृद्ध हैं बल्कि ये भारत के भौगोलिक परिदृश्य को सुसज्जित करते हैं. ये सभी राज्य, भारत माता के गुलदस्ते के अनुपम फूल हैं, जो अपनी पहचान तथा काम से भारत का नाम रोशन करने में दिन-रात सक्रिय हैं. यह पूरा क्षेत्र अपने अनूठी संस्कृति, हस्तशिल्प, मार्शल आर्ट और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है.

संकल्पनाः

'सात बहनों की भूमि' की इस उपाधि की शुरुआत हुई जब वर्ष 1972 में नए राज्यों के उद्घाटन के समय श्री ज्योति प्रसाद सैकिया द्वारा एक रेडियो टॉक शो में जो कि त्रिपुरा में आयोजित किया गया था, उन्होंने इन राज्यों की परस्पर निर्भरता को जाना और इन सात राज्यों पर एक किताब संकलित करायी और पूर्वोत्तर को सात बहनों की भूमि का नाम दिया, ये सात राज्य निम्नलिखित हैं:-

1. असम
2. मिजोरम
3. नागालैंड
4. अरुणाचल प्रदेश
5. मणिपुर
6. मेघालय
7. त्रिपुरा

जब वृहद् पूर्वोत्तर क्षेत्र के सात राज्यों की बात की जाती है तो इसमें प्रसिद्ध राज्य सिक्किम तथा उत्तरी बंगाल का कुछ भाग भी शामिल कर लिया जाता है तथा इसके भौगोलिक परिदृश्य को प्रस्तुत किया जाता है. यदि हम बात करें स्वतंत्रता पूर्व की तो यह पूरा क्षेत्र बंगाल एवं असम के रुप में विभाजित था. विभाजन के पश्चात तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान जो अब बांग्लादेश बना है तथा कुछ उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्र में असम एवं कुछ अन्य क्षेत्र से अलग होकर धीरे-धीरे इन 7 राज्यों का गठन हुआ. इन राज्यों के उद्भव तथा विकास में प्रमुख रुप से स्थानीय समुदाय जैसे नागाओं की मांग पर नागालैंड बना वैसे सभी राज्य बने. यह पूरा क्षेत्र सामरिक रुप से काफी महत्वपूर्ण है. इन सात राज्यों के उत्तर में चीन एवं भूटान, पूरब की ओर म्यांमार स्थित है जबकि दक्षिण की ओर बांग्लादेश स्थित है.

उत्तर पूर्व के ये सात राज्य कुल मिलाकर 2,55,511 वर्ग कि.मी. क्षेत्र जो कि पूरे भारत के कुल क्षेत्रफल का 7% है में फैले हुए हैं. यदि हम देखें तो इन सात राज्यों के बीच में घोर भिन्नता भी पाई जाती है. यह विविधता धार्मिक स्तर एवं भाषायी स्तर पर है परंतु राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर काफी समानता भी देखी जा सकती है.

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात पहले केवल 3 राज्य ही इस दायरे में आते थे. मणिपुर और त्रिपुरा रियासत थी जबकि एक बहुत बड़ा हिस्सा असम प्रांत प्रत्यक्ष रुप से ब्रिटिश शासन के अधीन था. इसकी राजधानी शिलांग थी. चार नए राज्यों को असम के मूल क्षेत्र से बाहर, जातीय और भाषाई आधार पर पुनर्गठन कर भारत सरकार की नीति के साथ और आजादी के बाद दशकों में बनाया गया. वर्ष 1963 में नागालैंड राज्य बना. वर्ष 1972 में मेघालय भी एक अलग राज्य बना. वर्ष 1972 में मिजोरम एक केंद्र शासित प्रदेश बन गया और वर्ष 1987 में अरुणाचल प्रदेश को भी राज्य का दर्जा मिला.

भारतीय स्वतंत्रता के बाद ब्रिटिश भारत के उत्तरपूर्वीय क्षेत्र को असम के एकल राज्य के अंतर्गत वर्गीकृत कर दिया गया था. बाद में स्वतंत्र त्रिपुरा कमिटी जैसे कई स्वतंत्रता आंदोलन समस्त उत्तरपूर्वीय राज्यों

को असम के अंतर्गत समूहीकृत करने के विरोध में चलाए गए थे. वर्ष 1960-70 के दशक में नागालैंड, मेघालय और मिजोरम राज्य का गठन हुआ. इन सभी राज्यों के साथ इनकी अनूठी संस्कृति और इतिहास जुड़ा हुआ है. इनमें से अधिकांश क्षेत्र ब्रिटिश राज के दौरान भारत की मुख्य धारा में शामिल किए गए थे. जब ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने पारंपरिक अलग-अलग सीमाओं वाले राज्यों को अपने क्षेत्र और बाह्य शक्तियों के बीच एक मध्यवर्ती क्षेत्र बनाने के लिए जोड़ दिया तब वर्ष 1947 के बाद भारतीय राज्यों और राजनीतिक प्रणालियों का विस्तार एक चुनौती रहा था.

संस्कृति:

सात बहनों के इन राज्यों की संस्कृति के बारे में चर्चा करें तो हम पाते हैं कि सभी राज्यों की अपनी अलग-अलग संस्कृति है. संगीत में भी विविधता है. पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के अन्य राज्यों से विविधतापूर्ण है. अभी भी सभी राज्यों में दृढ़ जातीय संस्कृति व्याप्त है जो संस्कृतिकरण के प्रभाव से बची रह गई थी.

भाषायी संरचना:

उत्तर पूर्व भारत की स्वदेशी जन-जातियों में बोडो, मिशि लोग, गारो, नागा भूटिया, मिसिंग, दिमासा, कार्बी, खासी, कुकी, मणिपुरी मिजो, रभा, राजबोंगशी, तिवा, त्रिपुरी, बंगाली, बिष्णुप्रिया मणिपुरी और अन्य कई जन-जातियां भारी संख्या में निवास करती हैं. असम जहाँ की मुख्य भाषा असमिया है जबकि त्रिपुरा जहां की प्रमुख भाषा बांग्ला है, इसके अलावा इस क्षेत्र में कई ऐसे आदिवासी समूह हैं जो कि चीन-तिब्बती और ऑस्ट्रो-एशियाई भाषाओं में बात करते हैं. मैथेय, इस क्षेत्र में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है जोकि तीसरी एक चीन-तिब्बती भाषाओं में से एक है. असम, मणिपुर और त्रिपुरा के बड़े और अधिक आबादी वाले राज्यों में असम में ही कई विविधताएं देखी जा सकती हैं.

प्राकृतिक संसाधन:

यदि देखा जाए तो हम पाते हैं कि पूर्वोत्तर के राज्यों में प्राकृतिक संसाधन की प्रचुरता पाई जाती है. इन राज्यों में चाय आधारित कई उद्योग पाए जाते हैं जो कि पूरे देश-विदेश में निर्यात की जाती है. इन क्षेत्रों में पूरे वर्ष वर्षा होती रहती है जिसकी बदौलत यहां के वन सदाबहार पाए जाते हैं. इन जंगलों में वन्य जीवों का वास रहता है. इनमें से अधिकतर ऐसे भी वन्य जीव होते हैं जो कि अब लुप्तप्राय होते जा रहे हैं. एक सींग वाला गैंडा, हाथियों के लिए यह प्रदेश एक सुरक्षित घर है. हालांकि इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कबीलाई जनजातियों में आपसी तनाव भी रहता है जो कि वर्चस्व की लड़ाई के रुप में कई बार सामने आया है.

सात भगिनी राज्यों के इतने महत्व के बावजूद भी इन क्षेत्रों का विकास अन्य राज्यों की तरह समुचित रुप से नहीं हो पाया है. इन राज्यों की प्राकृतिक संपदा तथा उतार-चढ़ाव के भूप्रदेश की वजह से इन क्षेत्रों में भी औद्योगिकीकरण उस निश्चित स्तर तक नहीं हो पाया है. इसी वजह से इन क्षेत्रों में संरचनात्मक सुविधाओं का अभाव तथा औद्योगिकीकरण की गति भी कम है जो कि इन क्षेत्रों को राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ चलने के लिए और अधिक तेजी से विकास की आवश्यकता पर जोर देती है.

उपर्युक्त चुनौतियों तथा समस्याओं के बावजूद भी इन सात भगिनी प्रदेशों की उपलब्धियां हम सबके लिए गौरवान्वित करने वाली है. गीत, संगीत, खेल-कूद एवं प्राकृतिक संपदाओं से युक्त यह सारे प्रदेश व देश के विकास में सदैव उचित योगदान दे रहे हैं. यदि खेल-कूद की बात करें तो मणिपुर अकेला ऐसा राज्य है जो राष्ट्रीय स्तर एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाने में सफल रहा है. बॉक्सिंग में मैरी कॉम ने अपनी छवि एक ऐसे खिलाड़ी के रुप में प्रस्तुत की है कि उनकी आत्मकथा पर फिल्म तक बन गई. इसी तरह प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से ये क्षेत्र काफी मनमोहक एवं लुभाने वाले हैं. शिलांग, तवांग, गुवाहाटी सहित इन राज्यों के कई पर्यटन स्थल पूरे देश-विदेश के सैलानियों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं.

संयुक्त रुप से यह 'सप्त भगिनी का प्रदेश' पूरे देश के लिए प्रेरणापरक तथा गौरवान्वित करने वाला है जो दिन-रात पूरे देशवासियों को भारत माता की सेवा में आगे बढ़ने के लिए ललकारता है.

डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे. का., पटना

पूर्वोत्तर राज्य एक सांस्कृतिक विरासत

समग्रता में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति अपने आप में वह विशाल समुद्र है जिसके अतल में अनगिनत रंगीन मोतियां यत्र - तत्र बिखरी हुई हैं. किसी भी अंचल की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां उस अंचल के सामाजिक गठन पर निर्भर रहती है. प्रकारांतर से समाज के जनसमुदाय का निर्माण करने वाले तत्व जैसे विभिन्न नस्लें या प्रजातियाँ, उनके विशिष्ट गुण, उनकी आकांक्षाओं, जातिगत अस्मिता, संचेतना, निष्ठा, आपसी संबंध - संपर्क, उनके धर्म, धार्मिक विश्वास, रीति-रिवाज, उनकी भाषाएँ, भाषिक संस्कृति, लोक विश्वास एवं साहित्य आदि किसी अंचल की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रभावित करती है. इस दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत में स्थित अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, असम, मिजोरम व सिक्किम की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनमें विलक्षणता है जो देश की मुख्यधारा में शायद ही देखने को मिलती है.

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक धरोहर बहुत सम्पन्न है, यहाँ की संस्कृति अनोखी है और वर्षों से इसके कई हिस्से अब तक अक्षुण्ण हैं. पूर्वोत्तर प्रान्त अपने प्राकृतिक बनावट के कारण, भारत का न केवल अभिन्न भाग है बल्कि भारत की समृद्धि में इसकी भूमिका बहुआयामी है. इन आठ राज्यों का समूह पूर्वोत्तर भौगोलिक, पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 7.9 प्रतिशत भाग पूर्वोत्तर क्षेत्र के 8 राज्यों में समाविष्ट है. इस क्षेत्र में 400 समुदायों के लोग रहते हैं तथा पूर्वोत्तर का समाज बहुधार्मिक, बहुभाषी तथा बहु सांस्कृतिक है. इस क्षेत्र में लगभग 220 भाषाएं बोली जाती हैं. विभिन्न धर्मों के इस भू-भाग पर कई मनभावन पर्व और त्योहार मनाए जाते हैं. इनकी अपनी संगीत और नृत्य की शैलियाँ विकसित है जो बहुत ही लोकप्रिय हैं. संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, पर्व-त्योहार आदि की दृष्टि से यह क्षेत्र इतना वैविध्यपूर्ण है कि इस क्षेत्र को भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा.

दरअसल पूर्वोतर की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों को टटोलते हुए हमें यह भी देखना होगा कि वहां के व्यक्ति विशेष के जीवन में इन सब बातों का महत्त्व कितना है? अकादमिक स्तर पर उपलब्ध बहुत सारे संदर्भों के सहारे अपनी बात रखी जा सकती है लेकिन इसे ठेठ व्यक्तिगत स्तर पर समझने के लिए सांस्कृतिक बदलाव की प्रक्रिया पर विचार जरूरी है. अंतत: एक व्यक्ति का संस्कार उस व्यक्ति में निहित संस्कृति का प्रतिबिंब होता है परंतु संस्कृति एक अखंड इकाई नहीं होती, इसके अलग-अलग हिस्से या अंग होते हैं, जिनका समन्वित रूप पूरी संस्कृति होती है. यह उल्लेखनीय है कि व्यक्तियों को संस्कारित करने के लिए संस्कृति एक साचे का काम करती है.

भर्तृहरि ने मनुष्य और पशु के बीच में एक भेद-रेखा खींची थी. उन्होंने कहा था मनुष्य और पशु में चार सामान्य वृत्तियां होती हैं - आहार, नींद, भय और मैथुन. इस तरह पशु और मनुष्य में कोई भेद नहीं किया जा सकता. उनके लिए कोई भेद-रेखा है तो वह है धर्म. धर्म द्वारा ही पशु और मनुष्य में भेद किया जा सकता है, लेकिन आज धर्म का रूप बिलकुल बदल गया है. आज 'धर्म' शब्द की भाषा को कम समझा जाता है और यह शब्द कुछ रूढ़ियों मान्यताओं तथा जाति आधारित बातों के साथ जुड़ गया है.

यदि हम नये परिदृश्य में इस पर चिंतन करें तो धर्म के स्थान पर हमें एक दूसरा शब्द खोजना होगा और वह शब्द हो सकता है - विज्ञान. मनुष्य और पशु में जो अंतर है वह दरअसल विज्ञान का अंतर है. पशु में विज्ञान नहीं है, विवेक की चेतना नहीं है. मनुष्य में विज्ञान है, विवेक की चेतना है. यहां यह गौरतलब है कि पूर्वोतर के विभिन्न भाषी लोगों ने वहां के पशु धन को अपनी कला और संस्कृति, अपने रहन-सहन और पहनावे से अपने बहुत निकट जोड़कर रखा है. जो कि अन्यत्र किसी भी भारतीय जनजातीय और आदिवासी समुदायों में अपने किस्म का अनुठा उदाहरण है.

पूर्वोत्तर के आठ राज्यों की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अपने आप में पूरे शेष भारत से अलग ही विशिष्ट इतिहास रखती है जैसे अरुणाचल के पुरुषों

की वेशभूषा को ही लिया जाए. पारंपरिक जातीय पोशाकों में अपने सिरों पर बांस या बेंत से बनी गोल टोपी, अनोखा केश विन्यास, बालों को सामने से बांधकर प्राचीन मुनियों की तरह जूड़ा, जूड़े में लकड़ियों की आड़ी सींक और उसमें पक्षियों के रंग-बिरंगे पंख खोंसे हुए, गले में लटकती म्यानों में ठूंसी हुई तलवारें.

पूर्वोत्तर की विभिन्न जनजातियों में एकात्मकता का भाव जगाने के लिए एवं उनकी धार्मिक मान्यताओं, प्राचीन संस्कृति, भाषा, साहित्य, सामाजिक नियमों और अपनी वेशभूषा के प्रति अनुराग को बनाए-बचाए रखने के लिए 'जनजाति फेथ एंड कल्चर प्रॉडक्शन फोरम' नामक सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था काम करती है. आवागमन के विषम साधनों और भाषाई एकरूपता के अभाव के कारण, ये जातियां एक-दूसरे के बारे में प्राय: अनजान रही हैं. यह गौरतलब है कि शेष भारत की तरह अरुणाचल की विभिन्न जनजातियां जैसे बोडो की बाथी-पूजा, कार्वी की पूजा पद्धति, बौद्ध धर्मी जनजातियों की लोसर-पूजा, दोन्यी-पोलो (सूर्य-चाँद) की पूजा आदि पूजा विधि में चावल और जल का प्रयोग सामान्य रूप से होता है.

पूर्वोत्तर की संस्कृति सचमुच अपने वितान में बहुत व्यापक है. मेघालय की 'खासी' जाति की पूजन विधि हो, नागालैंड के जेलियांग कबीले की सामूहिक प्रार्थना हो, मणिपुर के रोंगमेई समाज और सिक्किम की लेपचा जनजाति के भजन-गीत हों, मिजोरम का जायलो नृत्य हो या रियांग जाति की लड़कियों द्वारा सिर पर पंचमुखी दीपक और हाथों में थालियां लेकर प्रस्तुत किया गया नृत्य हो, ये सब पूर्वोत्तर की संस्कृति की अलौकिकता को ही दिखाते हैं.

किसी भी जगह विशेष की संस्कृति में वहां की भाषा और साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है. इन लोक जनजातियों की संस्कृति से ही वहां का स्थानीय साहित्य अपना वैभव पाता है. मिजोरम काचकमा लोक नृत्य, सोनोवाल कछारी जाति के बिहू नृत्य, कार्वी जाति के लोक नृत्य, दरअसल वहां की भाषा और साहित्य को ही प्रदर्शनकारी कला में ढालने का उपक्रम है. पूर्वोत्तर की लोक कलाएं देश के किसी भी हिस्से से बहुत ज्यादा समृद्ध हैं. असम के उत्तर - कछार के माइरवांग के डिमासा लोक नृत्य हो, मेघालय की जयंतिया जाति का नृत्य हो, गारों पहाड़ों की हाजोंग जाति का लावोपानी नृत्य हो या फिर नागाओं का जेलियांग नृत्य हो. ये सब पूर्वोत्तर की बहुरंगी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं.

गौरतलब है कि समय के साथ-साथ ये जनजातियां पहले जैसी आदिम अवस्था में नहीं रह रहीं हैं. इनके बांस व लकड़ी के खुट्टों के मचान पर बने चांग-घरों में बिजली पहुंच चुकी है. शिक्षा के प्रति इनमें जागरूकता है. कम्प्यूटर और मोबाइल इनके जीवन का अहम हिस्सा बन गया है. बाबजूद इसके ये अपनी सनातन धार्मिक मान्यताओं, रीती-रिवाजों, संस्कृति, लोक-गायन और लोक नृत्यों को किसी विरासत की तरह से नहीं बल्कि अपनी जीवन शैली की तरह से अपनाए हुए हैं.

पूर्वोत्तर में छोटे छोटे कबीलों में रहने वाली अनेक जनजातियां है, जैसे एक अरूणाचल प्रदेश को ही लिया जाए तो यहाँ की मुख्य जनजातियां हैं - खामति, सिम्फो, फकियाल, बांग्चू, नोकटे, तांग्सा, तीसू या योविन, ईदू मिश्मी, दिगास मिश्मी, मीजू मिश्मी आदी, तागिन, मिरी या मिसिंग, देउरी, गालो, नरह, बैंगनी, मोन्या आदि-आदि. इनकी भी अपनी अनेक उप-जातियां हैं. पूर्वोत्तर की सभी जन-जातियां, नृत्य-संगीत की बहुत शौकीन होती हैं. नृत्य-संगीत उनके जीवन जीने का सामान्य लेकिन रचनात्मक हिस्सा होता है. न्यिशी, मिसिंग, आदी, देउरी, सिम्फों आदि जातियों के पहाड़ी लहजों की हु:.. हा: जैसी ध्वनियों का समावेश उनके द्वारा गाए जाने वाले बिहू गीतों और वन गीतों के स्वरों में सौंदर्य वृद्धि करने के लिए बहुत स्वाभाविक रूप से हुआ है.

ब्रितानी हुकूमत ने असम में दाखिल होने के बाद इन सभी पर्वतीय अंचलों को अलग-थलग करने के लिए अलग-अलग शासन व्यवस्था लागू की. लेकिन वे भी यहाँ की लोक-संस्कृति और जीवन शैली को बदल नहीं पाए.

पूर्वोत्तर की विभिन्न जनजातियों की अपनी अलग-अलग लोक परम्पराएं, लोक देवी-देवता, विभिन्न अनुष्ठान, विभिन्न पर्व त्योहार हैं जो उनके साहित्य और लोक संस्कृति का आधार है. ये सभी जनजातियां भले ही हिंदी और अंग्रेजी सीखने लगी हों लेकिन उन्हें अपनी भाषा, अपने खान-पान, अपने रीति-रिवाज और धार्मिक मान्यताओं से बहुत प्रेम है.

महाभारत में भी पूर्वोत्तर की कुछ जनजातियों का 'किरात' कहकर उल्लेख मिलता है. प्राग्ज्योतिषपुर नरेश भगदत्त महाभारत युद्ध में अपने जामात दुर्योधन के पक्ष में युद्ध करने अपनी पीत-वर्णी विशाल किरात-वाहिनी और दस हजार हाथियों के साथ गए थे. ये पीत-वर्णी किरात कोई और नहीं, असम की जनजातियों के ही लोग थे. महाभारत में यह लिखा है कि किरात देखने में सुंदर और स्वर्णिम रंग की काया वाले हैं. इनके सिर पर केशों का नुकीला जूड़ा है. ये साहसी हैं, इनमें बाघ जैसी स्फूर्ति है.

नृशास्त्रियों के लिए संस्कृति मनुष्यों का वह विशिष्ट गुण है, जो उन्हें दूसरे प्राणियों से अलग करता है और इसलिए उनके जीव वैज्ञानिक अध्ययन से अलग अध्ययन का क्षेत्र बनता है. इसके लिए वो मनुष्यों में सभी जगह पाए जाने वाले समान व्यवहारों और संस्थानों का अध्ययन करते हैं - जैसे कौटुंबिक संबंध, धर्म, भाषा आदि. इसके विपरीत जैव-वैज्ञानिकों का समूह, जिसे सोसियो बायोलोजिस्ट कहा जाता है, संस्कृति को पूरी तरह जैविक गुण का विस्तार मानता है और यह मानकर चलता है कि मनुष्य के सारे व्यवहार उसकी अनुवांशिकी से निर्धारित होते हैं. पूर्वोत्तर की संस्कृति को ठीक-ठाक समझने के लिए दोनों तरह के अध्ययन की जरूरत है. जाहिर है कि यह काफी अनुशासन, श्रम और समय लेने वाला उपक्रम है.

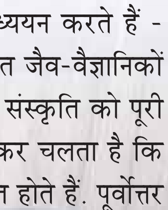

राहुल राम
क्षे. का. त्रिवेन्द्रम

असमिया साहित्य के साहित्यकार श्री अरुण शर्मा

भारत देश संस्कृति और साहित्य का देश कहा जाता है, यहाँ के कोने-कोने में साहित्यकार और साहित्य फैले हुए हैं. भारत देश उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक फैला हुआ है, इसका हर राज्य अपने आप में खास है और इनकी खासियत इनके साहित्य में देखी जा सकती है. साहित्य प्रत्येक संस्कृति का आईना होता है और इस आईने को बनाने वाले को साहित्यकार कहते हैं. ऐसे ही एक साहित्यकार श्री अरुण शर्मा हैं, जिन्होंने असमिया भाषा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इनके इस योगदान के लिए इन्हें वर्ष 1998 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2010 में पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया है. यही नहीं इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो में भी कार्य किया और इसके साथ-साथ रंगमंच के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया. दुनिया आज भी इनके इन उल्लेखनीय कार्यों के लिए इन्हें याद करती है.

जीवन परिचय

असमिया भाषा के विख्यात लेखक/नाटककार श्री अरुण शर्मा का जन्म 3 नवम्बर, 1931 में असम के डिब्रूगढ़ में हुआ था. इनकी प्रारम्भिक शिक्षा तेज़पुर उच्च विद्यालय में हुई थी, इन्होंने वर्ष 1948 में मैट्रिक की परीक्षा पास की थी. शर्मा जी ने अपनी स्नातक शिक्षा वर्ष 1954 में कॉटन कॉलेज (गुवाहाटी) से पूर्ण की थी. इस दौरान ये कविता और नाटक लिखने लग गए थे. इनके पिता श्री तिलक चन्द्र शर्मा टाइम्स ऑफ असम में संपादक का कार्य किया करते थे. वर्ष 1935 में इनके पिता परिवार सहित हलेमगुरी में रहने लगे, यहाँ इनके पिता गांधीजी के विचारों से प्रभावित हुए और खेतीबाड़ी करने के साथ सामाजिक कार्य भी करने लगे. वर्ष 1959 में अरुण जी की शादी आरती जी से हुई और नंदिनी शर्मा, ओचिंत्य शर्मा इनके दो बच्चे हैं. 27 मार्च, 2017 में 85 वर्ष की आयु में मेदांता मेडिकल इंस्टीट्यूट (नई दिल्ली) में इनका देहांत हो गया.

लेखन/कार्य

अरुण जी ने वर्ष 1954 में 'द असम ट्रिब्यून' में संपादक कर्मचारी के रूप में अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की थी. वर्ष 1955 में ये अपने मूल निवास स्थान वापस आ गए, यहाँ इन्होंने एमसीडी उच्च विद्यालय में सहायक प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया. इसके बाद वर्ष 1960 में ये दोबारा गुवाहाटी गए और यहाँ वर्ष 1989 तक ऑल इंडिया रेडियो में कार्य किया, यहाँ ये शैक्षणिक प्रसारण खंड के प्रमुख के रूप में रहे थे. वर्ष 1969 में बीबीसी (BBC) लंदन में इन्होंने रेडियो कार्यक्रम के लिए 6 महीनों का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था। 1970 और 1980 के दशक में इन्होंने गुवाहाटी स्टेशन के नाटक खंड का कायाकल्प कर दिया था, इस दौरान इन्होंने 47 नाटक और ऑल इंडिया रेडियो के लिए कई डॉक्यूमेंट्री/लेख भी लिखे, जिनके लिए इन्हें 3 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिये गए हैं. वर्ष 1986-1989 के बीच इन्होंने डिब्रूगढ़ स्टेशन के स्टेशन निदेशक के रूप में कार्य किया और वर्ष 1990 में शिलाँग में ऑल इंडिया रेडियो उत्तरपूर्व सेवा में निदेशक के पद से सेवानिवृत हुए. यहाँ से इन्होंने अपने कार्य का अंत नहीं किया बल्कि वर्ष 1990-92 के दौरान असमिया साप्ताहिक पत्रिका 'पुरबाचल' के संस्थापक संपादक बने तथा 1992 से 1997 भारतीय चाय संघ के चाय केंद्र में निदेशक के रूप में रहे. यह असम में संघर्ष का समय था, जब अरुण जी को स्थानीय चाय उद्योग और असम के लोगों के मध्य एक संबंध सेतु की रूपरेखा तैयार करने और उसके कार्यान्वियन के लिए नियुक्त किया गया था. वर्ष 2005 में अरुण जी को 'सन-एट-लुमिएरे' नामक नाटक का लेखन और कार्यान्वियन का कार्य सौंपा गया था. यह नाटक असम के इतिहास पर केन्द्रित था, जिसका आयोजन शंकरदेव कलाक्षेत्र में निरन्तर किया जाता था.

लेखन शैली

अरूण शर्मा कोई साधारण नाम नहीं है, इनकी ख्याति असमिया साहित्य में निपुण नाटककार के नाम से जानी जाती है. इन्हें हिन्दी साहित्य के जाने-माने नाटककार मोहन राकेश के समतुल्य रखा जाता है. अरुण शर्मा जी एक प्रयोगात्मक नाटककार हैं, प्रयोगात्मक होने की वजह से इन्होंने असमिया नाट्य साहित्य को एक नई रूपरेखा प्रदान की है. एक उपन्यासकार के रूप में इन्होंने सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों में दर्शाया है. इसके साथ-साथ इन्होंने

45 रेडियो नाटक भी लिखे हैं. 'आहार' इनके नाटकों में से सबसे ज्यादा लोकप्रिय और अच्छा है. इनके लेखन में आम आदमी के दुख, कष्ट, वेदना की झलक दिखती है. लेखक, नाटककार, उपन्यासकार के अतिरिक्त अरुण जी अनुवादक भी रहे हैं. इन्होंने कई भाषाओं की पुस्तकों का असमिया भाषा में अनुवाद किया है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-1. नाबन्न (Nabanna) बंगाली भाषा 2. नीलकण्ठ पखिर संधान (Neelkantha pakhir Sandhan) बंगाली भाषा 3. इच्छामती (Ichchamati) बंगालीभाषा.

अरुण शर्मा जी के लेखन में निम्न, मध्य, उच्च वर्ग के साथ-साथ जातिवाद की समस्याओं का चित्रण देखने को मिलता है. इनका उपन्यास 'आशीर्वाद के रंग' इसका ही एक उदाहरण है, इसमें अंर्तजातीय विवाह और विधवा विवाह की समस्याओं को उजागर किया गया है.

अरुण जी अपने समय के विख्यात नाटककारों में से एक थे. इन्हें विशेषत: इनके स्वछंद नाटकों की वजह से जाना जाता है. साथ ही इन्होंने असमिया भाषा में नाटक के क्षेत्र में ज्यादा काम किया है. ये कवि, उपन्यासकार और नाटककार थे.

इनके कुछ नाटक इस प्रकार हैं:-

उरुखा पजा (Urukha Paja) 1954, जिंती (Jinti) 1955, स्थावर (Sthawar) 1956, परशुराम (Parshuram) 1962, श्री निवारण भट्टाचार्य (Sri Nibaran Bhattacharya) 1964, पुरुष (Purush) 1965, कुकुरनेचीयामनुह (KukurnechiaManuh) 1968, आहार (Aahar) 1970, चिन्योर (Chinyor) 1972, पद्मा, कुंती इत्यादि (1976), बुरंजी पाठ (Buranji Path) 1978, पोस्टर (Poster) 1982, बाघजाल (1983), नेपोलीयन और देसरी (Nepoleon Aru Deserie) 1985, अन्य एक अध्याय (1994), अग्निगढ़ (Agnigarh) 1996, अदिति की आत्मकथा (2000), चक्रव्यूह (Chakrabyuha) 2003, चित्रलेखा (2006), अनुपम अंधेरा (Anupam Andhar) 2013, रोबेस ऑफ डेस्टिनी (Robes Of Destiny) 2014, अरुण शर्मा निर्वाचित नाटक (Arun Sharma Nibrachito Natak) 2014.

उपन्यास

उभला शिफ़ा (Ubhala Sipa) 1979, नीरिहा आश्रय (Niriha Ashroy), आशीर्वाद रंग (AshirbadorRong) 1996, संकल्प (Sankalp) 2008, बाघजाल 2014, नेपोथ्यों चंद्रनाथ (Nepothyo Chandranath) 2014

कविता

अरुण शर्मा का काव्यनुराग (Arun Sarmar Kabyanurag) 2012.

पुरस्कार

असम राज्य से जुड़े होने की वजह से इन्हें असमिया साहित्य की अच्छी जानकारी थी. इनके नाटक और लेखन में असमिया साहित्य की सुगंध आती है. इनके अतुलनीय योगदान के लिए इन्हें विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जैसे:-

असम साहित्य सभा पुरस्कार-1967, असोम नाट्य सम्मेलन पुरस्कार-2001, साहित्य अकादमी पुरस्कार 'आशीर्वादोर रंग' उपन्यास के लिए-1998, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार-2003/2004, असम घाटी साहित्य पुरस्कार-2005, पद्मश्री पुरस्कार-2010, शंकराचार्य अवतार साहित्य पुरस्कार-2010.

जैसा कि अरुण जी ने ऑल इंडिया रेडियो में भी काम किया था और वहाँ कई डॉक्यूमेंट्री/लेख और नाटक भी लिखे थे जिसके लिए इन्हें कई और पुरस्कार भी मिले हैं जैसे:- 'ऑल बड्स टु ब्लूम' डॉक्यूमेंट्री के लिए जापान पुरस्कार-1980 (अंतर्राष्ट्रीय), 'सावधान-आगे खतरा है' डॉक्यूमेंट्री के लिए एशिया-पैसिफिक प्रसारण संघ पुरस्कार-1983, 'ऑल लिप्स टू स्माइल' डॉक्यूमेंट्री के लिए प्रिक्स फ्यूचरा बर्लिन सराहना प्रमाण-पत्र (Prix Futura Berlin Commendation Certificate)-1983, कुकुरनेचीया मनुह (Kukurnechia Manuh) डॉक्यूमेंट्री के लिए आकाशवाणी पुरस्कार.

अरुण जी के इस योगदान और उपलब्धियों से इस बात का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि भाषा और साहित्य पर इनकी जानकारी कितनी स्पष्ट थी. इनका जीवन अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय है. इस तरह के लेखक इतिहास में अपना नाम कर जाते हैं और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनते हैं.

नरेन्द्र कुमार
क्षे. का., मदुरै

पूर्वोत्तर राज्यों में खान-पान

भारत में सब कुछ अनेक और विविध है, भारतीय भोजन का आहार एक दूसरे से बहुत अलग और विशिष्ट है. भारतीय भोजन की अपनी एक विशिष्टता है. आज संसार के सभी बड़े देशों में भारतीय भोजनालय पाए जाते हैं जो कि अत्यंत लोकप्रिय हैं. भारत के हर क्षेत्र का खाना दूसरे क्षेत्र से बहुत अलग है, स्वादिष्ट खाना बनाना एक कला है. भारतीय संस्कृति में इसलिए इसे पाक कला कहा गया है.

अगर हम पूर्वोत्तर राज्यों का भ्रमण करें तो यह पाएंगे कि यहां के पकवान और भोजन इनकी परंपराओं और संस्कृति की गहराई से जुड़े हुए हैं. पूर्वोत्तर भारत का खाना अन्य राज्यों से बहुत ही अलग है.

असम का भोजन -

आसमी खाने की बात करें तो यहां के खाने में प्रमुख मसालों के रूप में स्थानीय जड़ी-बूटियों और मिर्च का इस्तेमाल किया जाता है.

असम में उबले चावल के आटे से बने केक या पकौड़ियों पीठा का नाश्ता बहुत ही अधिक लोकप्रिय है. इनके ऊपर कद्दूकस की हुई नारियल की पतली परत और बीच में गुड़ का इस्तेमाल किया जाता है. केतली में स्टीम कर इन्हें गरम-गरम ही सर्व किया जाता है. आप इसके साथ लाल चाय का ऑर्डर कर सकते हैं.

बतख के मांस की बनी हुई 'बतख मांस करी' और टेंगी मछली करी यहां काफी पसंद की जाती है.

'खार' नाम का भोज जो मांस का बना होता है और जिसमें तरल पदार्थ के रूप में पपीते का प्रयोग होता है. जाक अरु भाजी यह शाकाहारी व्यंजन है.

ओउ खट्टा ये व्यंजन बहुत ही स्वादिष्ट होता है और ये कुछ कुछ सांभर जैसा होता है.

कबूतर के मांस से बना 'पारो मेन्दोहो' असम का एक पारंपरिक व्यंजन है.

रेशम के कीड़ों से बना हुआ व्यंजन भी यहां लोकप्रिय है.

बाणगजीजोर लागोट कुकुरा ये मुख्य रूप से बांस शूट के साथ चिकन को मिलाकर बनाया जाता है.

मेघालय का खाना

मेघालय के खाने की बात करें तो यहां की मंगोलियाई जनजातियाँ कई अलग-अलग जायकेदार व्यंजनों को अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल करते हैं. यहां शाकाहारी के साथ-साथ मांसाहारी व्यंजन भी बनाए जाते हैं. इसके अलावा मौसमी हरी सब्जियों, हरे बांस व स्थानीय जडी बूटियों का भी खूब इस्तेमाल किया जाता है. चावल को ज्यादा महत्व देते हैं. जायका बढ़ाने के लिए इसमे ढेर सारे मसालों का इस्तेमाल किया जाता है.

मेघालय के प्रसिद्ध व्यंजन -

मेघालय के खासी समुदाय में 'जाधो' बहुत लोकप्रिय पकवान है. जाधो मूल रूप से चावल और मांस से निर्मित पकवान है. जिसका रंग पीला व लाल होता है. यह अधिकतर सुअर और गाय के मीट के साथ बनाया जाता है. कुछ लोग इसे चिकन और मछली के साथ भी बनाते हैं.

'डोह खलीह' एक सुगंधित सलाद की तरह होता है. जिसमें इच्छानुसार सुअर, गाय, चिकन, मछली के मीट के बारीक बारीक टुकड़े (कीमा) करके प्याज, हरी मिर्च के साथ बनाया जाता है.

'डोह नियांग' - बहुत स्वादिष्ट और ऊंचे पकवानों की श्रेणी का यह पकवान सुअर या गाय के मीट द्वारा गाढ़ी ग्रेवी के साथ तैयार किया जाता है.

'नाखम बोरिंग बेलती चटनी' - यह सूखी मछली से तैयार किया जाती है. यह गारो समुदाय के लोगों की सबसे पसंदीदा डिश है.

'नाखम बीची' - खाने से पहले सर्व किया जानेवाला यह ड्राई फिश सूप है.

'गालडा नाखम' - सूखी मछली व मौसमी सब्जियों को मिलाकर तैयार किया जाता है.

अरुणाचल प्रदेश का खाना

अरुणाचल प्रदेश में भारत की सबसे ज्यादा आदिवासी जनजातियाँ पाई जाती हैं. चावल के अलावा ये लोग अपने खाने में मक्के और बाजरे का उपयोग भी करते हैं. ये बैंगन, कद्दू और सरसों के पत्तों का सब्जी के रूप में उपयोग करते हैं. ये लोग बाँस की नई कोपलों की सब्जी भी बहुत स्वाद से खाते हैं. सूखी मछली का चूरा, भूने मक्के का चूरा, भूने हुए चावल का चूरा, चावल की रोटी इत्यादि. ये जंगल के कंद भी खाते हैं. यहाँ के लोग उबली हुई सब्जियाँ खाना पसंद करते हैं. तेल का उपयोग कम ही किया जाता है, मिर्च का बहुत अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता है. जिसकी वजह से यहाँ के कई व्यंजन सामान्य से थोड़े ज्यादा तीखे होते हैं. चावल से बनायी गयी मदिरा इन लोगों का दैनिक पेय है. कोई भी सामाजिक- धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों और उत्सवों पर मदिरा का पीना और पिलाना अनिवार्य है.

अरुणाचल प्रदेश के प्रसिद्ध व्यंजन -

'पिकापिला' - यह अरुणाचल प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध अचार है. इसकी सबसे ख़ास बात यह है कि यह मीट से बना होता है. इसमें बम्बू- शूट, किंग- चिली और पोर्क- मीट शामिल होता है. यह खाने में बहुत तीखा होता है.

'लुकतेर' - यह अरुणाचल प्रदेश का एक लोकप्रिय व्यंजन है. यह मीट को सुखाकर बनाया जाता है और इसमें किंग-चिली मिलाई जाती है. आपको बता दें कि किंग चिली बहुत तीखी मिर्च है. इस व्यंजन को चावल के साथ खाया जाता है. यहां बाजरे की बियर बनायी जाती है.

'अपोंग' - चावल से बनी हुई ख़ास यह बियर, रोज पीने के उपयोग में लाई जाती है. यह यहाँ का मुख्य पेय है. जो घर में ही बनाया जाता है. इसे स्वाद में अच्छा और सुपाच्य माना जाता है. बच्चों से लेकर बूढ़े सब लोग इसको पीते हैं.

'मरूआ' - यह भी एक तरह की बियर है फर्क सिर्फ इतना है कि इसको चावल से न बनाकर बाजरे से बनाया जाता है. इसको भी घर में बनाया जाता है.

'चूरा सब्जी' - याक या गाय के दूध के खमीर उठे चीज़ से तैयार की जाने वाली इस सब्जी में भी किंग चिली का इस्तेमाल किया जाता है. इसको मसालों के साथ मिलाकर बनाया जाता है.

'पहक' - यह एक प्रकार की तीखी चटनी होती है. जिसको चावल के साथ खाया जाता है. यह चटनी खमीर उठे सोयाबीन और मिर्च से तैयार की जाती है. इसे चावल या रोटी के साथ खाया जाता है.

मिजोरम का खाना

मिजोरम का खाना उत्तर भारतीय और चीनी तत्वों का मिश्रण है. मिजोरम के लोग अपने भोजन में अधिकतर मांसाहार इस्तेमाल करते हैं. साथ ही वे अपने भोजन में सब्जियों का भी उचित मात्रा में प्रयोग करते हैं. आमतौर पर यहा केले के पत्तों पर भोजन परोसा जाता है.

मिजोरम की प्रसिद्ध डिश

'बाई' - स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी बूटियों और मसालों का उपयोग करके तैयार किया गया है.

'कोत पिठा' - चावल के आटे और केले का उपयोग करके बनाया गया है.

'मिजो वावक्सा' - सुअर के मीट से निर्मित.

'बाम्बू शूट फ्राई' - बाम्बू यानि बांस के छोटे-छोटे हरे टुकड़े डीप फ्राई कर बनाया गया काफी स्पाइसी होता है.

'पंच फॉरन तड़का' - यह डिश मिजोरम में बहुत लोकप्रिय है और आसानी से सभी स्थानों पर मिल जाती है. यह शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह से बनायी जा सकती है. शाकाहारी में यह बैंगन, कद्दू और आलू से बनाया जाता है और मांसाहारी में यह ज्यादातर चिकन के साथ तैयार की जाती है. यह काफी मसालेदार और स्वादिष्ट होती है.

त्रिपुरा का खाना

तीन ओर से बांग्लादेश की सीमा से घिरा होने के कारण त्रिपुरा के खाने में बांग्लादेशी मिश्रण भलीभाँति देखा जा सकता है. त्रिपुरा की सांस्कृतिक विविधता आदिवासी और गैर-आदिवासी लोगों के भोजन की आदतों में परिलक्षित होती है. यहां के लोग अधिकांश मछली, चावल और सब्जियों पर निर्भर रहते हैं. मटन, चिकन और सुअर के मीट के साथ, मांस यहां के भोजन का एक हिस्सा है. मुई बोरोक, बागुली चावल, मछली स्टोज, बांस की मारिया, किण्वित मछली, मांस के रोस्टज

त्रिपुरा की प्रमुख डिशों में से है. 'मुई बोरोक' आपको सिर्फ त्रिपुरा में ही खाने को मिल सकती है. यहां के लोग अधिकतर सब्जियों के साथ चावल का प्रयोग करते हैं. त्रिपुरी भोजन में एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसे बरमा कहा जाता है, जो कि सूखे मछली की किण्वित होती है. इसे खाना स्वस्थ माना जाता है क्योंकि यह तेल के बिना तैयार किया जाता है. त्रिपुरा के भोजन जैसे बांगुई चावल और मछली स्टॉज, बांस की मारियां, किण्वित मछली, स्थानीय जड़ी बूटियाँ और मांस के रोस्ट्स राज्य के भीतर और बाहर बेहद लोकप्रिय हैं.

नागालैंड का खाना

नागालैंड के नागा लोग ज्यादातर मांसाहारी होते हैं. यहां के लोग कुकर, कुत्ते, भैंसों, सुअर का मांस, मटन, चिकन, मछली, सांप आदि के मांसों के शौकीन होते हैं. नागा लोग कुत्ते के मांस बुश भी को बड़े चाव से खाते हैं. इसके अलावा हरी सब्जियां भी यहां के बाजारों में खूब मिलती हैं.

नागालैंड की प्रसिद्ध डिश

नागालैंड में उबली सब्जियां बहुत खाई जाती हैं.

'सोयाबीन' - सोयाबीन को फर्मेंट कर खाया जाता है और नागालैंड में उसे अखुनी कहा जाता है. यह पाउडर और केक दोनों रूप में मिलता है.

'ज़ूथो' - चावल से बनने वाली बियर, खासतौर पर नागालैंड में बनायी जाती है और इसे पीना वहां के लोगों के लिए खुशियां मनाने की तरह होता है

मणिपुर का खाना

मणिपुर के इतिहास की तरह उसका स्वादिष्ट भोजन भी है. यहां के लोग अपने भोजन में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों का प्रयोग करते हैं. ज्यादातर उबला खाना होता है यहां तथा मिर्च मासालों और तेल का उपयोग कम कर स्थानीय जड़ी बूटियों को ज्यादा महत्व देते हैं. काली मिर्च का उपयोग अधिकतर किया जाता है. मणिपुर के लोग चावल, मछली, मीट और हरी पत्तेदार सब्जियां खाते हैं. लोग अपने घर के खेतों में सब्जियों को उगाते हैं तथा ताजा मछलियों के लिए कुछ लोग अपने घर के पीछे एक छोटे तालाब में मछली पालन भी करते हैं.

मणिपुर के 10 प्रसिद्ध डिश

'चामथोंग (कोंगशोई)' - यह मणिपुर की बहुत ही लोकप्रिय शाकाहारी डिश है, जो मौसमी सब्जियों को उबालकर बनाई जाती है.

'ऐरोबा' - मछली को उबालकर उसे ड्राई करके बनाई जाने वाली ऐरोबा भी मणिपुर के लोगों की दूसरी पसंदीदा डिश है, जो चावल के साथ परोसी जाती है.

'मोरोक मेटपा' मणिपुर की लोकप्रिय चटनी है. यह चटनी प्याज और हरी मिर्च को मिलाकर तैयार की जाती है. जो फ्राई व उबली हुई मछलियों के साथ परोसी जाती है.

'सिगंजू' प्रसिद्ध मणिपुरी सलाद है. जिसमें टमाटर, गाजर, खीरा, मूली जैसी सब्जियां नहीं होती बल्कि इसमें गोभी, प्याज, अदरक, कमल कटाई, गेंग्गू पत्ती का मिश्रण होता है.

मछली से बनी 'पाक्नम' यह डिश दिखने में आलू की टिक्की या कबाब जैसी लगती है लेकिन बहुत नर्म होती है. इसे सॉस या चटनी के साथ परोसा जाता है.

खास अवसरों पर बनाई जाने वाली 'चाहाओ खीर' चावल, दूध और कुछ फ्रूटस को मिलाकर बनाई जाती है. इसका रंग बैंगनी होता है. यह बहुत ही स्वादिष्ट और मजेदार होती है.

'आलू कोंगमेट' आलू को उबालकर उसे मसालेदार मिश्रण के साथ मिलाकर इस जायकेदार डिश को बनाया जाता है.

क्लासिक फिश करी 'नगा थोंगवा' है. खास प्रकार की नगा मछली से तैयार की जाती है.

चने से तैयार 'चना कोंगहाउ' का नाश्ते के रूप में चाय के साथ प्रयोग किया जाता है. चने को हल्के मसाले प्याज व हरी मिर्च के साथ फ्राई किया जाता है.

कद्दू प्याज को मिलाकर बनाई जाने वाली 'मॉरेन साग' खाने में बहुत ही स्वादिष्ट होती है.

सुधीर प्रसाद
के. का., मुंबई

लोक गीत / संगीत

भारत अतुल्य है और इस अतुल्य भारत का एक अद्वितीय अंग है- पूर्वोत्तर. पूर्वोत्तर भारत सात भिन्न-भिन्न राज्यों का एक सुंदर सा गुलदस्ता है, जिसकी संस्कृति भारत को महका देती है. ये सात राज्य हैं- सिक्किम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिज़ोरम, मेघालय, नागालैंड और मणिपुर. इन सातो राज्यों की सांस्कृतिक विशेषता के कारण ये भारत का हिस्सा होते हुए भी एक भिन्न इकाई लगते हैं इसीलिए इन्हें पूर्वोत्तर के नाम से अलग से संबोधित किया जाता है. इस इकाई का पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व भी बहुत है. साथ ही यहाँ की संस्कृति बुद्ध व ईसाई संस्कृति से प्रभावित है. प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत - प्रोत इस क्षेत्र में प्रकृति को माँ माना जाता है और उसकी पूजा की जाती है. यहाँ की संस्कृति यहाँ के लोगों की तरह है- सुन्दर और सरल.

संगीत किसी भी क्षेत्र की आत्मा होता है. यह तीन कलात्मक क्रियाओं का मिश्रण होता है - नृत्य, गीत और वादन. ये न सिर्फ मनोरंजन का साधन होते हैं, अपितु इनमें उस क्षेत्र की संस्कृति, इतिहास, रीति-रिवाज़, धार्मिक मान्यताएँ, प्राकृतिक संसाधन व लोगों की भावनाएँ भी समाहित होती हैं. भले ही लोक गीत व संगीत लिपिबद्ध नहीं होते, परंतु वे उस क्षेत्र को उसकी जड़ों से बांध के रखते हैं. अत: आज के युग में इनका संरक्षण और विकास अति आवश्यक है.

पूर्वोत्तर एक प्रमुदित क्षेत्र है, जहाँ के त्यौहार वहाँ की जीवन शैली और संगीत का उत्तम मिश्रण माने जाते हैं. मुख्यत: सभी पर्वो में महिलाएँ और पुरुष साथ मिलकर वाद्य यंत्रो की थाप पर नृत्य करते हैं सिर्फ अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड की कुछ जातियाँ हैं जहाँ केवल पुरुष नृत्य करते हैं. यहाँ फसल कटाई, वीर गाथाएँ, देवी देवताओं का आव्हान, बुरी आत्माओं से रक्षा, मनोरंजन, नव वर्ष और प्रकृति की पूजा आदि को पर्वो के द्वारा उत्सव के रूप में मनाया जाता है. इसके उत्तम उदाहरण हैं-

❖ असम का बिहू उत्सव. यह वर्ष में तीन बार मनाया जाता है- बोहाग बिहू, कोंगाली बिहू और माघ बिहू. इस उत्सव में असम के नव वर्ष की खुशियाँ मनाते हुए युवक व युवती ढोल व पेपा की थाप पर पूरे जोश से थिरकते हैं.

❖ मेघालय में प्रसिद्ध खासी और जैन्तिया जातियों के नृत्य प्रकृति की महानता का बखान करते हैं. नोंगकर्म वहाँ का प्रसिद्ध नृत्य है.

❖ मणिपुर मे 29 जातियों के अपने-अपने नृत्य हैं जैसे - रासलीला, खम्बाथोईबी, माईबी, माओ नागा नृत्य आदि.

❖ मिज़ोरम, चेराव नृत्य के लिए जाना जाता है, जो कि बाम्बू पर किया जाता है.

❖ नागालैंड में मुख्य रूप से नागा पुरुष युद्ध नृत्य करते हैं. नागालैंड में ज़ेलियांग और ज़ेमी जनजातियों के अपने-अपने नृत्य होते हैं.

❖ अरुणाचल प्रदेश, बर्टो चाम नामक पर्व के लिए जाना जाता है. इसमें मुखौटे पहनकर मनुष्य में छुपी अच्छाई और बुराई को दर्शाया जाता है.

❖ त्रिपुरा के नृत्य प्रकृति के बदलते परिवेश पर आधारित होते हैं जैसे बिज़ू नृत्य, होजागिरी नृत्य, गरिया नृत्य आदि.

इन उत्सवों और नृत्यों के साथ ही पूर्वोत्तर के लोकगीत भी वहां के विषय में बहुत कुछ बताते हैं. इनके माध्यम से भिन्न-भिन्न जातियाँ अपने गौरवशाली इतिहास का गान गाती हैं. इनमें हमें पूर्वोत्तर की परम्पराओं और लोक- गाथाओं का चित्रण मिलता है. इनके कुछ उदाहरण हैं- नागालैंड का हेरिलेऊ, मणिपुर का पेनाईश्ही आदि. पूर्वोत्तर के वाद्य यंत्र प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर आधारित होते हैं. ये मुख्यत: लकड़ी से बने होते हैं. वैसे तो सातो राज्यों के अपने यंत्र हैं परंतु कुछ यंत्र सब जगह उपयोग में आते हैं जैसे ढोल, मृदंग, पेपा, नगाढ़ा, बाम्बू की बांसुरी आदि.

पूर्वोत्तर का क्षेत्र इन सबके साथ-साथ भारत के 2 शास्त्रीय नृत्यों का भी घर है, मणिपुर का मणिपुरी और असम का सत्रीया. मणिपुरी नृत्य का इतिहास लिपिबद्ध इतिहास के भी पहले का माना जाता है. अपनी सांकेतिक भव्यता और मनमोहक गति के चलते ये दूसरे शास्त्रीय नृत्यों से भिन्न है. इसमें विष्णुपुराण, भागवत पुराण और गीत - गोविन्द की रचनाएँ प्रमुख हैं. वहीं दूसरी ओर सत्रीया नृत्य वर्ष 2000 में ही शास्त्रीय नृत्यों का हिस्सा बना है. इस नृत्य का प्रदर्शन असम के सत्तरनाम कमठों में किया जाता है इसलिए इसे सत्रीया कहते हैं. यह 700 वर्ष पुराना है. यह नृत्य एक सुलभ, तात्कालिक और मनोरंजक तरीके से लोगों को पौराणिक शिक्षाओं को देने का एक कलात्मक तरीका है.

गीत व संगीत के माध्यम से हम किसी भी क्षेत्र के बरसों पुरानी मान्यताएँ, परम्पराएँ और सांस्कृतिक धरोहर को महसूस कर सकते हैं. कहने को तो ये सातो राज्य अलग हैं परंतु इनकी संस्कृति एक दूसरे में रमी हुई है इसलिए पूर्वोत्तर को भारत की सात बहनों के नाम से जाना जाता है.

कल्याणी जाधों
आई के डी सी शाखा, इंदौर

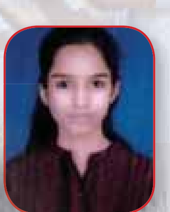

पूर्वोत्तर भारत : ऐतिहासिक एवं प्रेक्षणीय स्थल

'सात बहनों' के नाम से प्रसिद्ध पूर्वोत्तर भारत के सात राज्य केंद्र शासन द्वारा नियंत्रित हैं, ये सात राज्य अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, त्रिपुरा है. हिमालय के पूर्वोतर भाग में नेपाल, तिब्बत सीमा से लगे हुए राज्य हैं जहां मुख्यत: असमी, बंगाली, मणिपुरी और बोड़ो भाषा बोली जाती हैं. पूर्वोत्तर भारत के पाँच बड़े शहर हैं - इम्फाल, गुवाहाटी, अगरतला, शिलाँग, आइज़ोल जो भौगोलिक रूप से सम्पन्न हैं पर यहाँ की आर्थिक विकास की दर शेष भारत की तुलना में कम हैं.

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म से जुड़े अनेक प्रसिद्ध मठ हैं. जिनमें से तवांग मठ सबसे बड़ा एवं प्रसिद्ध है. अरुणाचल प्रदेश के निचले सियांग जिले के लिकाबाली शहर के समीप खुदाई में 15वीं शताब्दी में शुतिया राजवंश के राजा लक्ष्मीनारायन द्वारा निर्मित मंदिर के अवशेष मिले हैं. कहते हैं कि भगवान श्री कृष्ण एवं रुक्मणी जी ने द्वारका जाते समय यहीं विश्राम किया था. उस समय भगवान शिव और माता पार्वती ने फूलों के हार से उनका स्वागत किया था इसलिए इस स्थान का नाम मालिनीथान पड़ गया.

तवांग मठ

अरुणाचल प्रदेश के सेला पास के समीप, सेला पर्वतमाला पर, समुद्र तल से 10000 फिट की ऊंचाई पर तवांग मठ स्थित है, जिसके पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में सेला पहाड़ी समूह, दक्षिण में भूटान एवं पूर्व में केमंग और उत्तर में बहुत सुंदर झील हैं. तवांग जिले के बोमडिला से यह मठ 180 किमी दूर है.

तवांग मठ, भारत में स्थित सभी बौद्ध मठों में सबसे बड़ा और 300 वर्ष पुराना है. इसे 1680 में मेराक लामा लोद्रे गयास्तो ने बनवाया था. इस मठ को बौद्ध भिक्षु अंतर्राष्ट्रीय धरोहर मानते हैं. इसमें 570 से ज्यादा बौद्ध भिक्षु रहते हैं. यह मठ दुर्ग जैसा दिखाई देता है. इसके प्रवेश द्वार का नाम 'काकालिंग' है जो देखने में झोपड़ी जैसा लगता है और इसकी दो दीवारों के निर्माण में पत्थरों का प्रयोग किया गया है. इस मठ का मुख्य आकर्षण यहां स्थित भगवान बुद्ध की 28 फीट ऊंची प्रतिमा और प्रभावशाली तीन तल्ला सदन है. मठ में एक विशाल पुस्तकालय भी है, जिसमें प्रचीन पुस्तक और पांडुलिपियों का बेहतरीन संकलन है. ऐसा माना जाता है कि ये पांडुलिपि 17वीं शताब्दी के हैं. मठ के संस्थापक मेराक लामा को मठ बनाने के लिए उपर्युक्त स्थान ढूंढने में काफी कठिनाई हो रही थी. 'ता' का अर्थ होता है- घोड़ा और 'वांग' का अर्थ होता है- आशीर्वाद दिया हुआ. चूकि इस स्थान को दिव्य घोड़े ने अपना आशीर्वाद दिया था इसलिए इसका नाम तवांग पड़ा.

तवांग स्मारक

तवांग युद्ध स्मारक एक स्तूप (बौद्ध तीर्थस्थल) है, जिसे उन भारतीय शहीदों की स्मृति में बनाया गया था, जिन्होंने सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध में अपने-प्राणों की आहुति दी थी. तवांग शहर के बहुत ही नजदीक, इस स्मारक का निर्माण बौद्ध वास्तुकला और सांस्कृतिक तत्वों के उपयोग से किया गया है, जिसमें अनेक प्रार्थना चक्र और झंडे, रंगीन सर्प, ड्रेगन और अन्य बौद्ध अवशेष (शरीर) शामिल हैं. इनमें से कुछ सजावटी वस्तुएं, स्थानीय तवांग आबादी द्वारा श्रद्धांजलि के रूप में अर्पित की गयी हैं. ये सभी चीजें, इस स्थल की पवित्रता को और बढ़ा देती हैं. यहां भगवान बुद्ध जैसे कई देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियों को भी देखा जा सकता है. इस सुरम्य स्मारक का वातावरण बेहद शांत है और इसके मैदान के चारो ओर, साल भर बर्फ से ढके पहाड़ों और बीहड़ पहाड़ियों को देखा जा सकता है. स्तूप के चारों ओर, राष्ट्रीय ध्वज, सेना ध्वज, वायु सेना ध्वज के साथ-साथ 27 अन्य रेजिमेंटों के झंडे फहराए जाते हैं, जिन्होंने सन् 1962 के युद्ध में हिस्सा लिया था. स्मारक का निर्माण सशस्त्र बलों के 2,420 सदस्यों की स्मृति में किया गया था, जिन्होंने कामेंग जिले में युद्ध के दौरान अपना बलिदान दिया था. स्मारक पर समर्पण पट्टिका में लिखा गया है, 'उनके नाम हमेशा अमर रहेंगे'. स्मारक, दो प्रमुख हॉल में विभाजित है. एक में संग्रहालय है, जिसमें शहीदों का सामान रखा हुआ है और दूसरे का उपयोग एक सभागार के रूप में किया जाता है, जहां लाइट और साउंड का एक शो होता है, जो आपको युद्ध के दिनों में वापस ले जाता है.

जसवंतगढ़ का युद्ध स्मारक

गुवाहाटी से तवांग जाने के रास्ते में लगभग 12,000 फीट की ऊंचाई पर बना जसवंत युद्ध स्मारक भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध में शहीद हुए महावीर चक्र विजेता सूबेदार जसवंत सिंह रावत के शौर्य व बलिदान की गाथा बयां करता है. उनकी शहादत की कहानी आज भी यहां पहुंचने वालों के रोंगटे खड़े करती है और उनसे जुड़ी किंवदंतियां हर राहगीर को रुकने और उन्हें नमन करने को मजबूर करती हैं.

1962 के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए जसवंत सिंह की शहादत से जुड़ी सच्चाई बहुत कम लोगों को पता है. यह 17 नवंबर, 1962 की घटना है, जब चीनी सेना तवांग से आगे निकलते हुए नूरानांग पहुंच गई. इसी दिन नूरानांग में भारतीय सेना और चीनी सैनिकों के बीच लड़ाई शुरू हुई और तब तक परमवीर चक्र विजेता जोगिंदर सिंह, लांस नायक त्रिलोकी सिंह नेगी और राइफल मैन गोपाल सिंह गोसाईं सहित सैकड़ों सैनिक वीरगति को प्राप्त हो चुके थे.

गढ़वाल राइफल के चतुर्थ बटालियन में तैनात जसवंत सिंह रावत ने अकेले नूरानांग का मोर्चा संभाला और लगातार तीन दिनों तक वह अलग-अलग बंकरों में जाकर गोलीबारी करते रहे और उन्होंने अपनी लड़ाई जारी रखी. सूबेदार कुलदीप सिंह बताते हैं कि जसंवत सिंह की ओर से अलग-अलग बंकरों से जब गोलीबारी की जाती तब चीनी सैनिकों को लगता था कि यहां भारी संख्या में भारतीय सैनिक मौजूद हैं. इसके बाद चीनी सैनिकों ने अपनी रणनीति बदलते हुए उस सेक्टर को चारों ओर से घेर लिया. तीन दिन बाद जसवंत सिंह चीनी सैनिकों से घिर गए.

जब चीनी सैनिकों ने देखा कि एक अकेले सैनिक ने तीन दिनों तक उनकी नाक में दम कर रखा था तो इस खीझ में चीनियों ने जसवंत सिंह को बंधक बना लिया और जब कुछ न मिला तो टेलीफोन तार के

सहारे उन्हें फांसी पर लटका दिया, फिर उनका सिर काटकर अपने साथ ले गए. जसवंत सिंह ने इस लड़ाई के दौरान कम से कम 300 चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतारा था.

बोमड़िला मठ

बर्फीले पर्वत, समृद्ध संस्कृति और हरे-भरे परिदृश्य के साथ, बोमडिला भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है. समुद्र तल से 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, वर्ष 1965 में बना यह मठ बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक गुणों का प्रतिनिधित्व करता है. महायान बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए यह एक तीर्थ स्थान है.

चोटिया राजाओं द्वारा अपने शासन काल में अनेक किलों का निर्माण करवाया गया. 8वीं शताब्दी में भिसमक नगर में, 13वीं शताब्दी में ते.जू ओर बोलंग, पूर्वी सियांग में गोमसी, रोइंग में रुक्मणी, पश्चिमी कामेंग में स्थित डिमाचुंग बेताली, 14 वीं शताब्दी में इटानगर एवं पूर्वी कामेंग में नक्शा प्रभात किले का निर्माण हुआ. दिरांग दोजांग जो कि पश्चिमी कामेंग में स्थित हैं, 17 वीं शताब्दी में मोफ़ा द्वारा बनवाया गया था.

असम

कालिका पुराण के अनुसार असम में 9वीं और 10वीं शताब्दी में दानवों अर्थात महिरंगा दानव का राज्य था. उसके बाद नरका दानव ने उसे हटा कर नरका साम्राज्य की स्थापना की. नरका के पुत्र भगदत्त ने महाभारत के युद्ध में किरात चिना समुदायों की सेना के साथ कौरवों के पक्ष में युद्ध में भाग लिया था.

असम में भगवान शिवजी को समर्पित मंदिरों में वशिष्ठ आश्रम, गुवाहाटी से 10-12 कि.मी. गर्भगंगा आरक्षित वन के बाहर स्थित हैं. लंकेश्वर मंदिर गुवाहाटी शहर में स्थित है. तेजपुर शहर में स्थित महाभैरव मंदिर बानासुर राक्षस द्वारा बनवाया गया था. वहाँ की शिवजी की लिंग की मूर्ति लगातार धीरे-धीरे बढ़ रही है. बागेश्वर में बागेश्वरी देवी का मंदिर है जो कि 51 शक्तिपीठों में एक है. हयग्रीव माधव मंदिर, महामाया धाम का मंदिर 400 वर्ष पुराना है.

असम में गुवाहटी के समीप अंबारी में खुदाई में प्राप्त अवशेषों में पहली से दो हजार शताब्दी तक के अवशेष मिले हैं, दूसरी शताब्दी के रोमन साम्राज्य के समय के बर्तन आदि मिले हैं. पूर्व में असम को कामरूप के नाम से जाना जाता था एवं प्राचीनकाल में इसे प्राग्ज्योतिष के नाम से भी जाना जाता था.

असम का सबसे प्रमुख आकर्षण कामाख्या माता का मंदिर है. असम में बाइहाटा करियाली के पास 9वीं-10वीं शताब्दी ई. मदन कामदेव में एक क्रूर शेर खुदाया हुआ है जो शक्तिशाली कामरूप-पालस का प्रतिनिधित्व करता है.

कामाख्या भुवनेश्वरी मंदिर

शक्ति मंदिर के रूप में प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर नीलांचल पर्वत की ऊँचाइयों पर बसा है. यहाँ से ब्रह्मपुत्र नदी की कल-कल करती धारा बहुत प्यारी दिखती है. यह मंदिर एक पहाड़ी पर बना है और इसका तांत्रिक महत्व भी है. गर्भ गृह में देवी की कोई तस्वीर या मूर्ति नहीं है. पुराणों के अनुसार जब माता सती अपने पिता के घर में व्यथित हो कर हवन कुंड में सती हो गई थी तब भगवान शंकर सती की देह को बाहों में उठाए व्यथित हो भटकने लगे तब भगवान विष्णुजी ने सती माता के देह के 51 टुकड़े कर दिये जो पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी गिरे, वहाँ माता का शक्तिपीठ बन गया. कहते हैं कामाख्या माता के मंदिर के स्थान पर माता की योनि गिरी थी. साल में एक बार तीन दिन के लिए अंबुवाची मेला लगता है. इस समय पुजारी मंदिर में सफेद कपड़ा बिछा देते हैं, जो लाल हो जाता हैं और प्रसाद में पुजारी उसी कपड़े के टुकड़े को भक्तों को देते हैं. दस महाविद्या अर्थात काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला की पूजा भी कामाख्या मंदिर परिसर में की जाती है. यहां मछली, बकरी, कबूतर और भैंसों के साथ ही लौकी, कद्दू जैसे फल वाली सब्जियों की बलि भी दी जाती है. पूस के महीने में यहां भगवान कामेश्वर एवं देवी कामेश्वरी के बीच प्रतिकात्मक शादी के रूप की पूजा की जाती है. मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा जमीन से लगभग 20 फीट नीचे एक गुफा में स्थित है.

कारेंगघर, अहोम राजा का महल

सीबसागर से 28 किलोमीटर दूर सन् 1229 के दौरान अहोम शासन काल के महल के अवशेष हैं जो ईटों ओर पत्थरों से निर्मित हैं.

ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी छोर पर जोगीगोपा गुफा मंदिर है जिनका निर्माण चट्टानों को काटकर कक्ष बनाकर किया गया है. जिनका निर्माण 655 से 900 ईसा पूर्व हुआ था जब असम मेलछा शासनकाल में कामरूप राज्य के अंतर्गत आता था. यहाँ 5 कक्ष बने हुए हैं एवं जो कक्ष सुरक्षित है वो 2.6 मीटर चौड़ा, 1.8 मीटर गहरा एवं इसकी ऊंचाई 1.9 मीटर है एवं इसके सम्मुख एक छोटा बरामदा है.

देवपहर, मदन कामदेव, दाह परबतिया, सूर्य पहर, अंबारी, नुमलीगढ़ देवपहर, सीबसागर, गोलपारा, तलातलघर, हर्षा, राजादौर, धुबरी आदि अनेक पुरातात्विक महत्व के स्थान हैं एवं अनेक स्थानों पर खुदाई में हजारों वर्ष पुरानी सभ्यताओं से जुड़े हुए मंदिर तथा महल आदि के अवशेष मिले हैं.

मणिपुर

महाभारत कालीन प्राचीन मणिपुर, राजकुमारी चित्रांगदा और अर्जुन का बब्रुवाहन आदि के उल्लेख मिलते हैं. महाभारत में योद्धा बब्रुवाहन, अर्जुन और मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा के पुत्र थे. महारथी अर्जुन को राजा चित्रवहाना की पुत्री चित्रांगदा के साथ प्रेम हुआ था. मणिपुर भ्रमण के दौरान अर्जुन ने चित्रांगदा को सतरंगी शिरोइ लिली फूल देकर प्रभावित किया था जो आज भी 'बिष्णुप्रिया मणिपुरी' नाम के सम्प्रदाय की पौराणिक वर्णन में पाए जाते हैं.

सतरंगी शिरोइ लिली

मणिपुर को देश की 'ऑर्किड बास्केट' भी कहा जाता है. यहाँ ऑर्किड पुष्प की 500 प्रजातियां पाई जाती हैं. समुद्र तल से लगभग 5000 फीट की ऊंचाई पर स्थित शिरोइ पहाड़ियों में एक विशेष प्रकार का पुष्प शिरोइ लिली पाया जाता है. शिरोइ लिली का यह फूल पूरे विश्व में केवल मणिपुर में ही पैदा होता है. इस अनोखे और दुर्लभ पुष्प की खोज फ्रैंक किंग्डम वॉर्ड नामक एक अंग्रेज ने 1946 में की थी. यह खास लिली केवल मानसून के महीने में पैदा होता है. इसकी विशेषता यह है कि इसे सूक्ष्मदर्शी से देखने पर इसमें सात रंग दिखाई देते हैं.

कंगला

मणिपुर की राजधानी इम्फाल के मध्य में यह स्थित हैं. कंगला पर अनेक आक्रमण हुए एवं यहाँ के स्मारकों को आक्रमणकारियों ने बहुत नुकसान पहुंचाया. अंग्रेजों ने यहाँ सैनिक छावनी बना दी थी. यहाँ के कुछ स्थान प्रसिद्ध है, जिनमें नुङ्जेंग पोखरी अचौबा, नुङ्गोबी, मंगलेन, हयांग हिरेन, श्री गोविंद जी का मंदिर, कंगला का किला आदि है. मणिपुर के अन्य दर्शनीय स्थान हैं, लंगथाबल, लैंमपोकम केरुम्बा मंदिर, शहीद मीनार, दाल मडोल, टेंगनुपाल, खोंगजोम आदि.

रासमंच बिष्णुपुर

मालाराजा वीर हमबिर ने 1600 ई. में इस मंदिर का निर्माण करवाया जहां रास उत्सव मनाया जाता था. इस उत्सव में आस-पास के सभी मंदिरों की देव-देवताओं की मूर्तियाँ लाई जाती थीं और यहाँ भगवान कृष्ण से जुड़ी विभिन्न लीलाओं का मंचन होता था. रासमंच एक पिरामिड नुमा ईटों की बनी हुई संरचना है, वर्ष 1932 के बाद से यह पुरातात्विक महत्व का स्थान घोषित कर दिया गया है.

महाबली मंदिर

यह मणिपुर में हनुमानजी को समर्पित सबसे बड़ा मंदिर है. यहाँ हनुमानजी मानव के रूप में हैं. उनकी मूर्ति धोती पहने हुए नृत्य करते हुए पुजारी के रूप में है. सर पर बालों का जूड़ा बना हुआ है एवं गले में रुद्राक्ष की माला है. सीधे हाथ में गदा है एवं उनकी लंबी दुम है तथा माथे पर तिलक लगा है. मंदिर का निर्माण 1725 में राजा गरीब नवाज द्वारा करवाया गया था.

हियांगथांग लयरम्बी मंदिर

हियांगथांग लयरम्बी मंदिर इम्फाल जिले में स्थित है, यह देवी हियांगथांग लयरम्बी को समर्पित है जो कि मणिपुर में निवास करने वाली मितेई समुदाय द्वारा पूजी जाती है. यह मंदिर सात मंज़िला है एवं इसमें एक समान आकार के चौकोर दरवाजे लगे हुए हैं. मंदिर के सामने मंडप है. मणिपुर में प्रसिद्ध अन्य दर्शनीय स्थानों में बिष्णुपुर का जोरबंगला जो कि 1655 में रघुनाथ सिंह देव द्वारा बनवाया गया था. सन् 1643 में राजा रघुनाथ सिंह द्वारा पाँच रत्न मंदिर का निर्माण करवाया था. मदन मोहन मंदिर का निर्माण 1694 में राजा अर्जन सिंह देव द्वारा करवाया गया था. राधा कृष्ण को समर्पित लालजी मंदिर का निर्माण बीर सिंह द्वितीय द्वारा 1658 में करवाया गया था. मणिपुर में 16 वीं 17 वीं शताब्दी में अनेक राजाओं द्वारा भगवान श्री कृष्ण को समर्पित अनेक मंदिर हैं.

मेघालय

मेघालय अर्थात मेघों के ऊपर बसा घर या आलय. जिसका नाम इतना सुंदर है, वो प्रदेश कितना सुंदर और अद्भुत होगा. यहाँ 500 वर्ष पुराना नर्तियांग दुर्गा मंदिर है जो कि 51 शक्तिपीठों में से एक है.

मेघालय में चेरापूंजी में पूर्वी ख़ासी हिल्स में नोहक लिकाई जलप्रपात, भारत के सबसे ऊंचे झरनों में से एक है.

मिजोरम

मिजोरम बेहद खूबसूरत और जादुई वातावरण वाला स्थान है. मिजोरम में ईसाई धर्म का प्रभाव अधिक है वहाँ का सबसे प्रसिद्ध स्थान सोलोमन चर्च है, जिसका निर्माण 1991 के बाद हुआ था.

सिक्किम

सिक्किम भारत के पूर्वोत्तर में बसा पर्वतीय राज्य है. बौद्ध भिक्षु रिंगपोचे ने 8वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए सिक्किम का दौरा किया था. लामा लहतसुन चेमपो द्वारा 1705 में गंगटोक से 110 कि.मी. दूर पेल्लिंग के समीप पेमायांगत्से मठ की परिकल्पना करके बनाने की नींव रखी गई थी. यह मठ तिब्बत के नियांगमा निर्देशों का पालन करता है एवं सिक्किम के सभी मठ इन्ही निर्देशों का पालन करते हैं.

रैबडेंत्से में सिक्किम के 1670 से 1814 के मध्य के शकाल की राजधानी के खंडहर मौजूद हैं

नामची मठ - गंगटोक से 80 कि.मी. दूर 4000 फीट की ऊंचाई पर नामची मठ स्थित हैं यहाँ 8 वी शताब्दी के बौद्ध गुरु पदमसंभव की सबसे बड़ी मूर्ति है.

किरतेश्वर मंदिर - भगवान शिव का हजारों वर्ष पुराना मंदिर है.

त्रिपुरा

उत्तरपूर्वी सीमा पर स्थित भारत का सबसे छोटा राज्य है. त्रिपुरा की स्थापना 14वीं शताब्दी में इंडो-मंगोलियन आदिवासी मुखिया द्वारा की गई थी जिसने हिन्दू धर्म अपना लिया था. ऐसा भी कहा जाता है कि ययाति वंश के 39वें राजा त्रिपुर के नाम पर इसका नाम त्रिपुरा पड़ा था. एक मान्यता यह भी है कि देवी त्रिपुर सुंदरी का शक्तिपीठ होने के कारण इसका नाम त्रिपुरा पड़ा.

इसका निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य के शासन काल में 1501 ई. के दौरान करवाया गया था. यह 51 महा शक्तिपीठों में से एक है.

चावीमुरा

अगरतला से 82 कि.मी. दूर गोमती नदी के तट पर देवतमूरा की 90 डिग्री की सीधी पर्वतों की श्रृंखलाओं पर शिव, विष्णु, महिषासुर मर्दिनी, कार्तिकेय आदि की बड़ी-बड़ी तस्वीरें उकेरी हुई हैं जो कि 15वीं एवं 16वीं शताब्दी के मध्य की हैं. सबसे बड़ी तस्वीर माता दुर्गा की है जो कि 20 फीट ऊंची है.

उनकोठी

उनकोठी अर्थात करोड़ में एक कम, यहाँ भगवान शिव की पत्थरों में बनी हुई मूर्तियाँ हैं. जिन्हें 7वीं और 8वीं शताब्दी के दौरान बनाया गया था. हिन्दू मान्यता के अनुसार भगवान शिव सभी देवी देवताओं को लेकर काशी जा रहे थे, रास्ते में इस स्थान पर विश्राम करने रुके थे. भगवान शिव ने सबसे कहा कि प्रात: काशी के लिए रवाना होना है पर भगवान शिव को छोड़कर कोई भी प्रात: नहीं उठे, उस समय भगवान शिव ने सबको पत्थर हो जाने का श्राप दे दिया था.

उन कोठी में दो प्रकार की कलाकृतियाँ हैं, एक तो पत्थरों को काट कर बनाई गई और दूसरी तराश कर बनाई गई. पत्थरों को काट कर बनाई गई तस्वीरों के मध्य में शिव के विशाल मस्तक की एवं विशाल गणेशजी की मूर्ति महत्वपूर्ण है. मध्य में शिव के मस्तक वाली तस्वीर टिश्वर काल भैरव के नाम से प्रसिद्ध है. यह 30 फीट ऊंची है, जिसमें 10 फीट ऊंचा मुकुट है. शिव के एक ओर शेर पर सवार दुर्गा की तस्वीर है एवं दूसरी ओर भी एक स्त्री की तस्वीर है. इसके अतिरिक्त तीन विशाल आधे कीचड़ में फंसे हुए नंदी की मूर्तियाँ हैं.

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के गौरवशाली एंव समृद्ध इतिहास से सही मायने में देश परिचित ही नहीं है. यह छोटे-छोटे राज्य अपने में प्राकृतिक छटा के साथ हिन्दू धर्म से जुड़ी अनेक निशानियों को अपने में समेटे हुए हैं.

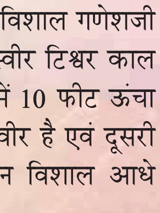

रश्मि बाला गुप्ता
क्षे.का., इंदौर

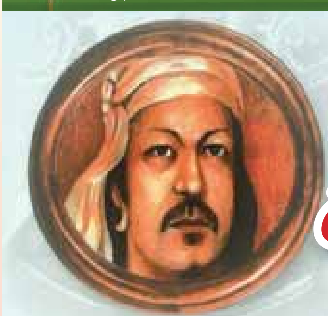

महान योद्धा लचित बोरफुकन

बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (नेशनल डिफेंस एकेडमी) से पास-आउट होने वाले प्रत्येक कोर्स के बेस्ट कैडेट को एक गोल्ड मेडल दिया जाता है और उस मेडल का नाम होता है 'लचित बोरफुकन'. पर कौन हैं यह 'लचित बोरफुकन'? शायद कुछ इतिहासकारों ने इतिहास के पन्नों से इस नाम को गायब कर हम तक पहुँचने ही नहीं दिया.

क्या आपने कभी सोचा है कि पूरे उत्तर भारत पर अत्याचार करने वाले मुग़ल शासक कभी बंगाल के आगे पूर्वोत्तर भारत पर कब्ज़ा क्यों नहीं कर सके? तो आइये हम आपको इस लेख के माध्यम से माँ भारती के वीर सपूत और महान योद्धा लचित बोरफुकन के बारे में बताते हैं.

बात है सत्रहवीं शताब्दी के मध्य की जब अहोम राज्य (आज का असम) के राजा चक्रध्वज सिंह थे और दिल्ली की मुग़ल शासक औरंगज़ेब था. राजा चक्रध्वज सिंह के सेनापति परमवीर योद्धा लचित बोरफुकन थे. वर्ष 1667 में लचित बोरफुकन ने गौहाटी को दिल्ली के मुग़ल शासन से आज़ाद करा लिया था. इस उपलब्धि पर राजा ने लचित को सोने की मूठ वाली एक तलवार उपहारस्वरूप प्रदान की थी. परंतु इस हार से बौखलाया औरंगज़ेब जल्द से जल्द पूरे पूर्वी भारत पर कब्ज़ा कर लेना चाहता था.

औरंगज़ेब का पूरे भारत पर राज करने का सपना बिना पूर्वी भारत पर कब्ज़ा जमाये अधूरा ही था. इसी महत्वाकांक्षा के कारण औरंगज़ेब ने अहोम राज्य से लड़ने के लिए एक विशाल सेना भेजी. इस सेना का नेतृत्व राजपूत राजा राजाराम सिंह कर रहा था. औरंगज़ेब के साम्राज्य को बढ़ाने के लिए राजाराम सिंह अपने साथ 4000 महाकौशल लड़ाके, 30,000 पैदल सेना, 21 राजपूत सेनापतियों का दल, 18,000 घुड़सवार सैनिक, 2,000 धनुषधारी सैनिक और 40 पानी की जहाजों की विशाल सेना लेकर अहोम राज्य पर आक्रमण करने चल पड़ा.

वर्ष 1671 में राजाराम सिंह ने जब विशाल मुग़ल सेना के साथ गौहाटी पर आक्रमण किया तो सराईघाट नामक स्थान पर उसका सामना वीर सेनापति लचित बोरफुकन के नेतृत्व वाली अहोम सेना से हुआ. ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे उन्होंने मुग़ल सेना का रास्ता रोक दिया. घमासान युद्ध में अहोम सेना का बहुत नुकसान हुआ और उसके 10,000 सैनिक मारे गए. वीर लचित बोरफुकन भी बुरी तरह जख्मी हो गए. राजाराम सिंह ने अहोम के राजा को आत्मसमर्पण के लिए कहा, जिसे राजा चक्रध्वज ने 'आखरीजीवित अहोमी भी मुग़ल सेना से लड़ेगा' कहकर प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया.

लचित बोरफुकन जैसे जांबाज सेनापति के घायल होने से अहोम सेना मायूस थी. परंतु अगले दिन ही लचित बोरफुकन ने राजा को कहा कि जब मेरा देश आक्रांताओं के खतरे से जूझ रहा है, जब हमारी संस्कृति, मान और सम्मान खतरे में है तो मैं आराम कैसे कर सकता हूँ? मैं युद्ध भूमि से लाचार होकर घर कैसे जा सकता हूँ? इसके बाद ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे सराईघाट पर वो ऐतिहासिक युद्ध हुआ, जिसमे लचित बोरफुकन ने सीमित संसाधनों के होते हुए भी मुग़ल सेना को रौंद डाला. अनेकों मुग़ल सेनापति मारे गए और मुग़ल सेना भाग खड़ी हुई. लचित बोरफुकन की सेना ने मुग़ल सेना को अहोम राज्य की सीमाओं से काफी दूर खदेड़ दिया. इस युद्ध के बाद कभी मुग़ल सेना की पूर्वोत्तर पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हुई. यह क्षेत्र कभी गुलाम नहीं बना. इस ऐतिहासिक विजय के करीब एक साल बाद उस युद्ध में अत्यधिक घायल होने के कारण माँ भारती का यह वीर लाड़ला उनके आँचल में सदैव के लिए सो गया.

आज लचित बोरफुकन का कोई चित्र उपलब्ध नहीं है लेकिन एक पुराना इतिवृत्त उनका वर्णन इस प्रकार करता है: 'उनका मुख चौड़ा है और पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह दिखाई देता है. कोई भी उनके चेहरे की ओर आँख उठाकर नहीं देख सकता.' असम के जोरहाट शहर में स्थित उनका स्मारक आज भी उनके वीरता की गाथा सुनाता है.

कृष्णा कुमार यादव
क्षे.म.प्र.का, बेंगलूरु

विवाह-रीतिरिवाज़ एवं परंपराएँ

भारत विविधताओं का देश है, जहां अनेकता में एकता हमें कदम-कदम पर देखने को मिलती है. हर राज्य की, अपनी अलग भाषा और उसमें भी हर क्षेत्र की अलग क्षेत्रीय भाषा, सबके अपने अलग त्योहार, परंपरा, रीति रिवाज, संस्कृति और जीवन शैली होते हुए भी हम सब एक सूत्र में बंधे हुए हैं. विवाह किसी के भी जीवन का बहुत अहम हिस्सा होता है, जिसके लिए हर व्यक्ति के सपने होते हैं और इन सपनों में मिठास घोलती हैं परम्पराएँ, उसके अपने क्षेत्रीय रीति रिवाज. जैसे-जैसे हर राज्य में रीति-रिवाज और परम्पराओं में बदलाव देखने को मिलता है, उसी तरह हर राज्य में विवाह प्रणाली भी अलग अलग देखने को मिलती है. आइये, जानते हैं उत्तरपूर्वी राज्यों में होने वाले विवाहों की परम्पराओं और रीति रिवाज़ों के बारे में.

असम: असम में विवाह समारोह सरल किन्तु आकर्षक रूप से मनाया जाता है. शादी के दौरान गाये जाने वाले गीत यहाँ की विशेषता है, जिन्हे 'बिया नाम' भी कहा जाता है. यहाँ विवाह समारोह का शुभारंभ लड़का व लड़की के स्नान से किया जाता है. लड़का व लड़की की माता पास की किसी नदी से पवित्र जल लाती है, जिससे लड़का व लड़की को नहलाया जाता है. यहाँ विवाह के पहले ही रिसेप्शन का आयोजन किया जाता है, जिसमें मछली और मांस मुख्य व्यंजन के रूप में परोसे जाते हैं.

जैसे ही दूल्हा अपने ससुराल पहुंचता है, दूल्हन के पारिवारिक सदस्य हास्य योग्य मज़ेदार गतिविधियां करते हैं. यहाँ शादी के लिए लड़के वाले लड़की के घरवालों को भारी रकम देते हैं, तभी बारातियों को दुल्हन के घर में प्रवेश दिया जाता है.

दूल्हन की माँ अपने होने वाले दामाद का स्वागत करती है, दूल्हन की छोटी बहन अपने जीजाजी के पैर धुलाती है. एक ओर जहां दूल्हा सिल्क के कपड़े से बनी धोती कुर्ता और कंधों पर शॉल पहन कर दुल्हन के भाई की गोद में शादी हॉल तक आता है वहीं दूसरी ओर दुल्हन को घी, दही, शक्कर, शहद और कच्चे दूध से बना पंचामृत दे कर मामा के कंधों पर बिठाकर शादी हाल में लाया जाता है.

पवित्र अग्नि के सम्मुख मंत्रोपचार पूजन करते हुये, दूल्हा-दुल्हन एक दूसरे को पुष्पमाला पहनाते हैं और एक दूसरे का साथ निभाने के लिए वचन देते हैं. शंखध्वनि के बीच दूल्हा-दुल्हन के मांग में सिंदूर भरता है. इसी के साथ विवाह सम्पन्न होता है और सभी परिवारजन नव दंपत्ति को आशीर्वाद प्रदान करते हैं.

मेघालय: मेघालय भारत का ऐसा राज्य है, जहां विवाह से जुड़े कई रिवाज देश भर से अलग हैं. एक ओर जहां पूरा देश पितृसत्तात्मक प्रणाली को महत्ता देता है, वहीं दूसरी ओर मेघालय में मातृसत्ता को महत्व दिया जाता है. यहाँ महिला व पुरुष को स्वेच्छा से अपना जीवनसाथी चुनने की आज़ादी होती है. यहाँ एक ही वंश के लोगों के बीच विवाह नहीं किया जाता. संबंध पक्का करने के लिए लड़का-लड़की एक दूसरे को अंगूठी पहनाते हैं या सुपारी का लेन देन करके भी रिश्ता तय किया जाता है.

मातृसत्तात्मक प्रणाली होने के कारण विवाह पश्चात् दूल्हा अपना घर छोड़कर दुल्हन के घर जाता है और वहीं जीवनयापन करता है. दूल्हा अपना उपनाम भी बदलकर, दुल्हन के उपनाम को अपनाता है. यहाँ स्त्री को ही घर का मुखिया व संरक्षक माना जाता है. ख़ासी और गारो यहाँ मुख्य रूप से पायी जाने वाली प्रजातियाँ हैं. इन प्रजातियों में मातृवंश की अहम भूमिका होने के कारण, महिलाओं को बहुत आदर और सम्मान दिया जाता है. निश्चय ही यह बात हमारे देश के अन्य भाग के लोगों के लिए प्रेरणात्मक है.

त्रिपुरा : उत्तरपूर्वी राज्यों का सबसे छोटा राज्य जहां रीति रिवाज आदि में विविधता देखने को मिलती है.

पारंपारिक प्रणाली से ही विवाह किया जाता है. लड़का व लड़की की शादी की बात, दोनों के माता-पिता एक दलाल के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं. इस दलाल को यहां 'रायबाई' के नाम से बुलाते हैं. यहाँ रायबाई के साथ लड़के के माता पिता लड़की वालों के घर जाते हैं. अगर कोई अपशगुन हो, तो उस दिन लड़की के घर नहीं जाना चाहिए.

जब लड़के के घरवाले लड़की को पसंद कर लेते हैं, तो लड़की वाले पैसे, गहने व अन्य वस्तुओं के रूप में दहेज की मांग करते हैं. जब लड़के वालों को दहेज की मांग स्वीकार्य हो, तब 'रायबाई' द्वारा शादी की तारीख पक्की की जाती है. इसे मंगलाचरण या कोकसंगमा भी कहते हैं. मंगलाचरण के दिन लड़के वाले लड़की के घर आते हैं. वहाँ सब साथ बैठकर एक थाली में रुई, दूर्वा, तांबे का सिक्का, तिल और मिट्टी रख कर 'दांगदुआ' नाम का रिवाज पूर्ण करते हैं.

इसके बाद दोनों पक्ष के लोग मीट और राइस बियर का सेवन करते हैं. आशीर्वाद स्वरूप गहने, पैसे आदि थाली में रखकर सभी लोग लड़की को आशीर्वाद प्रदान करते हैं. भोजन के बाद लड़की सभी मेहमानों के हाथ धुलाती है.

शादी के एक दिन पूर्व दोनों पक्ष की महिलाएं अपने-अपने घरों में पान व सुपारी काटते हैं और अपने मुख से 'उल्लू' की ध्वनि करते हैं. इस रस्म को 'क्वाइतानों' कहा जाता है. शादी के दिन सुबह 'लांपरा वथोप' और

'तुइसांग्रमा' नामक देवताओं की पूजा की जाती है. लड़के वाले गाजे-बाजे के साथ पालकी लेकर लड़की के घर पहुँचते हैं. सभी रिवाज पूर्ण होने के बाद लड़की को पालकी में ससुराल लाया जाता है. ऐसा मानते हैं कि लड़की की माँ का शादी और विदाई के समय उपस्थित होना शुभ नहीं होता.

लड़के के घर पहुँचकर दोनों एक दूसरे को पुष्पमाला पहनाते हैं और लड़की अपनी पहली रसोई में चावल बनाती है, जो कि नए बर्तन में ही बनाए जाते हैं.

मणिपुरः मणिपुरी शादी में कई रिवाज हैं. मणिपुरी लोग अपने समुदाय में संबंध बनाने को प्राथमिकता देते हैं किन्तु अन्य समुदाय में विवाह करने के खिलाफ भी नहीं होते हैं. वहाँ के नव वर्ष पर होने वाले महोत्सव में कई युवा लड़के लड़कियां मिलते हैं और शादी की बात आगे बढ़ाई जाती है.

मणिपुरी शादी की खास बात वहाँ के परिधान हैं, जिसमें दुल्हन एक रंग बिरंगी स्कर्ट पहनती है जिसे 'रासलीला' भी कहते हैं. लाल काले रंग की पहने जाने वाली लुंगी को 'पिंधन' और ब्लाउज़ को 'सीलम' कहा जाता है. दूल्हा धोती, सफ़ेद कुर्ते के साथ सर पर साफा बांधला है.

पहली बार लड़की और लड़के के घरवाले जब आपस में मिलते हैं तब कुंडली मिलान किया जाता है और विवाह की तिथि निश्चित की जाती है . इसे 'हिनाबा' कहते हैं. इसके बाद लड़की वाले लड़के के घर जाते हैं. शादी के लिए हरी झंड़ी देने की रस्म को 'यथांग तथांग' कहते हैं. लड़के वाले खानपान की वस्तुएँ लेकर लड़की के घर आते हैं और 'हैजापोत' नाम के समारोह को सम्पन्न किया जाता है, जिसमें सगाई की रस्म पूर्ण की जाती है.

विवाह के लिए लड़के वाले जब लड़की के घर आते हैं, तो महिला द्वारा उनका स्वागत किया जाता है और सबको तुलसी के पौधे के आस-पास बिठाया जाता है. शादी भी तुलसी के पौधे के पास बैठकर सम्पन्न की जाती है. लड़का लड़की एक दूसरे को पुष्पमाला पहनाते हैं, तुलसी के सात फेरे लेते हैं. महिलाएं पानी में 'ताकी' नामक दो मछलियाँ छोड़ती हैं, जिन्हें दूल्हादुल्हन का स्वरूप माना जाता है. सभी को स्वादिष्ट भोजन करवाया जाता है. शादी के 5 दिन बाद 'मंगनी चकोना' नामक रिवाज होता है, जिसमें दूल्हा दुल्हन दोनों दुल्हन के घर आकर भोजन ग्रहण करते हैं.

मिज़ोरमः मिज़ोरम के लोगों को 'मिजो' के नाम से जाना जाता है. मिज़ोरम में ईसाई धर्म को मानने वाले लोग सर्वाधिक संख्या में होते हैं. यहाँ की विशिष्टता यह है कि यहाँ लड़का अपनी पसंद की लड़की के घर जाता है और लड़की के लिए उसके परिजनों से एक कीमत तय करता है. लड़के वालों द्वारा लड़की की कीमत अदा करने के बाद ही विवाहोत्सव मनाया जाता है.

मिजा लोग बहुत ही खुले विचारों के होते हैं, वे लड़का लड़की को एक दूसरे को जानने समझने का मौका देते हैं. उसके बाद ही सगाई की जाती है. अधिकतर शादियाँ गिरिजाघर में की जाती हैं. यहाँ शादी में दुल्हन दूल्हे को एक पारंपरिक शॉल देती है, जो लड़के की मृत्यु के पश्चात उसको लपेट कर दफनाया जाता है.

यहां की दुल्हन सफ़ेद गाउन पहनती है और उसके हाथ में फूलों का गुलदस्ता होता है. दूल्हा शादी के लिए काला सूट पहनकर तैयार होता है.

अरुणाचल प्रदेश : अरुणाचल प्रदेश में विशेषतः दो प्रकार की विवाह प्रणाली प्रचलन में है.

'आ लांग आ' नामक वैवाहिक पद्धति द्वारा विवाह होने पर दुल्हन का दूल्हे के घर में शक्कर और फूलों द्वारा स्वागत किया जाता है. दुल्हन को 'फा' नामक 'स्मोक्ड मछली' और चावल खिलाया जाता है . लड़के के माता पिता दुल्हन को अंडे भी देते हैं.

यहाँ भी लड़कियों को बहुत महत्त्व दिया जाता है, जिसके कारण लड़के वालों द्वारा लड़की की कीमत अदा करने के बाद ही शादी करने की प्रथा है.

'थोक नो चाय' नामक विवाह प्रणाली से विवाह होने पर लड़का लड़की के घर आ कर उसके घरवालों को मनाता है और यह समझाने की कोशिश करता है कि वह उनकी बेटी के लिए उपयुक्त है. लड़की वालों की तरफ से हरी झंडी मिलने पर लड़के वाले अपने चार-छः दिन की व्यवस्था करके आते हैं और गाँव के पास की पहाड़ी से 'हू' की ध्वनि करते हैं और अपने पहुँचने का संदेश भेजते हैं. लड़की वाले उनके लिए भोजन की व्यवस्था करते हैं. गाने बजाए जाते हैं. शादी के दो दिन बाद अपनी खुशी का इज़हार करने के लिए होली भी मनाने की परंपरा है.

नागालैंड : नागालैंड के लोगों को 'नागा' भी कहा जाता है. नागालैंड में कुछ असामान्य परम्पराएँ मानी जाती हैं. एक ही वंश के लड़का-लड़की की शादी को अच्छा नहीं माना जाता है.

'अंगामी' समुदाय के लोग पक्षी, विशेषतः मुर्गे को मारकर लड़की का मिलान करते हैं. अगर मरने के बाद मुर्गा किसी अशुभ दिशा में गिरता है तो विवाह वहीं रोक दिया जाता है.

'मोंगसेन' समुदाय में लड़का लड़की की सगाई करके व्यापार के लिए 20 दिन की यात्रा पर भेज दिया जाता है. अगर यह यात्रा लाभदायक निकले तो शादी पक्की कर दी जाती है अन्यथा उन्हें एक दूसरे के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जाता है.

अंगामी लोग एक पत्नी के साथ ही उम्र भर निर्वाह करते हैं जबकि सेमा लोग एक से अधिक विवाह करते हैं. उनमें से किसी एक पत्नी को मुख्य पत्नी का दर्जा दिया जाता है. 'चांग' समुदाय में चार से छः पत्नियाँ भी रख सकते हैं और 'लोथा' समुदाय में अमीर व्यक्ति दो शादियाँ कर सकता है.

कुछ समुदायों में विवाह पूर्व के संबंधों को भी मान्यता दी जाती है जबकि अन्य समुदाय में विवाह पूर्व संबंध निषेध हैं.

जैसा कि हमने देखा हर राज्य की अपनी अलग परंपरा है जो अपने आप में विशेष हैं. जब बात विवाह की हो तो ये रीति-रिवाज, परम्पराएँ और भी खास हो जाती हैं, जो हमारे साथ अपनी मीठी यादें लिए चलती हैं.

ऋचा कौशल
क्षे.का., इंदौर

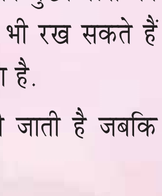

पूर्वोत्तर भारत के उत्सव एवं त्योहार

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक धरोहर बहुत संपन्न है. यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से जहां विभिन्नता का क्षेत्र है वहीं सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से भी अनोखा है. रहन-सहन, रस्म रिवाज, खान-पान, पर्व-त्योहार सभी में यह क्षेत्र देश के अन्य भागों से अलग है. विभिन्न जातियों और विभिन्न नस्लों के लोग इस क्षेत्र में समय-समय पर आकर बसे हैं और अब वे यहीं के होकर रह गए हैं. यहाँ की मूल जाति मंगोल नस्ल की है. कुछ तिब्बत के दक्षिण भाग से आए और कुछ अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी भाग भूटान से, दक्षिणी भाग से चीन और थाइलैंड से पूर्वोत्तर के इन क्षेत्रों में आये. इन मंगोलियन लोगों के साथ यहाँ द्रविड़ और आर्य जाति के लोग भी मिलते हैं, जो यहाँ नौकरी और व्यापार करते हैं. इन दोनों के रहन-सहन में भिन्नता है पर काफी समय से एक साथ रहने के कारण दोनों जतियों में बहुत समानता देखने को मिलती है.

असम

असम नाम संस्कृत भाषा से उद्भूत है जिसका अर्थ है जो समतल नहीं है अर्थात असमतल है. यहाँ बोडो जन-समूह, मिसिड जन समूह, गोरो कार्षी, खमनी आदि जन-जातियाँ विशेष हैं. असम में सभ्यता और परंपरा काफी समृद्ध रही है. यहाँ का महत्वपूर्ण एवं प्राचीनतम उत्सव बिहू है. जो वर्ष में तीन बार मनाया जाता है.

बोहाग बिहू - बैसाख अप्रैल के मध्य में,

माघ बिहू - जनवरी के मध्य में,

काति बिहू - अक्तूबर के मध्य में

बोहाग बिहू दरअसल फसल बुवाई का प्रतीक है और नए वर्ष के शुभारंभ में होता है. माघ फसल कटाई का प्रतीक है और काति बिहू शरद ऋतु का एक पर्व है.

मणिपुर-

मणिपुर भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक छोटा सा राज्य है. यहाँ की प्रमुख जनजाति 'मैतेई' है, इसके अलावा अंगामी, चीरू, पुरूम, रलते इत्यादि भी हैं. मणिपुर का प्रमुख त्योहार 'लाइहारोबा' है. यह एक लोकनृत्य भी है जो मुख्यत: मार्च और अप्रैल के महीने में किया जाता है. पूर्वजों की याद में इस नृत्य की प्रस्तुति की जाती है. 'पुड़ चोलम' लोकनृत्य में बीस कलाकार राधा-कृष्ण के प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं. यहाँ पर लगभग हर समय उत्सव का महौल रहता है. गान-नागी, इमोइनु, लुई नगई नी, ईद उल जुहा आदि पर्व यहाँ मनाते हैं.

त्रिपुरा-

भारत के पूर्व में बसे इस प्रांत में सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ विभिन्न जनजातियाँ निवास करती हैं. इनमें त्रिपुरी, देव वर्मा, रियाड़, जामातिया, कुकी, लुसाइ. त्रिपुरा में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, मुख्य रूप से बँगला, त्रिपुरी, जामतिया, रियाड़ चकमा इत्यादि. 'सड़सई' त्रिपुरा का विशेष पर्व है. इसमें 'भाग' समुदाय के युवक-युवतियाँ सिर के ऊपर पवित्र कल्पतरु (विश ईल्डिंग ट्री) रखकर घर-घर जाते हैं. समुदाय के वयोवृद्ध मांगलिक घड़े में रखे जल से स्नान करते हैं. इसमें नारियल का पानी घर पर छिड़का जाता है.

मिजोरम-

मिज़ो का शाब्दिक अर्थ है 'पर्वत पुरुष'. मिजोरम तीन शब्दों से निर्मित है मिजोरम अर्थात पहाड़, आदमा, देश अर्थात पहाड़ी लोगों का देश. 'लुसाई' जनजाति मिज़ो की प्रमुख जनजाति है. यहाँ प्रमुख रूप से तीन त्योहार मनाएँ जाते हैं-'चप्रचारकृत', 'मिमकुत' और 'थापलवाङकुत'. यहाँ त्योहारों के लिए मिज़ो शब्द 'कुत' है. 'पोवलकुत' उत्सव धान

की कटाई के बाद दिसंबर माह में 'कटाई' उत्सव नाम से मनाया जाता है. इस प्रकार प्रकृति के प्रति इनकी अपार श्रद्धा दिखाई देती है.

नागालैंड-

इस राज्य का अधिकांश क्षेत्र पहाड़ी है. इसकी सबसे ऊंची पहाड़ी 'सरमाती' है. जिसकी ऊंचाई 3840 मीटर है और यह पर्वत श्रृंखला नागालैंड और म्यांमार के बीच एक प्राकृतिक सीमा रेखा खींच देती है. इस राज्य में जनजातियाँ अधिक हैं. कुल आबादी में लगभग 90% जनजातियाँ हैं. नागालैंड की मूल जनजातियों में- आओ, रियाड़, कोन्याक, सेमा, अंगामि, लोथा, साउथम, फ़ोम, रेडम इत्यादि है. ये लोग पहाड़ी में झूम खेती करते हैं. झूम खेती के साथ-साथ नीलदार खेती भी करते हैं. नागालैंड वासियों को इतिहासकार नागों का वंशज मानते हैं. इन नागा जातियों के अधिकतर पर्व-त्योहार कृषि संबंधी कार्यों से संबन्धित हैं. पर्व के साथ गीत गाना अनिवार्य है. वैसे नागालैंड को उत्सवों की धरती कहा जाता है. 'लोथा' यहाँ का मुख्य उत्सव है यह 'नागा' जनजाति द्वारा मनाया जाता है. यह उत्सव धान की कटाई के बाद मनाया जाता है. 'अंगामी-सेक्रेन्यी' अंगामी नागा जनजाति के लोग इसे फरवरी माह में दस दिन तक मनाते हैं. इसमें अपने आप को पवित्र करते हैं. 'हार्नबील' फेस्टिवल अर्थात धनेश पक्षी त्योहार नागालैंड की सभी जनजातियों में पाई जाने वाली विविधताओं तथा उनकी वैभवशाली पारंपरिक तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाला उत्सव है.

मेघालय-

मेघालय को भारत का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है. मेघालय के निवासी मंगोल मूल के हैं. यहाँ ख़ासी, गारों, जयंतिया, जनजातियाँ प्रमुख हैं. इन जनजतियों में सांस्कृतिक विरासत, लोकगीत, लोककला, लोकनृत्य और लोक संस्कृति के रूप व्यक्त होते हैं. मेघालय में पाँच दिन तक मनाया जाने वाला 'पाम्ब्लेंग-नोंग्क्रेम' खासियों का एक प्रमुख धार्मिक त्योहार है. यह 'नोंग्क्रेम' नृत्य नाम से भी प्रसिद्ध है. यह उत्सव पूर्वजों के प्रति सम्मान तथा राज्य और धर्म के संस्थापकों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है. 'शाद सूके मिंसिम', खासियो का एक महत्वपूर्ण पर्व है. यह पर्व हर वर्ष अप्रैल के दूसरे सप्ताह में शिलांग में मनाया जाता है. 'बेहदडेनखलाम' जयंतिया आदिवासियों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है. यह आम तौर पर जुलाई के महीने में जयंतिया पहाड़ियों के जोवाई कस्बे में मनाया जाता है.

अरुणाचल प्रदेश -

अरुणाचल प्रदेश में सौ से अधिक जनजातियाँ हैं. अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में - मेनपा, मिजी, अका, शेरदुकपेन, न्येसी, अपतानी, तागिन आदि. अरुणाचल प्रदेश का प्रचलित प्रमुख त्योहार 'लोसार' है जो एक सप्ताह तक चलता है. इस उत्सव के धार्मिक रीति-रिवाजों को बौद्ध पंडित (लामा) द्वारा किया जाता है. लोसार को समूहिक रूप से मनाने का एक प्रमुख कारण यह है कि उत्सव के रूप में संस्कृति को अगली पीढ़ी तक संरक्षित रखा जाए. इसके अलावा कुछ अन्य पारंपरिक समारोह भी हैं जैसे - ल्हाबसंगा, चेरटन, फांगले, बोरटन इत्यादि .

सिक्किम-

यह भारत का महत्वपूर्ण राज्य है. इस राज्य की उत्तर दिशा में चीन, दक्षिण में पश्चिम बंगाल, पूर्व में भूटान तथा पश्चिम में नेपाल स्थित है. भारत की संसद ने संवैधानिक तौर पर 26 अप्रैल, 1975 को सिक्किम को अपना राज्य घोषित किया.

धर्म संस्कृति, भाषा सभी में विभिन्नता के बावजूद भी सिक्किम में लेप्चा, भूटिया, नेपाली जाति में शामिल सभी जातियाँ मिलजुल कर एक नई मिली जुली संस्कृति का निर्माण करती है. 'घांटू' सिक्किम के गुरुड समुदाय का खास नृत्य है. दिवाली तथा धार्मिक उत्सवों में इसका आयोजन होता है.

इस प्रकार पूर्वोत्तर भारत की एक सुंदर छवि देखते ही बनती है. अपनी अद्भुत कलाओं, पर्वों के कारण इसकी ओर कोई आकर्षित हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है. इन सभी स्थानीय पर्वों के साथ-साथ देश के बाकी हिस्सों में जिसे राष्ट्रीय पर्व कहा जाता है उसे भी मनाया जाता है.

कांबले एस बी
क्षे. का. विजयवाड़ा

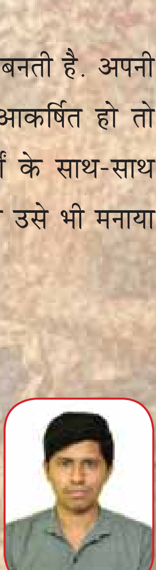

बिहू नृत्य

बिहू असम का लोक नृत्य है जो बिहू त्योहार से संबंधित है. खुशी के इस नृत्य को युवा पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया जाता है जिसकी विशेषता फुर्तीली नृत्य मुद्राएँ तथा हाथों की तीव्र गति है. नर्तक पारंपरिक रंगीन असमिया परिधान पहनते हैं.

असम में तीन बिहू मनाये जाते हैं, बोहाग (बैसाख-अप्रैल के मध्य में), माघ (जनवरी के मध्य में) और काती (कार्तिक-अक्टूबर के मध्य में). तीनों उत्सवों में सबसे आकर्षक, वसंत ऋतु का 'बोहाग बिहू' अथवा 'रंगाली बिहू' होता है जो अप्रैल में मनाया जाता है, जिससे कृषि ऋतु का प्रारम्भ होता है. बिहू का आनंद सभी लेते हैं. बिहू समूह नृत्य है जिसमें पुरुष और महिलाएं साथ-साथ नृत्य करते हैं. यह नृत्य पारंपरिक बिहु संगीत के साथ पेश किया जाता है.

सबसे महत्वपूर्ण ढोलकिये (ढुलिया) होते हैं, जो ढोल बजाते हैं. आम तौर पर एक से अधिक ढुलिया प्रदर्शन करते हैं और अलग-अलग चरणों में अलग-अलग ताल बजाते हैं. इस नृत्य में प्रयुक्त होनेवाले कुछ अन्य वाद्य यंत्र हैं ताला-मंजीरा, गोगोना-बाँस से बनी बांसुरी और बाँस का वाद्य यंत्र, टोका- बाँस का टुनटुना जुटुली-मिटट्ी की सीटी. नृत्य के साथ गाये जाने वाले बिहू गीत पीढ़ियों से हस्तांतरित होकर आते हैं तथा असमिया नव वर्ष के स्वागत से ले कर किसान का दैनिक जीवन, असम पर आक्रमण के ऐतिहासिक सन्दर्भों से लेकर व्यंग्यपूर्ण सामयिक, सामाजिक व राजनीतिक टिप्पणी तक इसके विषय विस्तृत हैं.

सुश्री प्रभा एक्का
क्षे.का., गुवाहाटी

पूर्वोत्तर की नदियाँ

पूर्वोत्तर भारत कहने से तात्पर्य भारत के पूर्वी क्षेत्र से है जिसमें अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा आते हैं. इन आठ राज्यों को प्रकृति का प्रचुर वरदान प्राप्त है. प्राकृतिक संपदा से भरपूर इन राज्यों में सांस्कृतिक सम्पन्नता भी खूब है. भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में आपदाएँ आती रहती है. मानसून के दौरान भू-स्खलन से काफी दिक्कतें आती है, ऐसे में जल परिवहन ही एकमात्र रास्ता बचता है. देश के अन्य हिस्सों से माल परिवहन का एकमात्र साधन नदियाँ ही होती हैं. पूर्वोत्तर भारत में कई छोटी-बड़ी नदियाँ हैं, जिनकी कुल लम्बाई 4191 कि.मी. है. इनमें कई ऐसी है जिनका नौवहन में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है. ये नदियाँ आदिकाल से पूर्वोत्तर की जीवन रेखा रहीं हैं. इस क्षेत्र में राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 धीरे-धीरे विकास की नयी गाथा लिख रहा है. असम में ब्रह्मपुत्र नदी, सादिया और धुबरी के मध्य करीब 891 कि.मी. के लम्बे दायरे में इस राष्ट्रीय जलमार्ग का विस्तार है. पूर्वोत्तर में बहने वाली कुछ महत्वपूर्ण नदियाँ निम्न है-

ब्रह्मपुत्र नदी: ब्रह्मपुत्र का उद्गम हिमालय के उत्तर में तिब्बत में स्थित मानसरोवर झील के निकट से होता है. तिब्बत से बहते हुए यह नदी भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है. अरुणाचल में इसे दिहांग कहा जाता है. प्राय: भारतीय नदियों के नाम स्त्रीलिंग में होते हैं पर ब्रह्मपुत्र एक अपवाद है. संस्कृत में ब्रह्मपुत्र का शाब्दिक अर्थ ब्रह्मा का पुत्र होता है. इस 891 कि.मी. लम्बी नदी को 26 दिसंबर, 1988 को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया था. इसका प्रबंधन भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के अधीन है. असम में यह नदी काफी चौड़ी हो जाती है और कहीं-कहीं तो इसकी चौड़ाई 10 कि.मी. तक है. डिब्रूगढ़ तथा लखीमपुर जिले के बीच नदी दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है. असम में ही नदी की दोनों शाखाएं मिलकर मजुली द्वीप बनाती है जो दुनिया का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है. असम में नदी को प्राय: ब्रह्मपुत्र नाम से ही बुलाते हैं, पर बोड़ो लोग इसे भुल्लम-बुथुर भी कहते हैं जिसका अर्थ है कल-कल की आवाज निकालना.

दिबांग नदी: यह नदी अरुणाचल प्रदेश के उपरी दिबांग घाटी जिले में भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित क्या दर्रे के समीप उत्पन्न होती है. अरुणाचल प्रदेश के उपरी दिबांग घाटी जिले व निचली दिबांग घाटी जिले पर इसका जलसंभर विस्तृत है. अपने उपरी भाग में यह मिश्मी पहाड़ियों से होती हुई निज़ामघाट के मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है. निज़ामघाट और सदिया के बीच यह काफ़ी ऊंचाई से नीचे आती है और कई धाराओं में बट जाती है. यहाँ इसकी चौड़ाई 4 से 9 कि.मी. के बीच है और लगातार मार्ग परिवर्तन से यहाँ की भूमि पर बाढ़ आती रहती है. 115 कि.मी. के कुल मार्ग को तय करके यह लोहित नदी में विलय हो जाती है.

लोहित नदी: यह नदी भारत के अरुणाचल प्रदेश और असम में बहने वाली एक नदी है. यह ब्रह्मपुत्र नदी की सहायक नदी है. लोहित नदी पूर्वी तिब्बत के ज़याल छू पर्वत श्रेणी से निकलती है और अरुणाचल प्रदेश में 200 कि.मी. तक तूफानी वेग से बहने के बाद असम के मैदानी इलाकों में आ जाती है. खून की नदी के नाम से जानी जाने वाली यह नदी तूफानी और अशांत है और इसका यह नाम आंशिक रूप से लाल मिट्टी के कारण पड़ा है. यह मिश्मी पर्वतमाला से बहती हुई ब्रह्मपुत्र घाटी के मुहाने ब्रह्मपुत्र नदी (अरुणाचल प्रदेश में जिसे सियांग नदी के नाम से जाना जाता है) में विलय हो जाती है.

सुबनसिरी नदी : भारत के असम व अरुणाचल प्रदेश तथा तिब्बत में बहने वाली यह नदी ब्रह्मपुत्र नदी की सबसे बड़ी उपनदी है. यह तिब्बत में हिमालय से आरम्भ होती है और पूर्व व दक्षिणपूर्व दिशाओं में बहती हुई भारत में प्रवेश करती है, जहाँ यह असम के लखीमपुर जिले में ब्रह्मपुत्र से संगम करती है.

उम्नागोत नदी: यह नदी भारत-बांग्लादेश सीमा के पास पूर्वी जयंतिया हिल्स जिले के एक छोटे लेकिन व्यस्त कस्बे दावकी के बीच से बहती है. मेघालय की इस नदी को भारत की सबसे साफ नदी कहा जाता है. यह . कस्बा राजधानी शिलांग से मात्र 95 कि.मी. दूर है. उम्नागोत नदी आस-पास के क्षेत्र के मछुआरों के लिए मछली पकड़ने की एक प्रमुख जगह है. इस नदी का पानी इतना साफ है कि लगता है जैसे नाव हवा में लटकी हुई है. स्थानीय लोगों के लिए यह नदी जीविका का प्रमुख साधन है. मछुआरे मछली पकड़कर अपना जीवन यापन करते है.

इम्फाल नदी: भारत के मणिपुर राज्य से बहने वाली प्रमुख नदी है. यह सेनापति जिले के कारोंग पहाड़ियों से निकलती है. यह मणिपुर नदी की सहायक नदी है और थौबल जिले में उससे मिलती है. मणिपुर में पहाड़ियों के नीचे बहने वाली इस छोटी सी नदी की लंबाई 58 कि.मी. है.

सुर्मा नदी: यह नदी असम राज्य में बहने वाली एक मुख्य नदी है. मणिपुर की उत्तरी पर्वतमाला से यह नदी निकलती है. मणिपुर एवं कछार में

इस नदी का नाम बराक है. कछार जिले में कुछ आगे चलकर यह दो भागों में बट जाती है- उत्तरी शाखा और दक्षिणी शाखा. उत्तरी शाखा सुर्मा कहलाती है और बांग्लादेश के सिलहट जिले से होकर बहती है. दक्षिणी शाखा कुसिआरा कहलाती है और आगे चलकर सुर्मा नदी ब्रह्मपुत्र की पुरानी शाखा से मिलती है. उद्‌गम स्थल से लेकर इस संगम स्थल तक सुर्मा नदी की कुल लंबाई लगभग 896 किलोमीटर है.

दोयांग नदी: यह नदी नागालैंड की सबसे बड़ी और मुख्य नदियों में से एक है, जो वोखा जिले से होते हुए बहती है. शहर के अंदर यह करीब 21 कि.मी. लंबी है. स्थानीय आदिवासी इसे ज़ू या ज़ूलू भी कहते हैं. इस नदी से कई सहायक नदियां निकलती हैं, जैसे सुई, तुलों और तिषी ये सारी नदियां आगे जाकर दोयांग नदी में मिल जाती है. जिले के अधिकांश भागों में रहने वाले लोगों के लिए यह नदी जल का मुख्य स्रोत है. इस नदी का बहाव आस-पास की जमीनों को उपजाऊ बनाता है और वहां सब्जियां व केले, पपीता, अनारस जैसे फल भारी मात्रा में उगाये जाते हैं. प्रकृति से प्रेम करने वालों के लिए नदी की घाटियां मुख्य आकर्षण हैं.

तीस्ता नदी: यह नदी भारत के सिक्किम राज्य से होती हुई पश्चिम बंगाल राज्य तथा बांग्लादेश से होकर बहती है. यह सिक्किम और पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी विभाग की मुख्य नदी है. तीस्ता नदी को सिक्किम की जीवनरेखा कहा जाता है. इस नदी की पूरी लंबाई 315 कि.मी. है. हिन्दू पुराणों के अनुसार यह नदी देवी पार्वती के स्तन से निकलती है. तीस्ता का अर्थ 'त्रि-स्रोत' या 'तीन-प्रवाह' है. सिक्किम प्रान्त की जितनी लंबाई है लगभग पूरी लंबाई लेकर बहती है. रांगपो नदी इसकी सहायक नदी है. चमकीली हरे रंग की यह नदी बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र नदी से मिलने से पूर्व सिक्किम और पश्चिम बंगाल की सीमाओं के रूप में बहती है.

मुहुरी नदी: मुहुरी नदी एक अंतरराष्ट्रीय नदी है जो भारत के त्रिपुरा राज्य से होकर बांग्लादेश के बीच बहती है और बंगाल की खाड़ी के अंदर चली जाती है. मुहुरी को लिटिल फेनी भी कहा जाता है. मुहुरी नदी त्रिपुरा के लुशाई पहाड़ियों में से आती है. मुहुरी फाइन में बंदरगाह पर निकलकर जलाशयों में निकलती है जहाँ इस नदी के पानी का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है. मुहुरी का त्रिपुरा में 839 कि.मी. का क्षेत्र है जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 8% है.

उमियम झील: यह झील मेघालय की राजधानी शिलांग में पहाड़ों पर स्थित है. इसे आमतौर पर बारापानी झील भी कहा जाता है. इसका निर्माण 1960 के दशक में उमियम नदी को बांधकर किया गया था. यह झील और बांध 220 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला है. यह एक मानव निर्मित झील है जो बरमूडा की झील से भी बड़ी है.

पारे जल विद्युत परियोजना: पारे जल-विद्युत परियोजना अरुणाचल प्रदेश के पापुम पारे जिले में स्थित है. नीपको ने इस परियोजना को ब्रह्मपुत्र नदी की उप-नदी डिक्रोंग नदी की जल-विद्युत क्षमता को दोहन करने तथा 405 मेगावाट रंगानदी जल-विद्युत परियोजना से तेल रेस में छोड़े गए पानी का उपयोग करने के लिए किया है. यह एक रन-ऑफ़-द-रिवर परियोजना है. इस परियोजना में 63 मी. हाई कंक्रीट ग्रेविटी बांध और 2.818 कि.मी. लंबी सुरंग है. परियोजना की क्षमता 110 मेगावाट है.

तीस्ता जल विद्युत परियोजना: पूरे भारत में 14500 कि.मी. नौका चलन योग्य जलमार्ग है. इनमें सर्वाधिक पूर्वोत्तर में है. पूर्वोत्तर की नदियाँ बांग्लादेश से व्यापार का प्रमुख मार्ग है. यहाँ राष्ट्रीय जलमार्ग से संबंधित दायित्व, केंद्र सरकार की संस्था भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण का है, वहीं सहायक नदियों के प्रबंधन का दायित्व असम तथा पूर्वोत्तर की अन्य राज्य सरकारों का है.

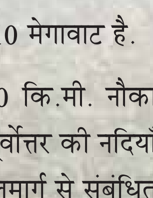

संतोष कुमार राम
क्षे. का. रायपुर

केन्द्रीय कार्यालय मुंबई में आयोजित हिन्दी उत्सव, 2019

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु केंद्रीय कार्यालय मुंबई में दिनांक 18.09.2019 को हिंदी उत्सव, 2019 के तहत 'सदाबहार गीतों की शाम तथा पुरस्कार वितरण समारोह' का आयोजन किया गया. इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कार्यपालक निदेशक महोदय श्री गोपाल सिंह गुसाईं; श्री दिनेश कुमार गर्ग; श्री मानस रंजन बिस्वाल एवं श्री ब्रजेश्वर कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) उपस्थित रहे. बैंक के सभी उच्च कार्यपालकों के अलावा सामाजिक संस्था यूनिवन (बैंक के उच्च कार्यपालकों की गृहणियों द्वारा चलाई जाने वाली सामाजिक संस्था) की चेयरपर्सन श्रीमती बी. सत्यवती रै मैडम; वाइस चेयरपर्सन श्रीमती सरिता गुसाईं मैडम; श्रीमती प्रणिता गर्ग मैडम; श्रीमती नीरजा बिस्वाल मैडम यूनिवन के अन्य सदस्यों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहीं. कार्यक्रम में लगभग 700 स्टाफ सदस्य सपरिवार उपस्थित थे. राजभाषा कार्यान्वियन प्रभाग द्वारा ग्राहक सेवा विषय पर आधारित कार्टून श्रृंखला की 13वीं पुस्तक - 'अग्रिम अनुश्रवण' के साथ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य का विमोचन उच्च कार्यपालकगणों द्वारा किया गया. इसके साथ ही विभागीय आंतरिक राजभाषा शील्ड पुरस्कारों एवं हिंदी माह के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा वर्ष 2018-19 में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्टाफ सदस्यों को मुख्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया. कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण हमारे ही बैंक के कर्मचारियों द्वारा सदाबहार गीतों की प्रस्तुति रही, जिसका सभी स्टाफ सदस्यों व उनके परिवारजनों ने भरपूर आनंद उठाया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुलभा कोरे, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा एवं समापन श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया.

हिन्दी दिवस उत्सव - 2019
यूनियन बैंक
Union Bank
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा

विभिन्न अंचलीय / क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी उत्सव, 2019

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, दिल्ली

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, भोपाल

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चेन्नै

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरू

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, रांची

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, वाराणसी

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, कोलकाता

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, पुणे

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (पश्चिम)

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (उत्तर)

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (दक्षिण)

डीआईटी, पवई

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गाजीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

क्षेत्रीय कार्यालय, इन्दौर

क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, आज़मगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाणा

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, नैल्लूर

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बतूर

क्षेत्रीय कार्यालय, सम्बलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा

क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, इलाहाबाद (प्रयागराज)

क्षेत्रीय कार्यालय, बडौदा

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

राष्ट्र का विकास क्षेत्रीय भाषाओं के साथ

'विकास' शब्द से हम क्या समझते हैं, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है. क्या मात्र आर्थिक स्तर पर हुआ विकास, उच्च स्तरीय रहन-सहन, नई तकनीक एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग, भौतिकवादी होना ही सर्वांगिण विकास है? बहुत से लोगों का मानना है कि दूसरे देशों के सामने अच्छी छवि बनाना, विज्ञान के नए-नए प्रयोग करना, नई तकनीक का उपयोग एवं आधुनिक जीवन शैली अपनाते हुए पूर्णत: भौतिकतावादी जीवन ही विकास की परिभाषा है, परंतु यह विकास का एक पहलू मात्र है. वास्तव में विकास को दो स्तर पर आँका जा सकता है: पहला, आर्थिक स्तर पर और दूसरा मानसिक स्तर पर. यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आर्थिक स्तर पर देश की विश्व भर में पहचान हो, विज्ञान के नित नए आविष्कार हों. पर जब तक किसी देश के नागरिकों का मानसिक विकास न हो, तब तक उस राष्ट्र का पूर्ण विकास नहीं माना जा सकता.

इसी प्रकार जब भाषा के विकास की बात आती है तो उससे जुड़ी हर बात भावुकता से जुड़ जाती है. भाषा को अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम माना जाता है. इस सत्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि कोई भी व्यक्ति चाहे कितनी ही भाषाएँ क्यों न सीख ले, परंतु स्वयं को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त अपनी ही भाषा में कर सकता है क्योंकि अभिव्यक्ति भावों से जुड़ी होती है और भाव, भाषा से. अत: अपने भावों का विशुद्ध प्रवाह तो अपनी ही भाषा में हो सकता है. अत: किसी भी राष्ट्र के विकास में उसकी क्षेत्रीय भाषाओं का विशेष महत्व होता है.

क्षेत्रीय भाषाएँ जहां एक ओर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान से समाज और विश्व का परिचय करवाती हैं. भिन्न - भिन्न कालखण्डों में विद्वानों व मनीषियों ने अपने ज्ञान को क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ही प्रदान किया है. हमारी लोकोक्तियाँ और लोकगीत इसका ज्वलंत उदाहरण हैं. उच्चतम दर्जे का साहित्य विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा हुआ है. जो संस्कृति, समाज, इतिहास, अध्यात्म, मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान का स्रोत है.

हमारा देश एक बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुसांस्कृतिक देश है. यहाँ की भाषिक संरचना के विषय में कहावत है: 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले वाणी', वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 224 भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें से 22 भाषाओं को संविधान की अष्टम अनुसूची में स्थान प्राप्त है.

वैसे क्षेत्रीय भाषाएँ अपने प्रदेश की पहचान होते हुए राष्ट्र की एकता का हिस्सा होनी चाहिए थी परंतु इन्हें आपस में प्रतिस्पर्धात्मक बनने दिया गया. अब हर बोली, हर भाषा आठवीं अनुसूची में जगह पाने के लिए संघर्ष करती हुई दिख रही है, जिसका विदेशी भाषा अंग्रेजी बहुतायत में लाभ उठा रही है. भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग और उसके लिए धरना प्रदर्शन और कर्नाटक में हुआ कन्नड़-हिन्दी विवाद इसके जीवंत उदाहरण हैं. भाषाओं का यह संघर्ष स्वाभाविक ही है. जब आधार ही कमजोर हो, तो बिखराव होगा ही. जहां क्षेत्रीय भाषाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम बन नए प्रयोगों को रास्ता देना है, ज्ञान के स्रोत खोलना है, संस्कृति और सभ्यता को नयी दिशा देनी है, वहीं उसका अधिकतम समय एवं हिस्सा संघर्ष को भेंट हो रहा है. अपनी-अपनी भाषाओं का ह्रास देख लोग मानसिक रूप से कुंठित हो रहे हैं और इसके पीछे समय, धन और प्रतिभा नष्ट हो रही है.

राष्ट्र स्वाधीन है, परंतु राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है. शिक्षा, न्याय, प्रशासन और जीवन के हर क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व बना हुआ है.

वास्तव में हम आज अपनी संस्कृति से कटकर और अपने आत्म सम्मान, अपनी पहचान को खोकर अपनी भाषा के प्रयोग में हीनता महसूस करते हैं. मात्र संविधान में संरक्षण देने से क्षेत्रीय भाषाओं का विकास नहीं होगा. आज महानगरों की लगभग पूरी आबादी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रही है. यह रुझान बहुत ही तेजी से छोटे नगरों, कस्बों से होते-होते गांवों तक पहुँच चुका है. इसका मुख्य कारण यह है कि उच्च शिक्षा व रोजगार अंग्रेजी में ही है. भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं तमाम उच्च पदों से लेकर चतुर्थ वर्ग तक की सरकारी नौकरी में अंग्रेजी विषय अनिवार्य है. ऐसे में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम रखते हुए भी कौन अभिभावक अपने बच्चों को अपनी भाषा में शिक्षा दिलवाकर उनका भविष्य दाँव पर लगाएंगे.

इसका प्रभाव यह है कि छोटे-छोटे कस्बों और गांवों तक में जाने अनजाने अंग्रेजी के नाम पर खुले स्कूल देश के नौनिहालों को अंग्रेजी रटवा कर राष्ट्रीय के बजाए सीधे-सीधे अंतर्राष्ट्रीय बनाने में लगे हुए हैं वास्तविक स्थिति इतनी दयनीय है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय से निकले अधिकांश बच्चों को अंग्रेजी का ज्ञान ठीक से नहीं है और शिक्षा का माध्यम अपनी भाषा के इतर होने के कारण वे अपनी भाषा पर भी पकड़ नहीं बना पाते. अपने विद्यार्थी जीवन में ये बच्चे अंग्रेजी न जानने की हीन भावना से हमेशा ग्रसित रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इनके व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास अवरुद्ध हो जाता है और ये आत्मविश्वास खो देते हैं.

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से इसलिए कतराते हैं क्योंकि उनकी शिक्षा का माध्यम वह भाषा नहीं है, जो उनके घर में बोली जाती है. संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकारों के अनुसार बच्चों को उसी भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए, जिस भाषा का प्रयोग उसके पारिवारिक सदस्य करते हैं. अनुसंधानों के अनुसार हमारी

पठनगति मातृभाषा में अधिक होती है क्योंकि उसके सारे शब्द परिचित होते हैं. अन्य माध्यम से पढ़ने वाले बच्चे दो भाषाओं का बोझ सह नहीं पाते. परिणामत: बच्चे दोनों भाषाओं के साथ न्याय नहीं कर पाते. मातृभाषा के विषय में गांधीजी ने कहा था - 'मेरा यह विश्वास है कि राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा के बजाय दूसरी भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे आत्महत्या ही करते हैं. यह उन्हें अपने जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करती है.'

यदि हम विश्व के अन्य देशों पर नजर डालें तो यह देखने को मिलता है कि उन्होंने अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को कितना महत्व दिया है जिसके परिणाम स्वरूप वे काफी आगे बढ़े हैं. स्वीडन में स्वीडिश, फ्रांस में फ्रेंच, चीन में चीनी, जापान में जापानी, जर्मनी में जर्मन, ब्रिटेन अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम है और वे विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में बहुत आगे हैं. अगर हम सोचते हैं कि विकास को बढ़ावा देने में क्षेत्रीय भाषाओं से इतर कोई दूसरी भाषा अधिक सार्थक है, तो वह हमारा भ्रम है.

देश में आज स्थिति यह है कि प्रत्येक क्षेत्र की मूल भाषा अंग्रेजी है और क्षेत्रीय भाषाएँ मात्र उसके अनुवाद की भाषाएँ हैं. अनुवाद की भाषा तक सीमित रह जाने के कारण आज इनमें मौलिक सृजन की कमी है. यही कारण है कि आज बड़े-बड़े शोध और साहित्य में मौलिकता का अभाव है. क्षेत्रीय भाषाओं के शोषण के साथ भारतीय शोध एवं साहित्य का भी ह्रास हो रहा है और उनकी गुणवत्ता का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है.

हमें समझना होगा कि भाषा सिर्फ माध्यम नहीं है, वह हमारी जीवन पद्धति भी है और उसे अभिव्यक्त करने का साधन भी है. वह हमारी संस्कृति और सभ्यता का सार भी है. उसे त्याग कर कोई मौलिक काम कभी नहीं किया जा सकता. अन्य भाषा सीख कर उसमें कुशल कारीगर तो हो सकते हैं किन्तु उसमें मौलिक सृजन नहीं कर सकते हैं. भारत के भविष्य का निर्माण क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाकर ही किया जा सकता है. आज फ़िल्म जगत एक अत्यंत विस्तृत क्षेत्र के रूप में उभरकर कई लोगों के रोजगार का साधन बना हुआ है पर लोग अपनी भाषा में बनी फिल्म को ही देखना पसंद करते हैं क्योंकि उससे जुड़ाव महसूस करते हैं. भारत से बाहर रह रहे भारतीय मूल के लोगों के लिए वहां भी भारतीय भाषाओं की फिल्में लगाई जाती हैं और वे उन्हें बहुत चाव से देखने जाते हैं. यही कारण है कि विज्ञापन की प्रमुख भाषा स्थानीय भाषा ही होती है. स्थानीय भाषाओं के समाचार-पत्र बहुत बड़ी मात्रा में बिकते हैं. लोग अपनी भाषा में ही समाचार-पत्र पढ़ना अधिक पसंद करते हैं.

आज भारत विश्व की सबसे उभरती अर्थव्यवस्था में से एक माना जाता है. वैश्वीकरण के दौर में व्यापार, वस्तुओं और सेवाओं के चलते भाषाएँ एक-दूसरे से निकट आ रही हैं. यह तथ्य निर्विवाद है कि भारत का उपभोक्ता बाजार तेजी से बढ़ रहा है, जो महानगरों, शहरों, कस्बों से लेकर गाँव-गाँव तक अपने पैर पसार रहा है. इतने विस्तृत उपभोक्ता बाजार को साधने के लिए अनेक बहुउद्देशीय कंपनियां अपने मार्केटिंग और विज्ञापन अभियान को भारतीय भाषाओं में चला रही हैं और इस पर करोड़ों रुपए का व्यय कर रही हैं.

अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग अर्थात बैंकिंग क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है. अन्य व्यवसायों की भांति इस क्षेत्र में भी कड़ी स्पर्धा दिखायी देती है. महानगरों और शहरों में व्यवसाय बढ़ाने की सीमित गुंजाइश के कारण बैंकों ने अपना रुख छोटे शहरों से लेकर गांवों की ओर किया है, जहां उन्हें अपनी मार्केटिंग अनिवार्य रूप से स्थानीय भाषाओं में करनी पड़ रही है.

स्थानीय भाषाओं के प्रयोग के कारण बैंक का ग्राहक आधार बढ़ रहा है, जिससे उनका कारोबार बढ़ रहा है. कई बैंकों ने अपने तकनीकी आधारित उत्पाद देश के दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए ई-चौपाल जैसी संकल्पना क्षेत्रीय भाषाओं में की, जिसके बड़े उत्साहजनक परिणाम सामने आए हैं. यह स्पष्ट रूप से बताता है कि मार्केटिंग और संचार में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग बैंकों की उत्पादकता को बढ़ाने में निस्संदेह कारगर है.

कुछ समय से सरकार वित्तीय समावेशन की ओर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित कर रही है, जिसमें स्थानीय भाषाओं का विशेष महत्व है. इसके तहत प्रत्येक नागरिक को बैंकिंग क्षेत्र से जोड़ना, मुख्य लक्ष्य है ताकि लोगों को सरकार की सभी योजनाओं का लाभ मिल सके और विभिन्न अनुचित तत्वों पर लगाम लग सके. इस लक्ष्य की पूर्ति में स्थानीय भाषाएं मील का पत्थर सिद्ध होंगी. प्रत्येक नागरिक को जोड़ने हेतु उनसे संवाद एक अहम कड़ी है और संवाद के लिए उनकी भाषा के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है.

आज के दौर में किसी भी क्षेत्र में चाहे वह बैंकिंग उत्पादों की मार्केटिंग हो, सरकारी योजनाएं हों या डिजीटलाइजेशन ही हो, क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग के बिना लक्ष्य - प्राप्ति संभव नहीं है. इनके अभाव में विकास की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है.

अत: मातृभाषा के विषय में आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र का कथन सत्य ही है:

'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल'

शाहिद खान मंसूरी
के.का., मुंबई

पूर्वोन्तर का प्राकृतिक नज़ारा

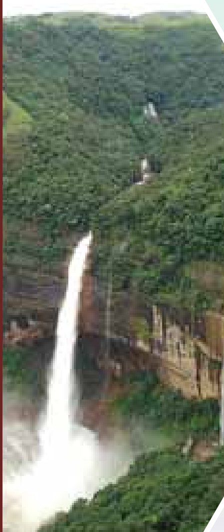

जहाँ सुनाई देता ब्रह्मपुत्र की लहरों का शोर,
जहां दिखते बारिश में नाचते सुंदर मोर,
जहां होती मौसम की हसीन हलचल
जहां गिरते हैं झरने करते कलकल ययद्र

आज जिस विषय पर मैं लिखने जा रहा हूँ वह सोचकर ही मेरा मन रोमांच से भर उठता है.

भारत के पूर्वोत्तर में सात बेहद खूबसूरत राज्य हैं जिन्हें हम 'सेवन सिस्टर्स' के रूप में जानते हैं. ये राज्य हैं, अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड एवं त्रिपुरा. इन सात बहनों का एक भाई भी है जिसका नाम है सिक्किम, पूर्वोत्तर भारत का आठवां राज्य. पूर्वोत्तर की खूबसूरती का वर्णन राज्यवार करना अति आवश्यक है -

- **असम:** पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला एक बेहद खूबसूरत राज्य, प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण. असम के मुख्य केन्द्र बिन्दु हैं.

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान: यह राष्ट्रीय उद्यान असम के गोलाघाट और नगाँव दोनों जिलों में स्थित है. यह पार्क एक सींग वाले गैंडे की विश्व की सबसे बड़ी आबादी का घर है. इस पार्क में विभिन्न प्रकार के हाथी, जंगली भैंस, हिरण आदि जानवर रहते हैं. विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों का भी यह एक प्राकृतिक घर है.

असम राज्य चिड़ियाघर: यह राज्य का सबसे बड़ा प्राणी संग्रहालय है. यह एक सींगवाले गैंड़ो, बाघों, तेंदुए, सुनहरे लंगूर और हिमालयन काले भालू जैसे जानवर का प्राकृतिक घर है.

हांफलोंग: यह असम राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन है. यह समुद्र तल से लगभग 966 मी. ऊपर है. यह प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त अत्यंत लुभावना एवं दार्शनिक स्थल है.

पनिमूर झरने: पनिमूर झरने असम की खूबसूरत वादियों से निकलते हुए कल-कल करके गिरते हुए जगह को बेहद मनमोहक बनाते हैं. पनिमूर झरनों का स्रोत कोपिली नदी है. जैसे ही नदी पनिमूर पहुँचती है, यह एक रोमांचकारी एवं गर्जन करते हुए घने झरने में बदल जाती है.

माजुली: माजुली विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है. यह दक्षिण में ब्रह्मपुत्र नदी और उत्तर सुबनसिरी नदी द्वारा बनाया गया द्वीप है. इस मनमोहक द्वीप के कुछ प्रमुख आकर्षण है, जैसे औरंज गार्डन, ऊनाती सत्र आदि.

- **अरुणाचल प्रदेश:** अरुणाचल प्रदेश को 'द राइजिंग सन' की भूमि भी कहा जाता है. अरुणाचल प्रदेश भारत के उत्तर पूर्वी सिरे पर बसा एक बेहद सौम्य एवं शांत प्रदेश है जो अपनी मनमोहक पहाड़ियों एवं सुंदर घाटियों से दिल जीत लेती है. खिलखिलाते फूल, बर्फ की सफ़ेद चादर से ढकी पहाड़ियों की चमचमाती चोटियां, तंग घाटियों से पानी का घुमावदार बहना, पूर्वोत्तर के इस खूबसूरत राज्य के प्राकृतिक सौन्दर्य में चार-चाँद लगा देते हैं.

ओर्किड का स्वर्ग: अरुणाचल प्रदेश को ओर्किड का स्वर्ग भी कहते हैं. यहाँ 500 से भी अधिक प्रजाति के ओर्किड पाये जाते हैं. जो कि पूरे भारत में पाये जाने वाले ओर्किड की कुल प्रजाति का 50 प्रतिशत है.

विश्व धरोहर स्थल 'जीरो': यह अरुणाचल प्रदेश का बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन है जो कि अपनी देवदार की पहाड़ियों एवं चावल के खेतों के लिए प्रसिद्ध है. ज़ीरो अभयारण्य वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत किस्म का घर है. लुप्तप्राय बादलवाले तेंदुए भी यहाँ पाये जाते हैं. अभयारण्य में वनस्पतियों का एक स्पेक्ट्रम है, जिसमें देवदार के पेड़, फर्न, ओर्किड, बांस आदि शामिल हैं.

तवांग: तवांग भारत के अरुणाचल प्रदेश में पहाड़ों के बीच में बसा एक बेहद सुंदर एवं छोटा जिला है. यहाँ की सुंदर वादियों में घूमने का एक अलग ही मजा है. यहाँ सूर्योदय के समय निकलने वाली पहली किरणों के बीच बर्फ से ढकी हुई चोटियां यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का अलग ही वर्णन करती हैं. तवांग में पर्यटकों को घूमने के दौरान प्राकृतिक सौन्दर्य का अलग अनूठा रूप देखने को मिलता है.

ईटानगर वन्यजीव अभयारण्य: यह एक अत्यंत विशाल अभयारण्य है एवं बेहद दार्शनिक है. यहाँ लंगूर, मृग, हिमालयी काले भालू, साही आदि जीव पाये जाते हैं.

बोमडिला: बोमडिला आदर्श, प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एक बेहद सुंदर स्थल है. यहाँ से हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के अद्भुत दृश्य देख पाने का सौभाग्य प्राप्त होता है. यहाँ के सेव के बाग, विरंग घाटी, बोमडिला मठ, ऊपरी गोम्पा, मध्य गोम्पा आदि यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के विश्लेषण हैं.

- **मेघालय:** मेघालय (बादलों का घर) पूर्वोत्तर भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य का महत्वपूर्ण विश्लेषण करता हुआ एक खूबसूरत राज्य.

शिलांग: मेघालय की राजधानी शिलांग झरनों का घर है. रोमांचक पर्वत चोटियां, क्रिस्टल क्लियर झीलें इस क्षेत्र को बेहद सुंदर बनाती है. शिलांग की खूबसूरती की वजह से इसे 'पूर्व का स्कॉटलैंड' भी कहा जाता है.

चेरापूंजी: मेघालय की 'ओस की बूंद' के नाम से प्रसिद्ध पूरे विश्व में अधिकतम बारिश के लिए मशहूर, यहाँ का पेड़ों की टहनियों से बना जीवंत डबल डेकर ब्रिज बेहद प्रसिद्ध है.

बल्फ़्कराम राष्ट्रीय उद्यान: बल्फ़्कराम राष्ट्रीय उद्यान मेघालय राज्य की गैरो हिल्स के पास समुद्र तल से लगभग 3000 मी. की उंचाई पर स्थित है. यह उद्यान भौंकने वाले हिरण एवं सुनहरी बिल्ली के लिए बेहद प्रख्यात है.

नोहकलीकई फाल्स: भारत के सबसे उंचे फाल्स में शुमार है

नोहकलीकई फाल्स यह जल प्रपात चेरापूंजी के निकट है मेघालय के कुछ अन्य खूबसूरत झरने हैं, जैसे लेंगशियांग फाल्स, क्रीनेम फाल्स, एलिफूट फाल्स आदि.

- **मिज़ोरम:** उत्तरपूर्व के प्राकृतिक सौन्दर्य में चार चाँद लगाने वाला एक और बेहद खूबसूरत एवं सुखद जलवायु वाला राज्य. प्राकृतिक सौन्दर्य को बिखेरते हुए मिज़ोरम के महत्वपूर्ण हिल स्टेशन:

हिमुफेंग आईजोल: यह पहाड़ी क्षेत्र मिज़ोरम की राजधानी आईजोल से 50 किमी दूर स्थित है एवं समुद्र तल से 1619 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इन पहाड़ियों से घाटियों का दृश्य बेहद मनमोहक एवं सुखदायक प्रतीत होता है. मिजोरम के अन्य खूबसूरत हिल स्टेशन हैं रीक त्लंग, बंजों आदि.

पहाड़ों की खूबसूरत घाटियों से बेहद खूबसूरत एवं दिल को लुभाने वाले झरने भी इस राज्य के प्राकृतिक सौन्दर्य का बखूबी वर्णन करते हैं. जिनमें प्रमुख झरने हैं, वानतांग फाल्स, तुरीहीयु आदि.

यहाँ की लुशाई हिल्स, पठ्कई रेंज का हिस्सा है और आंशिक रूप से भारत और त्रिपुरा में है. इस खूबसूरत हिल की खूबसूरती देखने योग्य है.

- **त्रिपुरा:** प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण कई वन्यजीव अभयारण्यों से युक्त त्रिपुरा पूर्वोत्तर का एक और नगीना. यहाँ का तृष्णा वन्यजीव अभयारण्य आकर्षक भारतीय बाइसन के लिए प्रसिद्ध है जिसे गोर के नाम से भी जाना जाता है. इस सघन वन में कैड लंगूर और गोल्डन लंगूर जैसे प्राईमेट्स के साथ साथ हिललोक गिब्बन नामक लुप्तप्राय वन प्रजाति निवास करती है. दूसरा है सिपाहीजुला वन्यजीव अभ्यारण्य जो कि वनस्पतियों एवं जीवों की एक प्रभावशाली विविधता का घर है. इस वन्यजीव अभ्यारण में छायांकित लंगूर, तमाशगीन बंदर, बादल वाला तेंदुआ, जंगली भैंसे, भौंकने वाले हिरण, जंगली सुअर आदि दिखायी देते हैं.

यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य में खूबसूरती बिखेरती डमबोर झील बेहद लोकप्रिय है. यह झील 48 टापुओं का घर भी है एवं सर्दियों के दौरान यह झील कई प्रवासी पक्षियों का अस्थाई घर भी बनती है. त्रिपुरा का सनाया झरना, कमलपुर घाटी से गिरता है.

- **मणिपुर:** जिसे लोकप्रिय रूप से भारत का 'स्कॉटलैंड' भी कहा जाता है. प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर प्रकृति प्रेमियों के लिए यह एक बेहद लुभावना राज्य है. मणिपुर की राजधानी इम्फ़ाल प्रकृति की अत्यंत खूबसूरत घाटियों में स्थित है. मणिपुर घाटियों, मैदानों, एवं पहाड़ियों से घिरा हुआ है. घने जंगल और फैले हुए घास के मैदान इस पूर्वोत्तर के राज्य को और भी खूबसूरत बनाते हैं.

इम्फ़ाल में मुख्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण स्थल निम्न हैं:

- लोकतक झील • लाल पहाड़ी लोकपाल • सिरोही नेशनल पार्क
- मणिपुर जूलोजिकल गार्डन

मणिपुर के उखरूल में आप खूबसूरत घाटियों, पहाड़ियों, झरनों एवं धाराओं से मंत्रमुग्ध हो जाएंगे. उखरूल के प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त गंतव्य निम्न है.

•ख्यांक पीक •शिरुई काशांग चोटी •कचोफेंग झील •खंगखुई घुफा •निलय चाय इस्टेट

मणिपुर राज्य के कुछ अन्य एवं महत्वपूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य स्थल;

•इम्फ़ाल नदी •आइकोप झील •बैथो झील •लूसी झील यांगोपोकपी-लोचाओ वन्यजीव अभ्यारण्य •सेनापति •दाजूको घाटी •मखेल घुफा आदि

- **नागालैंड:** भारत के पूर्वोत्तर में राजसी एवं लुभावनी घाटियों एवं पहाड़ियों युक्त एक खूबसूरत राज्य नागालैंड की राजधानी है, कोहिमा. ज़ुफू पीक, शिलोई झील, राजकीय संग्रहालय आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं.

दीमापुर: नागालैंड में मुख्य प्रवेश बिन्दु के रूप में विख्यात दीमापुर प्राकृतिक सौन्दर्य से भलीभूत है. दीमापुर का नागालैंड प्राणी उद्यान बेहद खूबसूरत है. अन्य प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त स्थल है, कचहरी खंडर, दाईजेफे, क्राफ्ट विल्लेज आदि.

मोकोकचुँग: नागालैंड की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक राजधानी माने जाने वाले मोकोकचुँग, नागालैंड के प्रमुख खूबसूरत जिलों में से एक है. यहाँ की सुरम्य पहाड़ियां और बहती हुई धाराओं की संगीतमय आवाज़ आपको मंत्रमुग्ध कर देती है.

नागालैंड के प्रमुख प्राकृतिक स्थल:

•चांगकांग रेंज •लंगपाँगकांग गुफाय •फ़ूसेन केई और मोंगजू की गुफाय •तीयि पर्वत •तहरांग घाटी •बागी घाटी •दोयांग नदी

- **सिक्किम:** अत्यधिक आकर्षक सुखद और बादलों में लिपटे-सिक्किम को पहाड़ों में बसे स्वर्ग के रूप में जाना जाता है.

- **गंगटोक:** गंगटोक अर्थात सिक्किम का प्रवेश द्वार, गंगटोक के खूबसूरत पहाड़ों का दृश्य, बादलों में बसे प्राचीन हिल स्टेशन मंत्रमुग्ध कर देने वाली प्रिजमीय सुंदरता और खूबसूरत घुमावदार पहाड़िया.

यहाँ दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला कंचनजंगा का अद्भुत दृश्य देखने योग्य है. यहाँ प्राकृतिक सुंदरता और विभिन्न प्राकृतिक आकर्षण हैं जैसे त्सोगमो झील, बान झाकरी, ताशी का दृष्टिकोड़ और भी बहुत कुछ. सिक्किम में बादलों से घिर जाने का परम आनंदमई सुख प्राप्त होता है. दक्षिण सिक्किम में नामची, टेंडेग हिल, टेमी टी गार्डन आदि कुछ सौन्दर्य को बिखेरते हुए प्रमुख स्थल हैं.

जब भागती हुई जिंदगी में चाहिए हो थोड़ा सुकून, गर्मी के मौसम में विचलते हुए मन को चाहिये हो थोड़ा सुकून, कह दीजिये जनाब पूर्वोत्तर की हसीन वादियों से, कि इस बार हम आ रहे हैं वहाँ ....वेरी सून.....

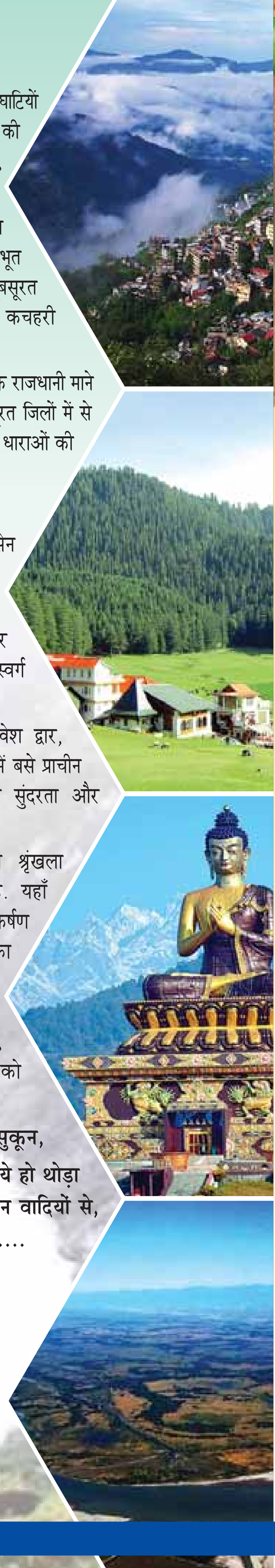

स्पर्श सक्सेना
क्षे.का., इंदौर

पूर्वोत्तर भारत : धर्म एवं मानसिकता

भांति-भांति के निवासी, भारी बारिश, बेहद सम्पन्न जैव-विविधता, पहाड़, भूकंप की उच्च आशंका तथा उत्तर की पार्श्विक घाटियों और दक्षिण की आड़ी-तिरछी घाटियों से होकर जल-निकासी की व्यवस्था, जो बड़ी नदियों से मिलती हैं, पूर्वोत्तर की विशेषता है. भारत का पूर्वोत्तर इलाका ऐतिहासिक तौर पर तीन नामों से जाना जाता है: प्रागज्योतिषपुर, असम और कामरूप. सिक्किम समेत सात अलग लेकिन आसन्न राज्यों का समूह 'पूर्वोत्तर' निश्चित रूप से अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण हमारे देश में एक विशिष्ट स्थान रखता है. भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र जंगलों से आच्छादित है. यह अनछुए जंगलों और जनजातियों की बहुलता का क्षेत्र है. यहाँ की जैव-विविधता भी अनुपम है. इसे भारत की हरित भूमि भी कहा जा सकता है.

धार्मिक स्थिति :

पूर्वोत्तर भारत में बौद्ध धर्म की जड़ें बहुत गहरी हैं. यहाँ के सभी राज्यों में कमोबेश धर्मावलंबी लोग रहते हैं किन्तु अरुणाचल प्रदेश, मिज़ोरम और सिक्किम में इस धर्म को मानने वाले लोगों की संख्या सर्वाधिक है. अरुणाचल प्रदेश के अनेक आदिवासी समुदाय बौद्ध धर्म में आस्था रखते हैं लेकिन लामा अर्थात् पुजारी को छोड़कर आमतौर पर लोग मांसाहारी हैं. इन जनजातियों के जीवन में लामा का विशेष स्थान है. ये बच्चों का नामकरण संस्कार कराते हैं, रोगियों को आरोग्य करने के लिए प्रार्थना करते हैं तथा अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं. बच्चे के जन्म के तीन दिनों के बाद बच्चे को बाहर निकाला जाता है और लामा द्वारा उसका शुद्धिकरण संस्कार किया जाता है.

1912 में बंगाल विभाजन के बाद असम अलग प्रांत बन गया. असम की शानदार घाटियों और पहाड़ियों ने मुस्लिम किसानों और उपनिवेशियों को अपनी ओर आकर्षित किया. इसके बाद असम में मुस्लिमों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई.

समाज में महिलाओं की स्थिति :

पूर्वोत्तर भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति देश के दूसरे हिस्सों के मुक़ाबले काफी मजबूत है. यहाँ उनको पुरुष के मुक़ाबले ज्यादा अधिकार मिले हैं. मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के कई कबीलों और जनजातियों में महिलाएं ही परिवार की मुखिया होती हैं. बावजूद इसके उन्हें अपने अधिकारों का पूरा इस्तेमाल करने नहीं दिया जाता, जिससे परिवार / समाज के अहम फैसलों में उनकी भूमिका काफी नगण्य है. यहाँ महिलाओं की आबादी ज्यादा होने के बाद भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होने के कारण इन्हें परिवार और समाज में उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है. विवाह का पंजीकरण नहीं होने की वजह से विवाद की स्थिति में महिलाओं व उनके बच्चों को सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक उत्पीड़न झेलना पड़ता है. 60 सदस्यीय विधानसभा के लिए हाल ही में हुए चुनावों में तमाम दलों ने महज 11 महिलाओं को ही टिकट दिया था, जिसमें महज 3 ही जीत सकी.

बीते साल फरवरी में **'नागालैंड'** के स्थानीय निकायों के चुनावों में महिलाओं के लिए 33 फीसदी का आरक्षण का ऐलान करने पर विभिन्न संगठनों ने बड़े पैमाने पर इसके खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया था. इसकी वजह से तत्कालीन मुख्यमंत्री टी आर जेलियांग को यह फैसला तो वापस लेना ही पड़ा, साथ ही अपने पद से भी इस्तीफा देना पड़ा था.

पूर्वोत्तर का स्कॉटलैंड कहे जाने वाले **'मेघालय'** में महिलाओं को सबसे ज्यादा अधिकार मिले हैं. वहाँ घर की छोटी बेटी ही परिवार की मुखिया होती है. उससे शादी करने करने वाले लड़के को घरजमाई बनना पड़ता है. लेकिन वहाँ भी महिलाएं अत्याचार की शिकार है. उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में फैसला करने वाली ग्राम पंचायतों के तमाम सदस्य पुरुष हैं.

ईसाई बहुल राज्य **'मिज़ोरम'** की अर्थव्यवस्था, सरकारी दफ्तर, घरेलू और सामाजिक मामलों में महिलाओं का योगदान बेहद अहम है. राजधानी आइज़ोल के किसी भी बाज़ार में ज़्यादातर दुकानों पर महिलाएं ही नजर आती हैं. इसके बावजूद अहम फैसले में उनकी राय नहीं ली जाती.

'मणिपुर' में दुनिया का इकलौता ऐसा बाज़ार (एम्मा मार्केट) है, जहाँ तमाम दुकानदार महिलाएं ही हैं. सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम

(AFSPA) के विरोध में मणिपुरी महिलाओं का विरोध और आंदोलन पूरे विश्व में सुर्खियां बटोरता रहा है. महिला मानवाधिकार कार्यकर्ता ईरोम शर्मिला इसके विरोध में बरसों तक भूख हड़ताल पर रहीं थीं.

पूर्वोत्तर में घरेलू हिंसा का शिकार होने वाली महिलाओं की तादाद बढ़ी है. लेकिन ऐसे ज़्यादातर मामले दबा दिये जाते हैं. खासकर ग्रामीण इलाकों में ऐसी घटनाएं बढ़ी हैं. मणिपुर के एक सामाजिक कार्यकर्ता का कहना है कि 'जब तक राजनीति में महिलाओं की भागीदारी नहीं बढ़ेगी, तब तक समाज में उनकी बातों का कोई खास असर नही होगा'

शैक्षणिक स्थिति, पलायन व प्रभाव:

शिक्षा प्रणाली यहाँ बुरी तरह विफल रही है. समृद्ध परिवार अपने बच्चों को आगे की शिक्षा के लिए कुछ खास शहरों में भेजते हैं, जिससे स्थानीय समाज को एक बड़ा आर्थिक झटका लगता है. यहाँ बड़ी तादाद में प्रवजन का सिलसिला है. पिछले तीन दशकों में पूर्वोत्तर के निवासियों के देश के विभिन्न हिस्सों में आना और वहां बसने का सिलसिला विशेष रूप से तेज़ हुआ है. इनमें से ज़्यादातर लोग उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसरों की तलाश में आए हैं. इस क्रम में जहाँ एक ओर पूर्वोत्तर के निवासियों का स्थानीय लोगों के साथ संपर्क, बातचीत, परस्पर एक-दूसरे को समझने का सिलसिला विकसित हुआ है, वहीं इस प्रक्रिया में अनेक समस्याएँ भी सामने आई हैं. शुक्ला समिति की रिपोर्ट उल्लेखनीय है. इसमें चार प्रमुख कारण बताए गए हैं: मूलभूत आवश्यकताओं का पूरा न हो पाना, बुनियादी ढांचे का अभाव, संसाधनों की कमी और सबसे महत्वपूर्ण है देश के शेष हिस्सों के साथ दो-तरफा समझ का अभाव.

उत्तर-पूर्व से बाहर जाने की एक बड़ी वजह गुणवत्तायुक्त शैक्षणिक ढांचे का अभाव है. माता-पिता अपने बच्चों के लिए बेहतर शैक्षणिक अवसर तलाशने के लिए मजबूर हो जाते हैं. इसके अलावा, उग्रवाद और सामाजिक-राजनीतिक अशांति भी बड़ी वजह है. दूसरी ओर, दिल्ली और कोलकाता जैसे शहर लंबे समय से उच्च शिक्षा के लिए पूर्वोत्तर के पसंदीदा स्थान रहे हैं किन्तु यह सब इतना सहज और आसान नहीं रहा है. उत्तर-पूर्व से आने वाले युवकों को बड़े शहर में सामंजस्य बिठाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. अधिकांश छात्र-युवक गाँवों और कस्बों से अचानक स्वयं को अलग माहौल व जीवन-शैली में आने से परायापन महसूस करते हैं. अलग शारीरिक रूपरेखा, सामाजिक आचरण आदि के कारण भी वे अलग से पहचाने जाते हैं, उनके प्रति भेदभाव किया जाता है, उन्हें निशाना बनाया जाता है. दिल्ली और बेंगलूरु जैसे कुछ शहरों में दुर्व्यवहार, छेड़छाड़, बलात्कार, नस्लीय हमले और हत्या के मामले तेजी से बढ़े हैं. पूर्वोत्तर से मानव तस्करी की रिपोर्टें भी चिंताजनक हैं. नशे की आदत एक अन्य बड़ी समस्या है.

पूर्वोत्तर के विकास पर समग्र ध्यान देने के लिए, 1971 में भारत सरकार ने पूर्वोत्तर परिषद की स्थापना की. सभी 8 राज्य इसके सदस्य हैं. इसका मुख्यालय शिलाँग में स्थित है.

आजीविका :

पूर्वोत्तर भारत की पहाड़ी हो या घाटी, यहाँ के सभी इलाकों में लोगों की आजीविका का मुख्य साधन कृषि है. बावजूद इसके कृषि विकास का पैटर्न राज्यों और फसलों के बीच असमान रहा है. चावल (खरीफ) इस क्षेत्र की प्रमुख फसल है. इस क्षेत्र में गेहूँ, आलू, गन्ना, दाल और तिलहन भी उगाया जाता है. पूर्वोत्तर क्षेत्र, देश के कुल अनाज उत्पादन का केवल 1.5% उत्पादन करता है और 70% आबादी को आजीविका में मदद देता है. जनजातीय समुदाय समेत यहाँ के मूल निवासियों ने खेती की पारंपरिक प्रणाली, कृषि-जैव विविधता और इससे जुड़े ज्ञान को बरकरार रखा है. खेती की अलग-अलग प्रणालियों की उपज और ऊर्जा दक्षता फसलों से जुड़ी खेती के तौर-तरीके पर निर्भर करती है. झूम खेती यहाँ की बेहद पुरानी परंपरा है, जोकि मूल रूप से बेहद सफल रही है. पूर्वोत्तर के आदिवासी किसान स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम इस्तेमाल कर सकते हैं. इसी तरह की एक प्रणाली है: सीढ़ीनुमा खेती की सिंचाई का चलन. यह व्यवस्था गैर-उपजाऊ जमीन में बेहद कारगर रही है.

इस इलाके में बांस के कई उत्पाद देखे जा सकते हैं. इनमें से कुछ इस तरह हैं: बांस का अचार, बांस सिरका, फूलदान, अगरबत्ती की छड़ी, मोबाइल कवर, टूथपिक, पेन स्टैंड, फर्नीचर, जेवर, फोटो फ्रेम, हैंगर, सीधी, ऐश ट्रे, पानी बोतल का कवर इत्यादि. किसानों के लिए अनाज रखने के लिए अलग-अलग साइज़ के डिब्बे या धानी में धान रखा जाता है. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि बाँस पूर्वोत्तर क्षेत्र के लाखों लोगों की आजीविका का साधन है, भारत सरकार ने हाल ही में अपने प्रतिबंधात्मक विनियामक शासन को हटा दिया है. अब बाँस उत्पादों के उत्पादन, परिवहन और बिक्री के लिए किसी भी परमिट की कोई आवश्यकता नहीं होगी. इससे लाखों किसानों को फायदा होगा और 2022 तक किसानों की आय को दुगुना करने के प्रयासों में मदद मिलेगी.

यहाँ बांस की खेती का मामला काफी व्यापक है. पर्यावरण के लिहाज से अनुकूल बांस की फसल में इस इलाके की ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विकास को बेहतर करने और मजबूत आर्थिक आधार तैयार करने की संभावना है. बांस को 'हरोसोना' भी बताया जाता है. पौष्टिक आहार के तौर पर भी बांस का इस्तेमाल किया जा रहा है, इसमें औषधीय गुण भी हैं.

उपजाऊ भूमि, खनिज भंडारों, समृद्ध वनों जैसे प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद पूर्वोत्तर, देश के शेष भाग से पीछे है. इस क्षेत्र का सामाजिक विघटन चिंता का विषय है. एक समाज, जिसका उत्पादक बल अपर्याप्त है, अपने सदस्यों को कमजोर करता है.

प्रीति प्रिया
क्षे. का., समस्तीपुर

कलाकृतियाँ एवं शिल्प

भारत में विविधता एवं अनेकता भरी हुई है. फिर भी यहाँ के लोग एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं जो कि विश्व में इसे एक अनोखी पहचान प्रदान करता है. जब हम बात करते हैं भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की तो वहाँ की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अपने आप में अनूठी है. जो इसे एक अलग पहचान देती है. भारत के उत्तर-पूर्व राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड एवं त्रिपुरा आते हैं.

अरुणाचल प्रदेश का ईटा किला- इस किले का निर्माण 14-15वीं शताब्दी में किया गया था. इसके नाम पर ही इसका नाम ईटानगर रखा गया है. किले की सैर के बाद पर्यटक यहाँ पर पौराणिक गंगा झील भी देख सकते हैं.

झील- ईटानगर से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह झील जंगल में है. पर्यटक इस जंगल में सुन्दर पेड़-पौधे, वन्य जीव और फूलों के बगीचे देख सकते हैं.

बौद्ध मंदिर- यहाँ पर स्थित खूबसूरत बौद्ध मन्दिर की बौद्ध गुरू दलाई लामा यात्रा कर चुके हैं. इस मन्दिर की छत पीली है और इस मन्दिर का निर्माण तिब्बती शैली में किया गया है. यहां एक संग्रहालय का निर्माण भी किया गया है. पर्यटक यहां से पूरे अरुणाचल प्रदेश की झलक देख सकते हैं.

अन्य स्थल- इसके अलावा यहाँ पर लकड़ियों से बनी खूबसूरत वस्तुएं, वाद्ययंत्र, शानदार कपड़े, हस्तनिर्मित वस्तुएं और केन की बनी सुन्दर कलाकृतियों को भी देख सकते हैं. पर्यटन स्थलों में दोन्यी-पोलो विद्या भवन, विज्ञान संस्थान, इंदिरा गांधी उद्यान और अभियांत्रिकी संस्थान आदि प्रमुख हैं.

पापुम पेर- यह अरुणाचल प्रदेश का अत्यन्त सुन्दर स्थान है. इसका मुख्यालय यूपिया में स्थित है. यह ईटानगर से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. पापुम पेर हिमालय की तराई में बसा हुआ है. यहां हिमालय की चोटियों, जंगलों, नदियों और पर्यटक स्थलों को भी देखा सकता हैं. उत्तरी दिशा में कुरूंग कुमे, पूर्व में निचला सुबन सिटी, पश्चिम में पूर्वी कमेंग और अपनी वीरता के लिए जाने जाते हैं. निशि के अलावा यहाँ पर मिकिर जाति भी रहती है. ये लोग इण्डो-मंगोल प्रजाति से संबंध रखते हैं और इनकी भाषा तिब्बत-बर्मा भाषा परिवार से संबंधित है. तथा इसके उत्सव का नाम न्योकुम है. यहा के पर्यटन स्थलों की यात्रा करना पर्यटकों को पसंद है. ईटानगर, दोईमुख, सिगेली और किमीन में स्थित पर्यटन स्थलों की यात्रा करने के लिए पर्यटकों को अरुणाचल प्रदेश के सरकारी कार्यालयों से परमिट लेना पड़ता है.

असम की कला: असम में बाँस शिल्प, घंटी धातु और पीतल शिल्प, रेशम और कपास बुनाई, खिलौने और मुखौटा बनाना, मिट्टी के बर्तनों, काष्ठ शिल्प, गहने बनाना, संगीत बनाने के उपकरणों आदि का निर्माण यहाँ मुख्य रूप से किया जाता है. यहां लोहे से बनी नावों, पारंपरिक बंदूकें और बारूद, हाथीदांत से बनी उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है. असम के रेशम विश्व विख्यात है. ब्रह्मपुत्र घाटी के लगभग हर हिस्से में ग्रामीण परिवार उत्कृष्ट कढ़ाई के साथ रेशम और रेशम के वस्त्र उत्पादन करते हैं. इसके अलावा, असम में विभिन्न सांस्कृतिक समूह अद्वितीय कढ़ाई डिजाइन और अद्भुत रंग संयोजन के साथ सूती वस्त्रों के विभिन्न प्रकार बनाये जाते हैं.

असम में खिलौने और मुखौटे आदि बनाने का एवं वैष्णव मठों में मिट्टी के बर्तनों और निचले असम जिलों में काष्ठ शिल्प, लौह शिल्प, गहने, मिट्टी के काम आदि की अद्वितीय शिल्प कला भी मौजूद है. गोलपाड़ा जिले में और उसके आस-पास में मौर्यकालीन स्तूप प्राचीन कला और वास्तु के अच्छे उदाहरण हैं. तेजपुर में एक सुंदर चौखट भी मिलती है जो गुप्त अवधि के कला का उत्कृष्ट उदाहरण है. वर्तमान में कई मूर्तिकला और वास्तुकला की खोज हुई है जिनमें कुल चालीस प्राचीन पुरातात्विक स्थल असम में प्राप्त हुए हैं.

चित्रकारी असम की एक प्राचीन परंपरा है. जुयांगजइंग (7 वीं शताब्दी ई.) में उल्लेख है कि हर्षवर्धन के लिए कामरुप राजा भास्कर वर्मन उपहार में चित्रों और चित्रित वस्तुओं, असमिया रेशम आदि भेजते थे.

मणिपुर की कला: विविध वनस्पतियों व जीव-जंतुओं के कारण मणिपुर को 'भारत का आभूषण' व 'पूरब का स्विट्जरलैंड' आदि नामों से संबोधित किया जाता है. लुभाने वाले प्राकृतिक दृश्यों में विलक्षण फूल-पौधे, निर्मल वन, लहराती नदियां, पहाड़ियों पर छाई हरियाली शामिल है.

श्री गोविंद जी मंदिर, खारीम बंद बाजार (इमा कैथल) युद्ध कब्रिस्तान, शहीद मीनार, नुपी सान (महिलाओं का युद्ध) मेमोरियल कॉम्लोर क्सा, खोंघापत उद्यान, आईएनए मेमोरियल (मोइरांग), लोकटक झील, कीबुल लामजो राष्ट्रीय उद्यान, विष्णुपुर स्थित विष्णु मंदिर, सेंड्रा, मोरेह सिराय गांव, सिराय की पहाड़ियां, डूको घाटी, राजकीय अजायबघर, कैना पर्यटक निवास, खोंगजोम वार मेमोरियल आदि मणिपुर के कुछ महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं. मणिपुर देश के सुदूर उत्तर पूर्वी छोर पर स्थित है और यह अधिकांश पहाड़ियों से घिरा हुआ है. यहां निवेश के कई अवसर हैं. यहां कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां निवेशकों को आकृष्ट करने की संभावनाएं हैं.

यहां के दर्शनीय स्थलों में इम्फाल, उखुल प्रसिद्ध हैं. इम्फाल में कांग्ला पार्क, गोविंद मन्दिर वहां के बाजार, टीकेन्द्रजित पार्क प्रसिद्ध हैं तो उखुल

की पहाड़ियां प्रसिद्ध हैं. चुडाचांदपुर जिले की लोकटक झील प्रसिद्ध है.

मणिपुर में प्रवेश करने वाले प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट लेना आवश्यक होता है. यह परमिट मात्र दस दिन के लिए वैध होता है व सैलानी यहां भ्रमण करने के लिए प्राधिकृत ट्रैवल एजेंट द्वारा चार लोगों के समूह में ही जा सकते हैं. विदेशी सैलानी यहां वायुयान द्वारा आ सकते हैं.

हथकरघा उद्योग राज्य का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है. यहां यह उद्योग अनादि काल से फल-फूल रहा है. राज्य में यह सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध करा रहा है खासकर महिलाओं को! मणिपुर के प्रमुख हथकरघा उत्पादक साड़ी, चादर, पर्दे, फैशनवाले कपड़े, स्कार्फ व तकिए के कवर आदि बनाते हैं. अधिकांश जुलाहे जिन्हें हुनर व महीन डिजाइनिंग के लिए जाना जाता है. वे वांग खाई बायोन कांपू, कोंगमान, खोंग मैन उल्लालऊ आदि से हैं जो उत्कृष्ट सिल्क उत्पादों के लिए प्रसिद्ध हैं. मणिपुरी कपड़े व शॉलों की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काफी मांग है. मणिपुर डेवलपमेंट सोसायटी (एमडीएस), मणिपुर हैंडलूम एंड हैडीक्राफ्ट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एमएचएचडीसी), एवं मणिपुर स्टेट हैंडलूम वीवर्स को-ऑपरेटिव सोसायटी (एमएसएचडबल्यूज सीएस) ये तीन सरकारी एजेंसियां हथकरघा उत्पादन का काम करती हैं.

देश की विभिन्न हस्तशिल्प कलाओं में राज्य के हस्तशिल्प उद्योग का अनूठा स्थान है. इसके अंतर्गत बेंत व बांस के बने उत्पादों के साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाने की संस्कृति भी शामिल है. यह उद्यम मुख्यतः एंड्रो, सिकमाई, चैरन, थोगजाओ, नुंगवी व सेनापति जिलों में किया जाता है. बांस व बेंत प्रचुरता के कारण टोकरी बुनना यहां के लोगों का लोकप्रिय व्यवसाय बन गया है. इसके अतिरिक्त मछली मारने के उपकरण भी बेंत व बांस के बनाए जाते हैं. घरेलू के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन सभी उत्पादों की काफी मांग है.

मेघालय की कला: मेघालय में बहुत सी प्राकृतिक एवं कृत्रिम झीलें व सरोवर हैं. गुवाहाटी-शिलाँग राजमार्ग पर स्थित उमियम झील (जिसे बड़ा पानी झील भी कहते हैं: उम=बड़ा+यम=पानी) यहां आने वाले पर्यटकों के लिये बड़ा आकर्षण है. मेघालय में बहुत से उद्यान भी हैं, थांगखराना पार्क, ईको पार्क, बॉटैनिकल गार्डन एवं लेडी हैदरी पार्क इनमें से कुछ हैं. शिलांग से 96 कि.मी. दूर स्थित डॉकी बांग्लादेश का द्वार है.

यहां का एक प्रमुख आकर्षण है. गारो पर्वत पर स्थित नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान जिनमें भरपूर वन्य जीवन मिलता है.

मेघालय में अनुमानित 500 प्राकृतिक चूनापत्थर एवं बलुआ पत्थर की गुफाएं हैं, जो राज्य भर में फ़ैली हुई हैं. इनमें क्रेम लियाट प्रा सबसे लम्बी और सायन्रियांग पामियंग सबसे गहरी गुफा हैं. ये दोनों ही जयन्तिया पर्वत में स्थित है. यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, आयरलैंड एवं संयुक्त राज्य से ढेरों गुफा प्रेमी यहां दशकों से आते रहते हैं और इन गुफाओं में अन्वेषण करते रहते हैं.

मेघालय अपने जीवित जड़ सेतुओं के लिये भी प्रसिद्ध है. जिनका निर्माण रबड़ के पेड़ की जड़ों एवं मूलों को आपस में गूंथकर आमने-सामने के नदी तटों के आरपार किया जाता है. ऐसे सेतु चेरापूंजी, नोंगतलांग, कुडेंग रिम एवं कुडेंग थिम्माई गांवों में देखने को मिल जाते हैं. इस प्रकार का एक दोहरा सेतु नोंग्रियाट ग्राम में मिलता है.

'जाकरेम' शिलाँग से 64 कि.मी. दूर गंधक मिश्रित गर्म जल के स्रोतों वाला स्वास्थ्य लाभकारी रिज़ॉर्ट है. इसके जल में आयुष्य गुण बताये जाते हैं.

शिलाँग से 140 कि.मी. दूर **'रानीकोर'** मेघालय का मछली पकड़ने का प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ कार्प एवं मीठे जल की अन्य मछलियां प्रचुर मात्रा में मिलती हैं.

शिलाँग से 96 कि.मी. दूर **'डॉकी'** सीमावर्ती क्षेत्र है जहां से बांग्लादेश को देखा जा सकता है. वसंत ऋतु में यहां की उम्नागोट नदी में रंगीन नाव उत्सव आकर्षण का केंद्र है.

सोहरा के निकट स्थित **'क्शाएद डैन थ्लेन प्रपात'** है. खासी भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ है वह स्थान जहाँ एक कल्पित दैत्य को मार दिया गया था. इस थ्लेन नामक दैत्य को मारे जाने के कुल्हाड़ी के चिह्न आज भी जस के तस दिखाई देते हैं.

शिलाँग पठार के पश्चिम में स्थित **'डियेनजियेई शिखर'** पर एक बड़ा प्याले के आकार का गड्ढा है जिसे एक विलुप्त प्रागैतिहासिक ज्वालामुखी का क्रेटर बताया जाता है.

पथरीले व रेतीले तटों वाला **'ड्वार्कसुइड'** एक चौड़ा सुन्दर सरोवर है जो उमरोई-भोरिम्बॉन्ग मार्ग पर चलने वाली जलधारा के निकट बना है. इसे ड्वार्कसुइड या डेविल्स डोरवे अर्थात शैतान का द्वार भी कहा जाता है.

मैरांग से 11 कि.मी. पर स्थित **'कायलांग रॉक'** लाखों वर्ष पुराना एक सीधा सपाट लाल पत्थर का शिखर है. इसकी ऊंचाई सागर सतह से 5400 फ़ीट है.

शिलाँग से 25 कि.मी. दूर स्थित **'मावफ़्लांग'** में पवित्रतम सैकरेड ग्रोव है. प्राचीन काल से संजोये व सुरक्षित रखे गये इस ग्रोव में पादप जगत की प्रचुर किस्में, शताब्दियों से जमी हुई धरण की मोटी पर्तें एवं वृक्षों पर अधिपादपों (एपिफ़ाइट्स) की भारी वृद्धि मिलती हैं. इन अधिपादपों में सूरण कुल, पाइपर्स, फ़र्न एवं ऑर्किड्स की किस्में मिलती हैं.

त्रिपुरा की कला: त्रिपुरा सुन्दरी-तलवाडा ग्राम से 5 कि. मी. दूरी पर स्थित भव्य प्राचीन त्रिपुरा सुन्दरी का मंदिर हैं, जिसमें सिंह पर सवार भगवती अष्टादश भुजा की मूर्ति है. मूर्ति की भुजाओं में अठारह प्रकार के आयुध हैं. इस मंदिर की गिनती प्राचीन शक्तिपीठों में होती हैं. मंदिर में खण्डित मूर्तियों का संग्रहालय भी बना हुआ हैं, जिनकी शिल्पकला अद्वितीय हैं. मंदिर में प्रतिदिन दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है. प्रतिवर्ष नवरात्रि में यहाँ बड़ा मेला लगता है.

ऑरेंज एंड टूरिज्म फेस्टिवल वांगमुन, उनाकोटी टूरिज्म फेस्टिवल, नीरमहल टूरिज्म फेस्टिवल एवं पिलक टूरिज्म फेस्टिवल. इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे देश का उत्तर-पूर्व क्षेत्र स्थापत्य, कला एवं शिल्प संस्कृति का प्रदेश है. आवश्यकता है, हमें इस धरोहर को बचाकर एवं संरक्षित रखने की!

श्वेता सिंह
क्षे.म.प्र.का., कोलकाता

पूर्वोत्तर की जनजातियाँ

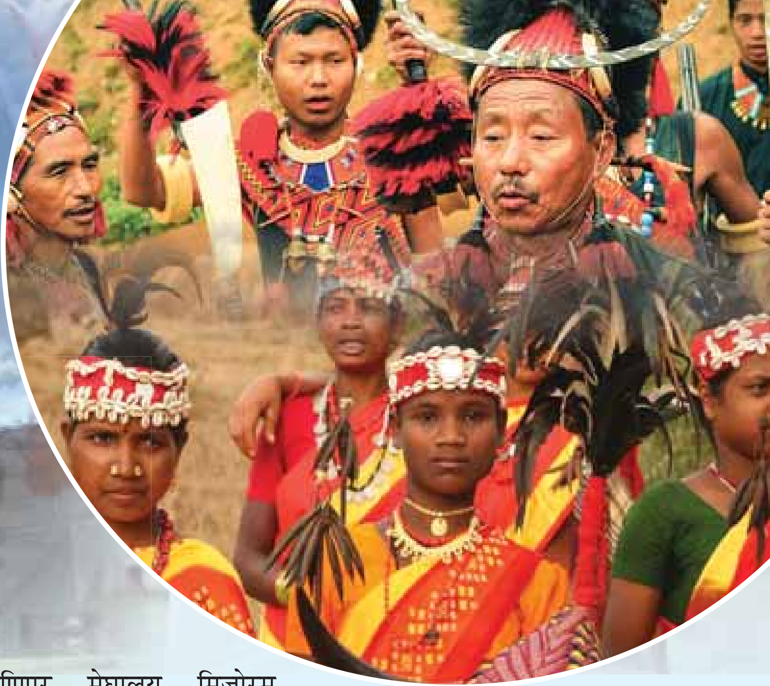

जनजातियाँ वे मानव समुदाय हैं जो एक निश्चित भू-भाग में निवास करती है और जिनकी अपनी संस्कृति, अपने रीति-रिवाज एवं भाषा होती है. ये अमूमन प्रकृति पूजक होते हैं. भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' कहा गया है. इन्हें आदिवासी, आदिम-जाति, वनवासी, प्रागैतिहासिक तथा कबीलाई समूह भी कहा जाता है. इनका एक अन्य स्रोत नेग्रिटो प्रजाति भी है जिसके वंशज अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह में अभी भी मौजूद है.

गौरतलब है कि 'अनेकता में एकता' ही भारतीय संस्कृति की पहचान है और इसी के मूल में निश्चित रूप से भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्थित जनजातियाँ हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में रहते हुए अपनी संस्कृति के ज़रिये भारतीय संस्कृति को एक अनोखी पहचान देती है.

भौगोलिक आधार पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंतर्गत हिमालय के तराई क्षेत्र, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र सम्मिलित किये जाते हैं. कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड तथा पूर्वोत्तर के सभी राज्य इस क्षेत्र में आते हैं.

इन क्षेत्रों में बकरवाल, गुर्जर, थारू, बुक्सा, राजी, जौनसारी, शौका, भोटिया, गद्दी, किन्नौरी, गारो, ख़ासी, जयंतिया इत्यादि जनजातियाँ निवास करती हैं. मध्य क्षेत्र में प्रायद्वीपीय भारत के पठारी तथा पहाड़ी क्षेत्र शामिल हैं. मध्यप्रदेश, दक्षिण राजस्थान, आंध्रप्रदेश, दक्षिणी उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि राज्य इस क्षेत्र में आते हैं जहाँ भील, गोंड, रेड्डी, संथाल, हो, मुंडा, कोरवा, उरांव, कोल, बंजारा, मीणा, कोली आदि जनजातियाँ रहती हैं. दक्षिणी क्षेत्र के अंतर्गत कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल राज्य आते हैं जहाँ टोडा, कोरमा, गोंड, भील, कडार, इरुला आदि जनजातियाँ बसी हुई हैं. द्वीपीय क्षेत्र में अमूमन अंडमान एवं निकोबार की जनजातियाँ आती है. जैसे-सेंटिनलीज, ओंग, जारवा, शोम्पेन इत्यादि.

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार और तिब्बत पाँच देशों की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित है. असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम - इन आठ राज्यों से बना समूह पूर्वोत्तर कहलाता है. यह क्षेत्र भौगोलिक, पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, वेश-भूषा आदि की दृष्टि से यह क्षेत्र इतना वैविध्यपूर्ण है कि इस क्षेत्र को भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहा जा सकता है.

पूर्वोत्तर की जनजातियों की बात करें तो 'आदी' अर्थात् 'पर्वत' जनजाति अरुणाचल प्रदेश की एक महत्वपूर्ण जनजाति है. इस जनजाति के लोग मुख्य रूप से पूर्वी सियांग, पश्चिमी सियांग, अपर सुबनसिरी एवं दिबांग वैली जिलों में निवास करते हैं. पहले इन्हें 'अबोर' कहा जाता था जो अपमानबोधक था. ये लोग अपने को आदी कहना पसंद करते हैं, आदी का अर्थ हुआ पर्वतवासी, गिरिजन या हिलमैन. आदी जनजाति की अनेक उपजातियाँ हैं जिन्हे दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - पदाम - मिन्योंग वर्ग एवं गालो वर्ग. प्रथम उपवर्ग में दस जनजातियाँ हैं - पदाम, पासी, पांगी, मिन्योंग, मिलंग, कार्को, सिमौंग, तंगम, आशिंग और बोरी. द्वितीय वर्ग में चार जनजातियाँ हैं - गालो, पाइलिबो, रामों और बोकार. अरुणाचल के लोअर सुबनसिटी, अपर सुबनसिटी, पापुम पारे और ईस्ट कामेंग जिलों में निशिंग अथवा न्यिशी जनजाति का निवास है. पहले इनको 'दफ़ला' कहा जाता था परंतु अब इनको न्यिशी के नाम से संबोधित किया जाता है.

नि + शिंग के योग से बना 'निशिंग' का शाब्दिक अर्थ स्थानीय भाषा में मनुष्य है. अरुणाचल के लोअर सुबनसिरी और अपर सुबनसिरी जिले में हिलमीरी जनजाति का निवास है.

अरुणाचली जनजातियों का एक बड़ा वर्ग बौद्ध धर्म में आस्था रखता है.

प्रदेश की 'मोंपा' जनजाति है. सबसे अधिक जनसंख्या वाली बौद्ध जनजाति है. मोंपा की जीवन-शैली और खान-पान पर तिब्बती प्रभाव है. अरुणाचल का लोहित जिला 'खाम्ती' जनजाति के लोगों का निवास क्षेत्र है. इस समुदाय के लोग बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा में विश्वास करते हैं लेकिन बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के विपरीत ये लोग मांस-मछली खाते हैं. शेरदुक्पेन जनजाति अरुणाचल प्रदेश की एक महत्वपूर्ण जनजाति है और पश्चिमी कामेंग जिला इनका निवास क्षेत्र हैं. ये लोग बौद्ध धर्म की महायान शाखा में निष्ठा रखते हैं. अरुणाचल के लोहित, चांगलांग और तिरप जिलों में 'सिंहफ़ो' जनजाति का निवास है.

कार्बी समुदाय के लोग असम के कार्बी आंगलोंग जिले में रहते हैं. इनकी कुछ आबादी असम के नार्थ कछार, कामरूप, नगाँव और शोणितपुर जिलों में निवास करती है. इन्हें मिकिर भी कहा जाता है परन्तु वे लोग स्वयं को कभी मिकिर नहीं कहते हैं. असम के नार्थ कछार हिल्स, कार्बी ओंगलोंग एवं कछार जिलों में दिमासा कछारी समुदाय की अधिकांश आबादी निवास करती है. कुछ विद्वानों ने भीम की पत्नी राजकुमारी हिडिम्बा से दिमासा का संबंध जोड़ा है. 'सोनोवाल कछारी' समुदाय के लोग मुख्य रूप से असम के डिब्रूगढ़ जिले में निवास करते हैं. इनके कुछ गाँव लखीमपुर, शिबसागर और जोरहाट जिले में भी हैं. इस समुदाय की मान्यता है कि ये लोग भाष्करबर्मा, नरकासुर, बनराजा, भगदत्त, हिडिम्बा, घटोत्कच, भीम, प्रह्लाद और बाली जैसे पराक्रमी महापुरुषों के वंशज हैं. बर्मन समुदाय का निवास असम के मुख्यत: नार्थ कछार हिल्स में है. ये भीम के वंशज माने जाते हैं. ये हिंदू धर्म को मानते हैं और यज्ञोपवीत धारण करते हैं. पांडव के वंशज होने के कारण बर्मन स्वयं को क्षत्रिय कहते हैं. राभा जनजाति का निवास असम के ग्वालपाड़ा, कामरूप और दरांग जिलों में है. असम के अतिरिक्त मेघालय, मणिपुर, बांग्लादेश एवं नेपाल में भी राभा समुदाय के लोग रहते हैं. असम के लखीमपुर, डिब्रूगढ़, शिबसागर, जोरहाट तथा शोणितपुर जिले एवं अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में देवरी समुदाय के लोगों का निवास है. असम के डिब्रूगढ़, लखीमपुर, शिबसागर, जोरहाट और शोणितपुर जिलों में मीरी जनजाति की बसावट है. इन्हें मिशिंग भी कहा जाता है. तिवा समुदाय के लोग मुख्यत: असम के नगांव एवं कार्बी ओंगलोंग जिले में रहते हैं. इन्हें लालुंग भी कहा जाता है. मेघालय का गारो हिल्स जिला, गारो समुदाय का प्रमुख निवास क्षेत्र है. मेघालय का जयंतिया हिल्स जिला जयंतिया समुदाय का प्रमुख निवास क्षेत्र है. मेघालय के पूर्वी और पश्चिमी खासी हिल्स जिले खासी समुदाय के प्रमुख निवास क्षेत्र है. जनसंख्या की दृष्टि से हाजोंग एक छोटा समुदाय है. इनकी अधिकांश आबादी मेघालय में निवास करती है. इसके अतिरिक्त असम के कार्बी ओंगलोंग तथा नार्थ कछार हिल्स जिलों में भी हाजोंग जनजाति के लोग रहते हैं. मेघालय की सीमा पर स्थित असम के लखीमपुर व ग्वालपारा जिलों में भी इनकी कुछ आबादी है. असम के मैदानी क्षेत्रों में मेच जनजाति के लोग निवास करते हैं. ग्वालपारा जिले के मेचापारा क्षेत्र में मुख्य रूप से इन लोगों का निवास है. हमर समुदाय के लोग मुख्य रूप से मिजोरम के मिज़ो पर्वतश्रेणी के आस-पास रहते हैं.

सामाजिक समस्याओं की बात करें तो ये आज भी सामाजिक संपर्क स्थापित करने में स्वयं को सहज नहीं पाती हैं. इस कारण ये सामाजिक-सांस्कृतिक अलगाव, भूमि अलगाव, अस्पृश्यता की भावना महसूस करती हैं. इसी के साथ इनमें शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य तथा पोषण संबंधी सुविधाओं से वंचन की स्थिति भी मिलती है.

आज भी जनजातीय समुदायों का एक बहुत बड़ा वर्ग निरक्षर है जिससे ये आम बोलचाल की भाषा को समझ नहीं पाती हैं. सरकार की कौन-कौन सी योजनाएँ इन तबकों के लिये हैं इसकी जानकारी तक इनको नहीं हो पाती है जो इनके सामाजिक रूप से पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण है.

इनके आर्थिक रूप से पिछड़ेपन की बात की जाए तो इसमें प्रमुख समस्या गरीबी तथा ऋणग्रस्तता है. आज भी जनजातियों के समुदाय का एक तबका ऐसा है जो दूसरों के घरों में काम कर अपना जीवन यापन कर रहा है. माँ-बाप आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों को

पढ़ा-लिखा नहीं पाते हैं तथा पैसे के लिये उन्हें बड़े-बड़े व्यवसायियों या दलालों को बेच देते हैं. लिहाज़ा बच्चे या तो समाज के घृणित से घृणित कार्य को अपनाने हेतु विवश हो जाते हैं अन्यथा उन्हें मानव तस्करी का सामना करना पड़ता है.

संविधान के अनुच्छेद 17, समाज में किसी भी तरह की अस्पृश्यता का निषेध करता है तो नीति निर्देशक तत्त्वों के अंतर्गत अनुच्छेद 46 के तहत राज्यों को यह आदेश दिया गया है कि वे अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अन्य दुर्बल वर्गों की शिक्षा और उनके अर्थ संबंधी हितों की रक्षा करे. अ.जा./अ.ज.जा. के हितों की अधिक प्रभावी रक्षा हेतु लिये 2003 में 89वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम द्वारा पृथक राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की स्थापना भी की गई. संविधान में जनजातियों के राजनीतिक हितों की रक्षा में संख्या के अनुपात में राज्यों की विधानसभाओं तथा पंचायतों में स्थान सुरक्षित रखे गए हैं. सरकारी सहायता अनुदान, अनाज, बैंको की सुविधा, आर्थिक उन्नति हेतु प्रयास, सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व हेतु उचित शिक्षा व्यवस्था तथा सांस्कृतिक सुरक्षा मुहैया कराना इत्यादि के साथ केंद्र तथा राज्यों में जनजातियों के कल्याण हेतु अलग-अलग विभागों की स्थापना की गई है. जनजातीय सलाहकार परिषद इसका एक अच्छा उदाहरण है. इन्हीं पहलों का परिणाम है कि जनजातियों की साक्षरता दर जो 1961 में लगभग 10.3% थी वह 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 66.1% तक बढ़ गई. सरकारी नौकरी प्राप्त करने की सुविधा देने की दृष्टि से अनुसूचित जातियों के सदस्यों की आयु सीमा तथा उनके योग्यता मानदंड में भी विशेष छूट की व्यवस्था की गई है. अ.ज.जा. (एसटी) के छात्रों के लिये 'एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय योजना' तथा 'कन्या शिक्षा योजना' निम्न साक्षरता वाले जिलों में अनुसूचित जनजाति की लड़कियों के लिये लाभकारी सिद्ध होगी.

यद्यपि, सरकार अपने स्तर पर जनजातियों की स्थिति को सुधारने की दिशा में बेहतर प्रयास कर रही है तथापि शासन के कार्यों में और अधिक तब्दीली की आवश्यकता है. योजनाओं का लाभ जनजातियों तक नहीं पहुँच पाता है. साथ ही जनजातियों के प्रति मीडिया की उदासीनता को भी खत्म किया जाना चाहिए.

इसके अलावा शिक्षा संबंधी समस्याओं को दूर करने हेतु यह ज़रूरी है कि आदिवासियों के लिए सामान्य शिक्षा तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए. स्कूलों में उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए जिससे कि शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्हें बेरोजगारी की समस्या से न जूझना पड़े. कृषि, पशु-पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन एवं अन्य प्रकार की हस्तकलाओं का भी उन्हें प्रशिक्षण दिया जाए.

स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने के लिये आदिवासी क्षेत्रों में चिकित्सालय, चिकित्सक एवं आधुनिक दवाइयों का प्रबंधन भी जरूरी है. उनके लिये पौष्टिक आहार तथा विटामिन की गोलियों की व्यवस्था की जाए ताकि इनमें कुपोषण से होने वाली बीमारियों से बचा जा सके.

जनजातियों की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक है-उनका सांस्कृतिक अलगाव. लिहाज़ा उनकी इस समस्या को हल करने के लिये ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाए जहाँ आदिम ललित कलाओं की रक्षा की जा सके. जनजातियों के लिये किए जाने वाले मनोरंजनात्मक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम उन्हीं की भाषा में हों. इसमें उनकी भाषा संबंधी समस्या का भी समाधान निहित है.

विक्रांत कुमार
क्षे.का., गुवाहाटी

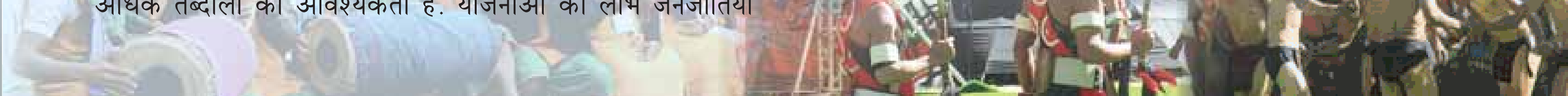

पूर्वोत्तर की किंवदंतियां-वास्तविकता

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र का निर्माण आठ राज्यों को मिलाकर हुआ है, जो किंवदंतियों एवं मिथकों का भरपूर खजाना है. देश का यह हिस्सा सदियों से अनेक भारतीयों द्वारा अछूता रह गया है. यहाँ हम आपको कुछ लोककथाओं, किंवदंतियों और मिथकों के संबंधित बातों के बारे में इस क्षेत्र के अनोखे परिदृश्य को देखने में आपकी मदद करेंगे.

मयंग-काला जादू की भूमि:-

असम राज्य का मयंग शहर तीर्थयात्रियों के बीच काफी मशहूर है, जिसका मुख्य आकर्षण बिन्दु पवित्र वाइल्ड लाइफ सेंचुरी है जो गाँव के बिल्कुल नजदीक है. हालांकि मयंग जादू-टोना के लिए प्रसिद्ध है जिसे भारत में 'काला जादू की भूमि' के नाम से जाना जाता है. यहाँ की कहावत है - मनुष्यों का हवा में गायब हो जाना, जानवर का रूप ले लेना और समय-समय पर रोगों का इलाज करना. मयंग में कालाजादू की शुरूआत कैसे हुई, इसका कहीं भी रिकॉर्ड नहीं है लेकिन शताब्दियों से गाँव के लोगों के जीवन के लिए यह इंद्रजाल साबित हुआ है. कुछ विश्वास ऐसे भी हैं कि मयंग संस्कृत के शब्द 'माया' से लिया गया है, जिसका अर्थ है- भ्रम. पुरातात्विक निष्कर्ष का भी यह सुझाव है कि अहम वंश के समय (1128-1826), मनुष्य का त्याग करना यहाँ की एक साधारण प्रवृत्ति है. काला जादू के कुछ प्राचीन अवशेष मयंग सेंट्रल म्यूजियम में अब भी संरक्षित हैं.

उना कोठी पहाड़ियाँ, जिसमें भगवान शिव की 99,99,999 प्रतिमाएँ है:

उना कोठी पहाड़ियां त्रिपुरा राज्य में स्थित भगवान शिव का तीर्थस्थल है. वहाँ के वास्तविक स्थल के साथ कई किंवदंतियां जुड़ी हुई हैं जहां हिन्दू भगवान को स्मरण करने के लिए व्यापक चट्टान है. वहाँ एक स्थानीय मूर्तिकार, कल्लू कुमार जो भगवान शिव की पत्नी देवी पार्वती का बहुत बड़ा भक्त था, कैलाश पर्वत पर देवी पार्वती का निवास स्थान बनाना चाहता था लेकिन भगवान शिव इस प्रस्ताव से कुछ खास सहमत नहीं थे. तब देवी पार्वती ने कल्लू कुमार को यह सुझाव दिया कि वह भगवान शिव को खुश करने के लिए एक रात के अंदर भगवान शिव की एक करोड़ प्रतिमा बनाएं. इस तरह पूरी रात बिना थके मूर्तिकार प्रतिमा बनाने में लग गया लेकिन इतनी मेहनत के बावजूद भी मूर्तिकार ने एक मूर्ति कम बनायी और उसने मौका गंवा दिया. इसी तरह उना कोठी को वास्तविक रूप से करोड़ से एक कम माना जाने लगा.

महान जादूगर, बन झाकरी:

सिक्किम राज्य तीन पारंपरिक समूह को मिलाकर बना है - लेपचा, भूटिया एवं नेपाली. कुल जनसंख्या के लगभग 70% लोग यहाँ के रहने वाले हैं. यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यहाँ के अधिकतर लोग नेपाल से हैं और उनमें से ही एक बन झाकरी (महान जादूगर) बनते हैं. बन झाकरी एक महान जादूगर है जो युवा लड़कों का अपहरण किया करते थे. लेकिन इसके पीछे उनका कोई गलत मकसद बिल्कुल भी नहीं था बल्कि वह जादूगरी सिखाने के लिए उनका अपहरण करते थे. अगर आप सिक्किम के पुराने लोगों से पूछे तब वे आपको अच्छी तरह से बताएंगे कि वर्षों पहले, जिन बच्चों का अपहरण हुआ था वे शक्तिशाली जादूगर या बन झाकरी बनकर वापस आए.

नोहकालिकाई की छलांग :

भारत के कुछ प्राकृतिक दृश्य ऐसे हैं, जो आँखों पर विश्वास न रखने के लिए बाध्य करते हैं. पूर्वोत्तर भारत में कुछ ऐसे दृश्य हैं, जो आज भी अज्ञान या भरोसा न करने के लिए मजबूर करते हैं. मेघालय का 'नोहकालिकाई' भारत के सबसे लंबे झरनों में से एक है.

इसकी किंवदंती यह है कि 'लिकाई' नाम की एक गरीब औरत ने ('का' शब्द महिला को दर्शाता है) अपने स्वामी के मृत्यु के पश्चात अपनी बच्ची को पिता का नाम मिल सके इसलिए दूसरा विवाह किया लेकिन उसके दूसरे स्वामी, 'लिकाई' का उसकी बच्ची के प्रति स्नेह देखकर ईर्ष्या करता था. एक दिन जब 'लिकाई' काम के लिए बाहर गयी तभी उसके स्वामी ने उस नन्हीं सी बच्ची को मारकर टुकड़ों में काट दिया और रात के भोजन का इंतजाम कर दिया. लिकाई थकी हारी वापस आई और अपनी बच्ची को सामने न पाकर व्याकुल हो गई लेकिन सारे दिन कुम्हार की तरह काम करते-करते थकी हारी होने के वजह से अपने स्वामी द्वारा बनाए हुए व्यंजन को खाने से खुद को रोक नहीं पायी. खाना खाने के क्रम

में उसने अपनी बच्ची की उंगलियों को खाने में पाया, तब उसे सारी घटनाएं समझ में आने लगी फिर वह दु:ख में पागल हो गई और तेजी से दौड़ने लगी. वह पठार के किनारे, जहां से झरने प्रवाहित हो रहे थे, पहुंची और वहाँ से छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली इसलिए इस झरने का नाम 'नोहकालिकाई' पड़ा जहां स्थानीय ख़ासी भाषा में नोह का अर्थ 'छलांग लगाने' से है.

माउंट कंचनजंघा और लेपचा:

सिक्किम में सबसे पहले लेपचा ही आए थे. उनके आदिपुरुष टकबोथिंग और नजोंग न्यू को, एडम और ईव, जिन्हें कंचनजंघा चोटी के प्राचीन बर्फ से भगवान द्वारा बनाया गया था, के समतुल्य माना जाता है. तब उन्हें महान पर्वत के नीचे यूटोपियन भूमि पर रहने के लिए भेजा गया, जिसे सिक्किम के नाम से जाना जाता है.

कंचनजंघा पुस्तक के अनुसार, लेपचा कभी भी अपनी पवित्र पहाड़ की छाँव को छोड़कर नहीं रहते. यही वजह है कि प्रत्येक लेपचा के गाँव से आप कंचनजंघा के दृश्य का आनंद उठा सकते हैं.

पारंपरिक कहानियों की शुरुआत:

मेघालय की 'खासी' जनजाति समेत पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले कई जनजातियों में कहानियों को सुनाना एक महत्वपूर्ण बात है. ऐसा कहा जाता है कि वर्षों पहले एक 'खासी' आदमी को भगवान से एक दस्तावेज प्राप्त हुआ, जिसमें धार्मिक और दार्शनिक शिक्षाओं के साथ-साथ विभिन्न अनुष्ठान करने के लिए दिशानिर्देश भी शामिल थे. घर वापस लौटते समय आदमी ने इस महत्वपूर्ण दस्तावेज को खो दिया. अपने रिश्तेदारों के क्रोध से डरते हुए आदमी ने उनसे कहा कि भगवान की सभी शिक्षाओं को उसने अपने दिमाग में दर्ज किया है और वह उन्हें मौखिक रूप से दूसरों को उपदेश देने लगा. इस तरह कहानियां सुनाने की परंपरा खासी जनजाति के बीच शुरू हुई.

मानव, आत्मा और बाघ :-

नागालैंड राज्य में कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि उनकी आत्मा उनके शरीर में नहीं बल्कि जानवर में होती है विशेषकर बाघ में. बाघ के रूप में ये आत्माएं जंगलों में भटकती हैं और कभी-कभी वह मनुष्य के सपनों में भी आ जाती हैं. नागा संस्कृति में यह किंवदंतियां हैं कि मनुष्य और बाघ में बहुत गहरा संबंध है. कुछ लोगों का कहना है कि मनुष्य, बाघ और आत्मा ये सभी एक समय में एक दूसरे के भाई थे.

एक दिन जब उनकी माँ का देहांत हो गया तब मनुष्य और बाघ आपस में झगड़ने लगे कि उनकी माँ के लौकिक संपत्ति का हकदार कौन होगा? उन्होंने इस मुद्दे को सुलझाने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया. मनुष्य ने छल करके बाघ को फलत: हरा दिया जिससे बाघ को जंगल में रहने के लिए जाना पड़ा. आत्मा ने मनुष्य के छल से क्रोधित होकर श्राप दिया कि वह अपनी आत्मा को फिर से कभी देख नहीं पाएगा. अत: जब मनुष्य अपने भाई को याद करने लगा तब वह उसे खुश करने के लिए अपनी परंपरा के साथ अनुष्ठान करने लगा. यह समारोह नियत समय में नागा संस्कृति का हिस्सा बन गया.

कामाख्या मंदिर की किंवदंतियां:

असम में कामाख्या मंदिर भारत का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है. इस मंदिर की कुछ किंवदंतियां हैं लेकिन जिससे मुख्यत: प्रसिद्ध है, भगवान शिव और उनकी पहली पत्नी सती की कहानी. देवी के पिता राजा दक्ष ने एक बार एक यज्ञ किया (वैदिक परंपरा जिसे पवित्र आग के सामने बैठकर किया जाता है) लेकिन सती और शिव को आमंत्रित नहीं किया. अपने पति की बेइज्जती से उदास होकर सती अपने पिता के पास गई. उसने उनसे बात की लेकिन पिता नहीं माने तब अपने पति के इस तरह के असम्मान को वह सहन न कर सकी और उसने अपने आप को पवित्र आग में झोंक दिया. सती की मृत्यु से क्रोधित होकर शिव ने उसके शरीर को कंधों पर लाद लिया और तांडव (विनाश का नृत्य) करना शुरू कर दिया जो संसार को विनाश की तरफ ले जाने लगा. उन्हें रोकने के लिए भगवान विष्णु ने सती के शरीर को टुकड़ों में काट दिया और उनके शरीर का प्रत्येक हिस्सा शहर के 108 स्थलों पर गिरा, जिसे आज शक्ति पीठ के नाम से जाना जाता है. कामाख्या मंदिर का निर्माण उस स्थान पर हुआ, जहां सती का प्रजनन अंग गिरा था. इस मंदिर की अनोखी बात यह है कि यहाँ औरतें गर्भधारण करने की योग्यता को मनाती हैं. इसी क्रम में यहाँ प्रत्येक वर्ष जून माह में वार्षिक उत्सव मनाया जाता है जिसे कामाख्या देवी के मासिक चक्र के रूप में जाना जाता है.

इस तरह हमने पूर्वोत्तर भारत के श्रेष्ठतम आठ किंवदंतियों को आपके साथ साझा किया जो कि निश्चय ही आप सभी पाठकों को दिलचस्प लगी होगी और साथ ही पूर्वोत्तर भारत के दर्शन में आपको इससे मदद भी मिलेगी.

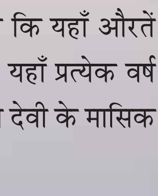

नमिता प्रसाद
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भुवनेश्वर

दि. 20.09.2019 को आयोजित,आशीर्वाद स्वर्ण जयंती पुरस्कार महोत्सव 2019 में श्री एम. वेंकटेश, महाप्रबंधक - कॉर्पोरेट संचार को आशीर्वाद राजभाषा गौरव पुरस्कार 2019 से सम्मानित किया गया, इसी समारोह में यूनियन बैंक की गृह पत्रिका, यूनियन सृजन को 'सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका' का पुरस्कार एवं श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को 'द्वितीय पुरस्कार' प्राप्त हुआ, यह पुरस्कार श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं डॉ. सुलभा कोरे, संपादक, यूनियन सृजन द्वारा ग्रहण किया गया.

दि. 19.07.2019 को नराकास (बैंक), बेंगलूरु के तत्वावधान में आयोजित छमाही बैठक में नोक्षेका, बेंगलूरु को वर्ष 2018-19 हेतु द्वितीय पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) के उप निदेशक श्री के. पी. शर्मा व बैंक ऑफ बड़ौदा के अंचल प्रमुख श्री वीरेंद्र कुमार एवं भारिबैं की महाप्रबंधक श्रीमती के. एस. ज्योत्सना से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख / उप महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री आलोक कुमार; राजभाषा प्रभारी, बेंगलूरु श्री कृष्ण कुमार यादव.

दि. 21.08.2019 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), सूरत की 17 वीं अर्धवार्षिक बैठक में वित्तीय वर्ष 2018-19 में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु, क्षे.का., सूरत को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. नराकास (बैंक) अध्यक्ष श्री अशोक कुमार महाकुल से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री कुंदन कुमार सिन्हा, सहायक महाप्रबंधक (सरल प्रमुख). साथ में हैं श्री अजीत कुमार, सदस्य सचिव (नराकास बैंक) सूरत. इसी बैठक में श्री अजय देशमुख को 'शब्द पहचानो प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया.

दि. 28.08.2019 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), पटना की 71वीं बैठक के अवसर पर श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक, पूर्वी क्षेत्र कोलकाता तथा नराकास (बैंक), पटना के कार्यकारी अध्यक्ष के कर-कमलों से नराकास (बैंक), पटना का प्रथम पुरस्कार राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री जी.बी. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक, पटना तथा डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी.

दि. 24.07.2019 को नराकास (बैंक), बेलगावी की 15 वीं अर्धवार्षिक बैठक में क्षे.का. बेलगावी को वर्ष 2018-19 का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री डी.के.कनवारिया एवं राजभाषा अधिकारी, श्री सिद्धार्थ शेखर.

दि. 30-31 जुलाई, 2019 को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली एवं यूको बैंक द्वारा पटना में आयोजित 02 दिवसीय सेमिनार 'राजभाषा हिन्दी के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका' के अवसर पर यूको बैंक, अंचल प्रमुख, पटना श्री दिलीप सिंह राठौर एवं सहायक निदेशक, (वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग) के कर-कमलों से डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया.

दि. 25.09.2019 को नराकास, आजमगढ़ की बैठक में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे. का., आजमगढ़ को वर्ष 2018-19 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्र प्रमुख, आजमगढ़ श्री मुकेश भारती शर्मा.

नराकास (बैंक) विशाखापट्टनम के तत्वावधान में विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित 'टंकण एवं सुलेख प्रतियोगिता' में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की प्रतिभागी श्रीमती एन वी एन आर अन्नपूर्णा को दि. 23.07.2019 को आयोजित नराकास (बैंक) की 15 वीं बैठक में पुरस्कार से सम्मानित करते हुए श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु, श्री ई. कोटि रेड्डी, नराकास अध्यक्ष एवं सदस्यगण.

दि. 30.09.2019 को बैंक नराकास, राजकोट की 17 वीं बैठक में हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता में क्षे.का. राजकोट से विजेता रहे श्री प्रियकांत रावल (प्रथम पुरस्कार), सुश्री ऋचा खड़ायत (द्वितीय पुरस्कार) को बैंक नराकास, राजकोट अध्यक्ष श्री संजीव डोभाल द्वारा पुरस्कृत किया गया.

राजभाषा कार्यान्वयन में नवोन्मेष पहल के तहत दि. 29.08.2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा केन्द्रीय कार्यालय के समन्वय में एसटीसी, गुड़गांव में एक 'विशेष राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन किया गया. उक्त संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री जय प्रकाश अग्रवाल -संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने की. इस अवसर पर श्री नगेन्द्र सिंह, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार; श्री शैलेश कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय; श्री ब्रजेश्वर शर्मा, महाप्रबंधक (मासं), कें. का. मुंबई; श्री एस. के. महापात्रा - क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली; श्री नवल किशोर दीक्षित - सहायक महाप्रबंधक (राभा), कें. का. मुंबई; श्री जी के सुधाकर राव, क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली (द); श्री शिव प्रसाद कर, क्षेत्र प्रमुख दिल्ली (उ) के साथ-साथ दिल्ली अंचल के अन्य उच्च कार्यपालकों की गरिमामयी उपस्थिति रही. इस संगोष्ठी में दिल्ली अंचल के वेतनमान IV एवं उससे ऊपर के लगभग 80 कार्यपालकों ने भाग लिया.

दि. 17.09.2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय वाराणसी में आयोजित 'कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी' मे उपस्थित श्री जगमोहन सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी; श्री राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा (सेवानिवृत) एवं अंचल के वेतनमान IV एवं उससे ऊपर के कार्यपालक.

कोलकाता अंचलीय कार्यालय के सभागार में दि. 13.09.2019 को अंचल के वेतनमान IV एवं उससे ऊपर के कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी का शुभारम्भ श्री अश्विनी कुमार परिडा, क्षेत्र प्रमुख कोलकाता एवं श्री विनय कुमार श्रीवास्तव, उप अंचल प्रमुख, कोलकाता के संबोधन से हुआ.

क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु के तत्वावधान में दि. 25-26 जुलाई, 2019 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरू में आयोजित दो दिवसीय कम्प्यूटर आधारित हिन्दी कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों से उपस्थित प्रतिभागियों के साथ श्री सर्वेश रंजन, प्राचार्य, उप महाप्रबंधक; श्री शेषांचल हेगड़े, उप प्राचार्य; श्री कृष्ण कुमार यादव, प्रबंधक (राभा); श्री दीपक कुमार, सहायक प्रबंधक (राभा).

दि. 25-26 जुलाई, 2019 को स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, अहमदाबाद में आयोजित दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला में उप अंचल प्रमुख श्री लुक़मान अली ख़ान; श्री आशीष कुमार गुप्ता (राजभाषा प्रभारी) एवं विभिन्न क्षे.का. से उपस्थित प्रतिभागी.

क्षे. कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक द्वारा दि. 25.09.2019 को क्षेत्रीय कार्यालय, रांची का निरीक्षण किया गया. उक्त निरीक्षण के दौरान क्षेत्र प्रमुख श्री विपन सिंह ने उनका स्वागत किया.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, प्रयागराज के तत्वावधान में दि. 12.09.2019 को नराकास की छमाही बैठक का आयोजन, अग्रणी जिला कार्यालय, ज्ञानपुर द्वारा दिनांक 3 सितंबर, 2019 से 17 सितंबर, 2019 तक मनाए जा रहे हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत किया गया. इस बैठक में उपस्थित सदस्यों के बीच 'मुहावरे प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें जवाहर नवोदय विद्यालय, ज्ञानपुर, डाकघर एवं इंडियन ओवरसीज बैंक को क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

दि. 27.08.2019 को नराकास (बैंक), जबलपुर के तत्वावधान में नगर स्थित बैंकों में बैंक कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा 'बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया.

दि. 10.07.2019 को नराकास (बैंक), राजकोट के तत्वावधान में क्षे.का. राजकोट द्वारा समस्त सदस्य बैंको के लिए 'आशु भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया.

हिन्दी माह के उपलक्ष्य में नराकास, हिम्मतनगर (मेहसाणा) के तत्वावधान में 'मुहावरे प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसका पुरस्कार वितरण नराकास, हिम्मतनगर की छमाही बैठक में किया गया. बैठक की अध्यक्षता, डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य (उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, मुंबई) ने की.

बैंक नराकास, बड़ौदा की 63 वीं छमाही बैठक का आयोजन दि. 09.08.2019 को किया गया. इस बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की प्रतिनिधि डॉ. सुनीता यादव, बैंक नराकास बड़ौदा के अध्यक्ष श्री के आर कनौजिया एवं श्री अखिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे.

दि. 20.07.2019 को नराकास (बैंक), इंदौर के तत्वावधान में क्षे.का. इंदौर द्वारा समस्त सदस्य बैंकों के लिए एक 'अंतर बैंक तात्कालिक निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता का शुभारंभ श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर द्वारा किया गया.

दि. 17.10.2019 को क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाणा का राजभाषा विषयक निरीक्षण डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, (उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, मुंबई) द्वारा किया गया.

सुपरफूड 'दही'

"रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम्।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मंगल्यं बृंहणं दधि।।
पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे।
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च कार्श्ये च दधि शस्यते।।
शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम्।
रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेष्वहितं च तत्।।"

चरक संहिता सूत्रस्थान-27 में दही की उपयोगिता बताई गई है.

दही ना ही सिर्फ भोजन का स्वाद बढ़ाता है बल्कि उसे पौष्टिक भी बनाता है. दही के साथ खाया हुआ कुछ भी सहजता से पच जाता है और उस भोजन के विटामिन और प्रोटीन सरलता से अपने खून में मिल जाते है. इसीलिए दही को 'परिपूर्ण आहार' और 'सुपरफूड' भी कहा जाता है. आइए, तो जान लेते हैं कि दही हमारे शरीर के लिए कितना फायदेमंद है!

❖ दही एक प्रकार का प्रोबायोटिक है, इसमें मौजूद अच्छे और जरूरतमंद जिंदा बैक्टीरिया, बीमारी के रोगाणुओं से लड़ने में मदद करते हैं. आंतों को खराब वायरस से बचाकर रखते हैं. दही शरीर में श्वेत-रक्त कणिकाओं (White Blood Corpuscles) की संख्या बढ़ाता है, जिससे इम्यूनिटी को बढ़ावा मिलता है.

❖ दही में बहुत अधिक मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है, जो शरीर को फूलने नहीं देता और वजन नहीं बढ़ने देता है. साथ ही हड्डियों के विकास में सहायक होता है, दांतों और नाखूनों को भी मजबूत बनाता है.

❖ खून में वसा की मात्रा घटाने की क्षमता दही में होती है इसलिए दही के सेवन से दिल के बीमारी की संभावना कम होती है. रक्तचाप नियंत्रण में रहता है.

❖ नहाने से पहले बालों में दही से अच्छी मालिश करनी चाहिए और कुछ समय बाद बालों को धो लेने से बालों की खुश्की या रूसी खत्म हो जाती है.

❖ शहद एवं बादाम तेल के साथ दही मिलाकर चेहरे पर और त्वचा पर 15 मिनिट तक लगाकर रखने से त्वचा की मृत और खराब कोशिकाएं निकल जाती है और त्वचा पर निखार आता है. संतरे के छिलके के साथ दही लगाने से रंग गोरा होता है. गुलाब जल और हल्दी के साथ मिलाकर दही लगाने से त्वचा में निखार आता है और त्वचा मुलायम होती है. नींबू रस और दही को मिलाकर लगाने से चेहरे और त्वचा की झुर्रिया कम होती हैं.

❖ दही को मुंह के छालों पर दिन में दो-तीन बार लगाने से या दही और शहद को समान मात्रा में मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से छाले दूर हो जाते हैं.

❖ दही में जीरे और हींग का छौंक लगाकर खाने से जोड़ों के दर्द से राहत मिलती है.

❖ दही के तोड़ (खट्टे पानी) से मालिश करने से हाथ-पैरों की जलन समाप्त हो जाती है. दही के पानी में कालीमिर्च को पीसकर आंखों में काजल की तरह लगाने से रतौंधी के रोग में आराम मिलता है.

❖ दही में पिसी हुई कालीमिर्च, सौंफ तथा चीनी मिलाकर खाने से नींद अच्छी आती है.

❖ दो चम्मच दही, एक चम्मच चीनी तथा लगभग एक ग्राम का चौथा भाग कालीमिर्च को शहद में मिलाकर बच्चे को चटाने से बच्चों की काली खांसी दूर हो जाती है.

❖ दही में भुना हुआ पिसा जीरा, नमक और कालीमिर्च डालकर रोजाना खाने से अपच (भोजन न पचना) और अग्निमान्द्य (भूख का कम लगना) ठीक हो जाता है एवं भोजन जल्दी पच जाता है.

❖ 3-4 दिन तक दही में असली शहद मिलाकर दिन में सुबह और शाम पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं.

❖ दही में 4 कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर खाने से नकसीर (नाक से खून बहना) ठीक हो जाती है.

सावधानी

❖ कच्चे दही का सेवन कभी ना करे इससे त्रिदोष असंतुलित होते हैं.

❖ संभवत: रात में दही का सेवन ना करें. अगर खाना पड़े तो उसमें शक्कर या कालीमिर्च पावडर मिलाकर खाएं इससे पित्त प्रकोप से बचा जा सकता है.

❖ भाद्रपद और सावन में दही और मठ्ठा नहीं खाना चाहिए.

❖ खट्टा दही (Dahi/Curd) पित्त और बलगम पैदा करता है. ज्यादा खट्टा दही खाने से दांत खट्टे होते हैं और शरीर के रोंयें खड़े हो जाते हैं, पेट में जलन भी होती है.

❖ दमा, सांस, खांसी, कफ, सूजन, रक्तपित्त तथा बुखार आदि रोगों में दही नहीं खाना चाहिए.

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, के.का.

यूनियन सृजन का जून 2019 अंक 'भारतीय संस्कृति एवं परंपरा विशेषांक' प्राप्त हुआ भारतीय संस्कृति एवं परंपरा पर जितना लिखा जाये, कम है. सदियों से प्रचलित परंपराएँ जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, एक समाज से दूसरे समाज, एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता को अंतरित होती हुई चली आई है, आज वही हमारी पहचान बन गई है. हमारे समाज जीवन की आदि परंपराएं, तीज-त्यौहार, मेले-ठेले, पूजा-अर्चना, रहन-सहन, खान-पान परिधान, शिक्षा-दीक्षा और सोच- संस्कार-सरोकार सब मिलकर हमारा जीवन दर्शन इंगित करते हैं. इन सारे तत्वों को शामिल करते हुये यूनियन सृजन ने भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का बहुत व्यापक फलक हमारे सामने प्रस्तुत किया है. अंक में शामिल सभी सामग्री सारगर्भित और शोधपरक है. इस अच्छे और स्तरीय अंक के लिए बधाई.

- डॉ वीरेंद्र प्रताप सिंह, सहायक महाप्रबंधक
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, राजभाषा विभाग, चेन्नई

आपके बैंक की गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' के अप्रैल - जून 2019 तिमाही की प्रति प्राप्त हुई. पत्रिका भेजने के लिए आपको धन्यवाद. पत्रिका पूर्ण रूप से सुसज्जित व आकर्षक है तथा इसमें प्रकाशित लेख व रचनाएँ रोचक तथा ज्ञानवर्धक लगी. आशा है कि भविष्य में भी आप इस प्रकार की रोचक व ज्ञानवर्धक जानकारी पत्रिका के माध्यम से हमें प्रेषित करते रहेंगें. 'यूनियन सृजन' की संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं.

- राजेश कुमार झा
अंचल प्रमुख, आंचलिक कार्यालय, बड़ौदा
कॉर्पोरेशन बैंक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की त्रैमासिक गृह पत्रिका यूनियन सृजन का अप्रैल-जून 2019 अंक प्राप्त कर मन प्रफुल्लित हो उठा. पत्रिका पठनीय व जानकारी परक रचनाओं से परिपूर्ण है, मुखपृष्ठ आकर्षक है. इतनी सुंदर एवं उच्चस्तरीय पत्रिका के प्रकाशन के लिए साधुवाद एवं बधाई! निश्चय ही अंक संग्रहणीय बन पड़ा है. कुशल एवं विद्वत्तापूर्ण संपादन के लिए साधुवाद.

- श्यामसुंदर सुमन, संपादक 'सामयिकी'

आपके बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका यूनियन सृजन का जून 2019 अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका में भारतीय विविधता के कई आयाम चित्रित हैं जो इसे पठनीय एवं आकर्षक बनाते हैं. संपादक मंडल को हार्दिक बधाई.

- मृत्युंजय मिश्र, सहायक महाप्रबंधक
(राजभाषा) सिंडिकेट बैंक

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

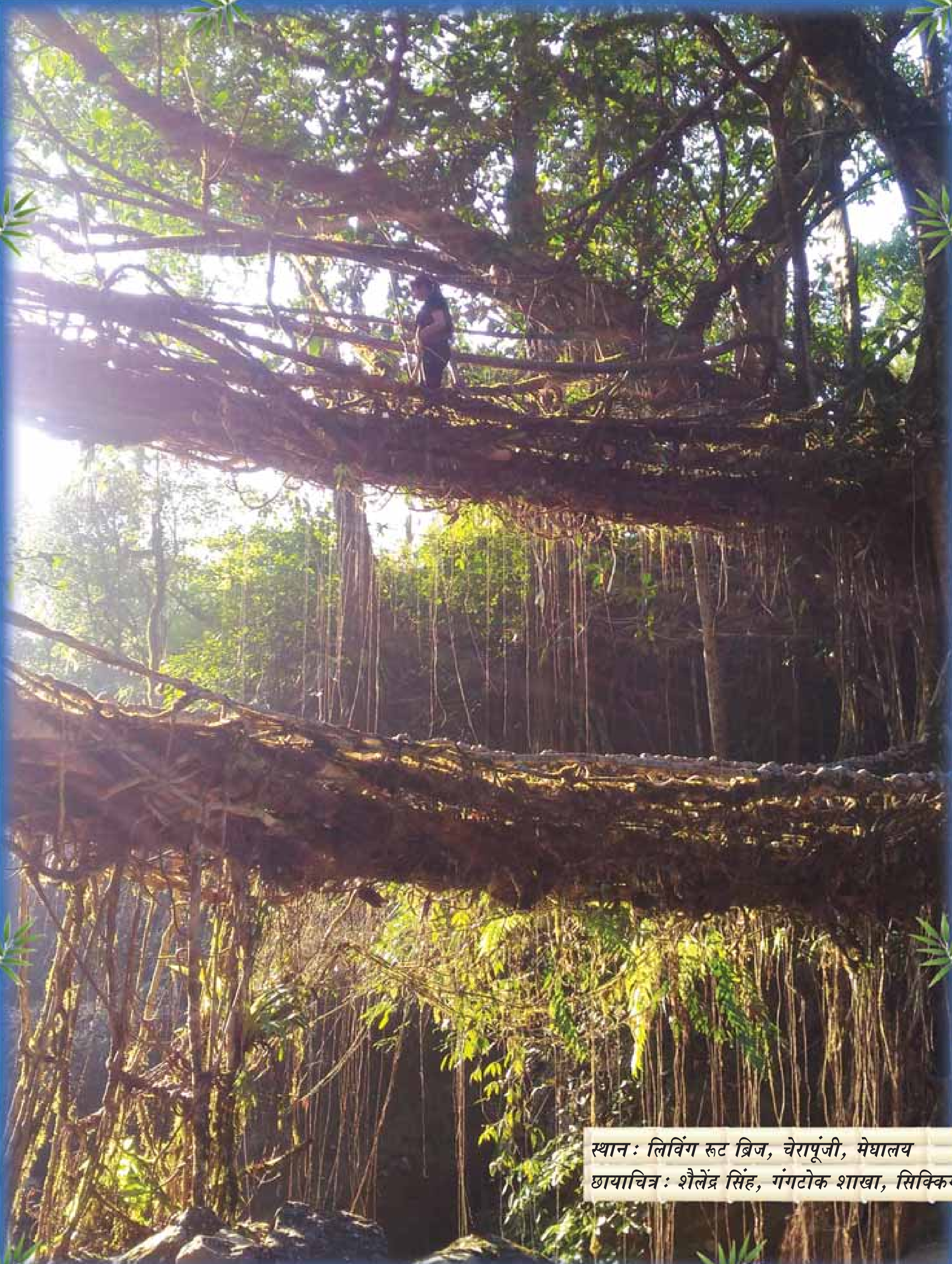

स्थान: लिविंग रूट ब्रिज, चेरापूंजी, मेघालय
छायाचित्र: शैलेंद्र सिंह, गंगटोक शाखा, सिक्किम